यूनियन सृजन

वर्ष - 5, अंक - 2, अप्रैल-जून, 2020 मुंबई

होली

विशेषांक

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India

भारत सरकार का उपक्रम A Government of India Undertaking

आन्ध्रा Andhra कार्पोरेशन Corporation

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि : 12.08.2020

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी पत्रिका

वर्ष - 5 अंक - 2 अप्रैल - जून, 2020

संरक्षक

राजकिरण रै जी.
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

प्रधान संपादक

ब्रजेश्वर शर्मा
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.)

कार्यकारी संपादक

नवल किशोर दीक्षित
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक

डॉ. सुलभा कोरे
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन मंडल

अशोक चंद्र
मुख्य महाप्रबंधक

वी. वी. टेम्भूर्णे
महाप्रबंधक

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित

ई-मेल: navalkishored@unionbankofindia.com
sulabhakore@unionbankofindia.com
union.srijan@unionbankofindia.com
9820468919, 022-22896595

Printed and Published by Dr. Sulabha Shrikant Kore on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.

Editor : Dr. Sulabha Shrikant Kore

इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India

भारत सरकार का उपक्रम A Government of India Undertaking

आन्ध्रा Andhra कार्पोरेशन Corporation

होली विशेषांक

अनुक्रमणिका

- परिदृश्य 3
- संपादकीय 4
- होली का त्योहार 5
- साहित्य सृजन : रामवृक्ष बेनीपुरी 6-7
- काव्य सृजन 8-9
- प्रेम और रंगों का त्योहार 10-12
- होली की संस्कृति 13
- होली संकल्पना, इतिहास, परंपरा 14-15
- क्या कहते हैं रंग 16-17
- होली : एक वैश्विक पर्व 18-19
- होली में ईश्वर / जीवन के साथ जुड़े, बोलते हुए रंग 20-21
- हिन्दी साहित्य में होली 22-23
- प्रकृति के रंग 24-25
- सेंटर स्प्रेड : केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान 26-27
- त्योहार एक, रूप अनेक 28
- लघु कथा - आकाश की होली 29
- होली, मथुरा एवं वृन्दावन की 30-31
- होली एवं राष्ट्रीय एकता 32-33
- राजभाषा समाचार / पुरस्कार 34-35
- होली की किंवदंतियाँ व लोककथाएँ 36-37
- होली एक अमूल्य धरोहर / भारत में होली 38-39
- विभिन्न प्रदेशों में होली 40-41
- रंगों का त्योहार 42-43
- बंगाल की होली 44-45
- रंग कुदरत के 46-47
- हिंदी सिनेमा में रंग और होली 48-49
- आयुष्यमान भव: - गुणकारी हींग 50
- आपकी नज़र में 51

परिदृश्य

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि जब देश और दुनिया निराशा से भरे इस माहौल में जीने को मजबूर है, यूनियन सृजन ने 'होली विशेषांक' के प्रकाशन का निर्णय लिया है.

यूं तो हमारे देश के विभिन्न हिस्सों में मनाए जाने वाले सभी त्योहार मानव जीवन के उल्लास और खुशी के प्रतीक होते हैं, लेकिन होली इन सबमें विशेष है. यह त्योहार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है, जब ऋतुओं का राजा वसंत हर ओर अपनी हरीतिमा बिखेरकर प्रकृति के सौंदर्य में चार चांद लगा रहा होता है. भारत और नेपाल के साथ-साथ दुनिया भर के भारतवंशियों के बीच मनाया जाने वाला यह त्योहार देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग तरीक़ों से मनाया जाता है. ब्रज और आसपास की लट्ठमार होली तो विश्व प्रसिद्ध है, लेकिन हरियाणा की धुलेंडी, बंगाल की डोल पूर्णिमा, महाराष्ट्र की रंगपंचमी, तमिलनाडु की कामन पोडिगई, मणिपुर की योसांग होली भी अपना-अपना रंग बिखेरती हैं. देश में अलग - अलग तरीके से होली मनाने की विशेष परंपराएं हैं. यह त्योहार अच्छाई की बुराई पर जीत तथा जीवन के हर रंग से आपको रूबरू कराता है.

वर्तमान में कोविड- 19 की दहशत से जूझ रही मानवता को खुशनुमा और रंगीन बनाने का काम इस अंक द्वारा निश्चित रूप से किया जाएगा. मैं आशा करता हूं कि होली जैसे त्योहार पर प्रकाशित इस विशेषांक का हर लेख आपके जीवन को रंगों से सराबोर कर देगा और हम सब इस निराशा भरे माहौल से निकलकर खुशनुमा ज़िंदगी के रास्ते पर सफ़र करने के लिये आपकी कोशिशों को दोगुना कर देंगे.

'यूनियन सृजन' के बारे में मैं एक और बात आपको बताना चाहूँगा कि आपके प्यार और योगदान के फलस्वरूप इस बार यूनियन सृजन को 'पी.आर.सी.आई. एक्सीलेंस अवार्ड' प्राप्त हुआ है तथा 'ए.बी.सी.आई.' द्वारा भी सम्मानित किया गया है. बैंकिंग उद्योग की हिंदी पत्रिकाओं के बीच 'यूनियन सृजन' ने अपना अलग स्थान प्राप्त किया है. आप सभी को हार्दिक बधाई !

शुभकामनाओं सहित,

आपका

राजकिरण रै जी

(राजकिरण रै जी.)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संपादकीय

साथियो,

यह प्रकृति हरदम रंगों से रंगीन होती है. इसमें धूप का सफेद एवं चमकीला रंग होता है, बरसात का हरा और मटमैला रंग होता है, सर्दियों का धुआं-धुआं सा सलेटी रंग होता है. हर मौसम में ऋतु के अपने रंग होते हैं और यही रंग हमारे जीवन को भी रंगीन बनाते हैं. रंगों का यह उत्सव हम सिर्फ होली के दिन मनाते हैं लेकिन कुदरत या प्रकृति की होली तो हर पल, हर दिन, हर मौसम में चलती रहती है. हर जर्रे-जर्रे में, चाहे वह जमीन हो, आसमाँ हो, पेड़-पौधे हों, फल-फूल हों या फिर आदमी या जानवर; हर बात की अपनी शेडिंग होती है या विविधता होती है, उसे 'वो चित्रकार' ही अंजाम दे सकता है.

आदमी भी तो उसी चित्रकार की ही 'देन' है, जिसके पास प्रतिभा का खजाना है. ऐसे में वह कैसे पीछे रह सकता है? उसने भी अपनी प्रतिभा के अनेक रंग खिलाये. विज्ञान, तंत्रज्ञान, प्रकृति, इतिहास, भूगोल, भाषा कोई भी रंग उसने अछूता नहीं छोड़ा और अपनी एक अलग मिसाल कायम की.

कुदरती रंगों को साथ लेकर और उसमें अपने जीवन के रंगों को घोलकर इंसान ने उत्सव, त्योहार, आयोजनों के साथ जीवन का एक ऐसा समा बांध रखा है कि उसमें सभी रंगों के साथ ऊर्जा की ऊष्मा, रिश्ते - नातों का गुनगुनापन, दुखों की ठंड, सुख की गर्माहट, सब कुछ शामिल हुआ है.

कुदरत के रंग समय के साथ और पुख्ता, ताजा, कायम होते जाते हैं लेकिन इंसानी रंग कभी-कभी उतर जाते हैं, कभी फीके पड़ जाते हैं तो कभी बिल्कुल बेरंग भी हो जाते हैं. लेकिन उससे क्या फर्क पड़ता है? 'उसका' कैनवास रुकता थोड़ी ही है? उसके पैलेट पर इतने सारे रंग हैं कि आप गिन नहीं सकते और ना ही उनकी कल्पना कर सकते हैं, उसका कूचा भी हर रंग को झेलने के लिए तैयार बैठा है और कैनवास... कैनवास तो खुला है, इस पूरे विश्व का! वह आपकी बेरंगी जिंदगी में भी रंग भर देता है. आपको सिर्फ उसके रंगों को पहचानना आना चाहिए.

साथियो, होली के इस रंगीन विशेषांक के साथ 'यूनियन सृजन' फिर एक बार आपकी जिंदगी में होली के रंग उड़ेलने के लिए आ रहा है. इन रंगों ने आपको निश्चित रूप से खुशी दी होगी, आपकी जिंदगी के एकाध कोने को निश्चित रूप से रंगीन बनाया होगा और मेरे ख्याल से यही इस अंक की उपलब्धि होगी. बस, रंगों की इस दुनिया में अपना एक 'उजला' रंग हमेशा अलग सा रखिए.

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,

आपकी,

(डॉ. सुलभा कोरे)

होली का त्योहार

रंगो तुम, रंगू मैं, रंग दे ये सारा जहान,
बस हँसे और गले लगें, नफरत का ना रहे नामोनिशान.

होली का त्योहार अपने रंगों से पूरी दुनिया को रंगीन और खुशहाल बनाना चाहता है. ढोल, मंजीरे व मृदंग की ध्वनि से गूंजता रंगों से हरा-भरा होली का त्योहार फाल्गुन माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है. यह त्योहार केवल भारत में ही नहीं पूरे उप महाद्वीप को अपने रंगों से सराबोर करता है. सूरज की किरणें भी उस दिन मानों हजारों खुशियाँ लेकर आती हैं.

होली केवल रंगों का त्योहार ही नहीं है, बल्कि जीवन का जश्न है. हर त्योहार में कोई न कोई संदेश छिपा रहता है. दीपावली का त्योहार अंधेरे व बुरी ताकतों का विनाश करता है, ईद आपसी भाईचारे को बढ़ाता है, उसी प्रकार होली हमारे जीवन को रंगों से भर देता है. यह दोस्ती बढ़ाने और आपसी मनमुटाव को दूर करने वाला त्योहार है. जब लोग एकदूसरे को रंग लगाते हैं, तो कटुता व नाराजगी को भूल जाते हैं. वास्तव में होली एक उत्सव है. हिन्दुस्तान में जो त्योहार सही मायनों में गंगा-जमुनी तहजीब को व्यक्त करता है, वह होली ही है.

सभी रंगों का रास है होली, मन का उल्लास है होली,
जीवन में खुशियाँ भर देती, बस इसलिए खास है होली.

हर हिन्दुस्तानी के लिए होली का पर्व एक खास पर्व है जिसका अपना एक पौराणिक महत्व है. देश के हर कोने में अलग-अलग तरीके से होली मनाई जाती है. मथुरा और वृन्दावन वासियों के लिए होली का त्योहार अलग ही पवित्रता से जुड़ा है. होली के अवसर पर भारत के अलग-अलग शहरों से लोग मथुरा व वृन्दावन आते हैं. होली के अवसर पर यहाँ पूरे हफ्ते कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं. वृन्दावन के बांके बिहारी मंदिर में महा होली उत्सव मनाया जाता है. कृष्ण की लीलाओं से संबंधित नाटक आयोजित किए जाते हैं. ऐसा लगता है मानो भगवान कृष्ण स्वयं आशीर्वाद दे रहे हों....

दिल में उमंग लिए, हाथों में रंग लिए, मन में खुशियाँ लिए अपनी टोलियों में खेलता हर बच्चा बाल कृष्ण प्रतीत होता है. मन को असीम शान्ति व खुशी प्राप्त होती है. इससे लोगों की चिंता दूर होती है. होली का लाल रंग हमारे जीवन की खुशियों को व्यक्त करता है. यह वैवाहिक जीवन का प्रतीक है. ऊर्जा, क्रोध, साहस और पराक्रम इसी रंग में प्रतिबिम्बित होते हैं. इसी तरह हरा रंग शीतलता, ताजगी, हरियाली और गौरव का प्रतीक है तथा सौभाग्य व समृद्धि का सूचक है. इसी प्रकार नीला रंग हमें जीवनदायिनी शक्ति प्रदान करता है.

होली के रंगों की यही तो सुन्दरता है. यह सामाजिक भेदभाव को मिटा देती है और लोगों को एक दूसरे के करीब लाती है. वास्तविकता यही है कि रंगों वाली होली दुलहेंडी से एक दिन पहले का होलिका दहन मानो सब बुराईयों को मिटाकर खाक कर देती है और यह संदेश देता है कि संयम व हिम्मत के साथ व्यक्ति को हर रंग का सामना करना चाहिए क्योंकि विभिन्न रंग जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व करते हैं.

रंगों का ये त्योहार प्यार और स्नेह का प्रतीक है. यह लोगों के व्यस्त जीवन की सामान्य दिनचर्या में एक अल्पविराम लाता है. मुगल सम्राट शाहजहाँ के दौर में जब फ्रेंच यात्री बरनियर भारत आए थे तो इतने सारे लोगों को होली खेलते हुए देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ था और इसमें मजेदार बात यह थी कि ये लोग विभिन्न जातियों और धर्मों से संबंधित थे. होली का त्योहार हमें निम्न संदेश देता हुआ प्रतीत होता है:-

प्यार के रंगों से भरो पिचकारी,
स्नेह के रंगों से रंग दो दुनिया सारी.

वैसे तो भारत का हर एक त्योहार आपसी भाईचारे, प्रेम व सौहार्द का संदेश देता है, लेकिन होली का त्योहार अपने आप में अनोखा है जिसे छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सभी लोग मिलजुलकर मनाते हैं. राग-रंग का यह पर्व वसंत का संदेशवाहक है. यह त्योहार लोगों के बीच आपसी स्नेह व मेलजोल को बढ़ाता है. लोग गले मिलते हैं, लोकगीतों की धुनों पर थिरकते हैं. यह रंगों के साथ-साथ गीत-संगीत और नृत्य का अनूठा त्योहार है. इसे एकता, प्यार, खुशी, सुख और जीत के त्योहार के रूप में भी मनाया जाता है. इस पर्व का ये हर्षोउल्लास परस्पर मिलन व एकता का प्रतीक है. नि:संदेह होली का पर्व हमारी सांस्कृतिक धरोहर है.

होली के इस पावन पर्व पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम ऐसा कोई भी कार्य नहीं करेंगे जो दूसरे को बुरा लगे. हम एक-दूसरे के सुख-दुख में भागीदारी देंगे और प्रेम और मोहब्बत के संदेश को घर-घर पहुँचाकर देश और समाज में सहिष्णुता, एकता और भाईचारे को विकसित करेंगे.

प्यार के रंग से, रंग दो दुनिया सारी
ये रंग ना जाने कोई मजहब ना कोई बोली
खुशियों से भर जाए आपकी झोली,
मुबारक हो आपको ये रंगों भरी होली.

शर्मिला कटारिया
क्षे. का., दिल्ली (सेंट्रल)

हिन्दी साहित्य के महान स्तंभ

– रामवृक्ष बेनीपुरी

जब भी हिन्दी साहित्य की बात होती है तब रामवृक्ष बेनीपुरी का नाम बरबस ही हम सबके जुबां पर आने लगता है. बेनीपुरी जी केवल एक साहित्यकार ही नहीं, बल्कि वह महान विचारक, चिंतक हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन साहित्य तथा देश के लिए समर्पित कर दिया. उनकी रचनाएं हमें गहन चिंतन हेतु मजबूर कर देती हैं. उनके क्रांतिकारी विचार हम सबके लिए प्रेरणादायक तथा जीवन में कुछ करने के लिए प्रेरित करने में सफल प्रतीत होते हैं.

जीवन परिचय:

भारत के ख्यातिप्राप्त विचारक, चिंतक, मनन करने वाले क्रांतिकारी साहित्यकार, पत्रकार, संपादक, उपन्यासकार रामवृक्ष 'बेनीपुरी' का जन्म 23 दिसंबर, 1899 को बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गांव में हुआ था. अपने गांव के नाम पर ही उन्होंने अपना उपनाम बेनीपुरी रखा जो कि हिन्दी साहित्य जगत में प्रसिद्ध हुआ. उनके माता-पिता का बहुत जल्दी ही देहावसान हो गया था जिसके कारण उनका लालन-पालन तथा शिक्षा उनके ननिहाल में पूरी हुई. मैट्रिक उत्तीर्ण होने के पश्चात बेनीपुरी जी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए चल रहे असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए. उनका व्यक्तित्व काफी आकर्षक तथा शौर्यपूर्ण था. उनके चेहरे से शौर्य की आभा मानो हमेशा दमक रही हो. वह एक राजनीतिक पुरुष नहीं थे परंतु पक्के देशभक्त थे. इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कुल 08 वर्ष जेल में गुजारे, यह बताने के लिए काफी है कि वह भारत माता के कितने नजदीक थे तथा देश से उनको कितना प्रेम था. साहित्य जगत में वह एक पत्रकार भी रहे और इन्होंने कई समाचारपत्रों जैसे 'युवक' का भी प्रकाशन किया. 07 सितंबर, 1968 को वह हम लोगों को छोड़कर दुनिया से विदा हो गए.

लेखनकालीन वातावरण:

बेनीपुरी जी एक बहुमुखी तथा बहुआयामी प्रतिभा के लेखक थे. इन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में विलक्षणता के साथ लेखन किया. जब उनका भारतीय साहित्य के पटल पर पदार्पण हुआ, तब पूरे देश में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम अपने चरम पर था. पूरा देश राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन के लिए सड़कों पर था. बेनीपुरी जी भी अपने आपको इससे अलग नहीं रख पाए तथा सक्रिय रुप से स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया तथा साहित्य के माध्यम से स्वतंत्रता सेनानी के रुप मे लगातार अपनी भूमिका का निर्वहन किया. इसके पश्चात भी भारत छोड़ो आंदोलन में भी सक्रियता से भाग लिया. इन्होंने मात्र 15 वर्ष की अवस्था में ही पत्र-पत्रिकाओं के लिए लिखना प्रारंभ कर दिया था. देश सेवा के पुरस्कार स्वरुप इन्हें जीवन का एक बड़ा अंश कारागार में बिताना पड़ा. इन्होंने तरुण भारत, किसान, मित्र, बालक, युवक, कर्मवीर, योगी, हिमालय, नयी धारा आदि कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन बहुत ही कुशलता से किया.

साहित्य में भाषा एवं शैली:

शब्द शिल्पी बेनीपुरी जी की शैली का चमत्कार सभी रचनाओं में देखा जा सकता है. विशेषत: रेखाचित्रों में भाषा की सरलता, सरसता और

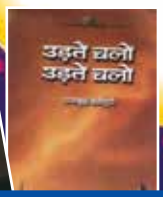

शैली प्रवाह की दृष्टि से ये हिन्दी के विशिष्ट शैलीकार प्रतीत होते हैं. शब्दों के तो ये जादूगर ही लगते हैं. छोटे-छोटे चुटीले वाक्यों में शब्दों का सटीक प्रयोग इनकी निजी विशेषता है. बेनीपुरी जी की साहित्यिक भाषा काफी क्रांतिकारी तथा प्रभावी रही है. बेनीपुरी जी शुक्लोत्तर हिन्दी साहित्य के एक चमकते सितारा थे जो अपनी मानवीय, देशभक्ति तथा राष्ट्रवादी और स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित रचनाओं के लिए दिन-रात तत्पर रहे. महान स्वतंत्रता सेनानी रामवृक्ष बेनीपुरी हिन्दी के महान लेखकों में गिने जाते हैं. हृदय में देशभक्ति की आग और वाणी में राष्ट्रवाद लेकर बेनीपुरी महान शब्द-शिल्पी जब साहित्य सृजन के क्षेत्र में आए तो उन्होंने एक क्रांति ला दी. नाटक,कहानी, निबंध, आलोचना, उपन्यास, रेखाचित्र, संस्मरण आदि सभी क्षेत्रों को इन्होंने अपनी प्रतिभा से प्रभावित किया. रेखाचित्र को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करने का सारा श्रेय बेनीपुरी को जाता है. बेनीपुरी जी की साहित्यिक भाषा सरल एवं व्यवहारिक है. उनके द्वारा प्रयुक्त खड़ी बोली में सरलता, सुबोधता, सजीवता विद्यमान है. उनकी भाषा में भावानुकूल अभिव्यक्ति क्षमता गजब की देखने को मिलती है. बेनीपुरी जी की रचनाओं में लाक्षणिक एवं अलंकारिक भाषा भी उपलब्ध होती है. बेनीपुरी जी ने छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करते हुए भाषा की व्यंजकता को बढ़ाने में गजब का प्रभाव छोड़ा है.

बेनीपुरी जी की रचनाओं में आलोचनात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, भावात्मक शैली, प्रतीकात्मक शैली सहित विभिन्न व्यंजनात्मक शैली की अधिकता देखने को मिलती है. एक उत्कृष्ट निबंधकार, समर्थ रेखाचित्रकार, कुशल राजनीतिज्ञ, एवं यशस्वी पत्रकार के रुप में बेनीपुरी जी हिन्दी साहित्य जगत में चिरस्मरणीय हैं. राष्ट्र सेवा के साथ-साथ साहित्य सेवा करने वाले महापुरुषों में वे अग्रणी हैं. रेखाचित्र विधा को समृद्ध करने में तथा साहित्य की विविध विधाओं में अनेक कृतियां लिखकर उन्होंने हिन्दी साहित्य के पटल पर एक अलग पहचान बनाई.

रचनाएं:

बेनीपुरी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे. इन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, रेखाचित्र, यात्रा विवरण, संस्मरण, निबंध आदि गद्य की सभी प्रचलित विधाओं में विपुल साहित्य की रचना की. बेनीपुरी जी ने साहित्य के सभी विधाओं में प्रभावी लेखन किया. उनकी कुछ रचनाएं तथा विधाएं निम्नानुसार हैं:-

रेखाचित्र: माटी की मूरतें, लाल तारा

संस्मरण: जंजीरें और दीवारें, मील का पत्थर

कहानी: चिंता के फूल

उपन्यास: पैरों में पंख बांधकर, उड़ते चले,

नाटक: आम्ब्रपाली, सीता की मां, रामराज्य

निबंध: गेहूं और गुलाब, बंदे वाणी विनायकी, मशाल.

जीवनी: महाराणा प्रताप, जयप्रकाश नारायण, कार्ल मार्क्स

आलोचना: विद्यापति पदावली, बिहारी सतसई की सुबोध टीका,

संपादन: तरुण भारती, कर्मवीर, बालक, किसान मित्र, कैदी, योगी, नई धारा, चुन्नु-मुन्नु, जनता, हिमालय.

बेनीपुरी जी ने अपने संगठनात्मक एवं प्रचारात्मक कार्यों द्वारा हिन्दी तथा जनता की बहुत ही सेवा की है. इनका नाम बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में लिया जाता है. इनका पूरा साहित्य 'बेनीपुरी ग्रंथावली' के रुप में कई खण्डों में प्रकाशित हो चुका है.

बेनीपुरी जी एक कर्मठ देशभक्त थे. देशभक्त एवं साहित्यकार दोनों ही के रुप में इनका विशिष्ट स्थान है. राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जी कहते हैं कि "बेनीपुरी केवल साहित्यकार नहीं थे, उनके भीतर केवल वही आग नहीं थी जो कलम से निकल कर साहित्य बन जाती है. वे उस आग के भी धनी थे जो राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों को जन्म देती है जो परंपराओं को तोड़ती है और मूल्यों पर प्रहार करती है. जो चिंतन को निर्भिक एवं कर्म को तेज बनाती है. बेनीपुरी जी के भीतर बेचैन कवि, बेचैन चिंतक, बेचैन क्रांतिकारी और निर्भीक योद्धा सभी एक साथ निवास करते थे."

रामवृक्ष बेनीपुरी ने अपनी पूरी जिन्दगी हिन्दी साहित्य के लिए अपने विचारों को प्रभावी ढंग तथा प्रखरता से साहित्य के पटल पर रखा. उन्होंने साहित्य के माध्यम से देशभक्ति एवं राष्ट्रवाद की अलख जगाई. देश के स्वतंत्रता सेनानियों के साथ आगे बढ़कर आंदोलन में भाग लिया. अपनी कलम की ताकत से उन्होंने अपने विचारों को समाज के सामने रखा. आज हम बेनीपुरी जी को महान चिंतक, क्रांतिकारी साहित्यकार तथा हिन्दी साहित्य के महान स्तंभ के रुप में जानते हैं. इस महान साहित्यकार के सम्मान में बिहार सरकार द्वारा प्रति वर्ष साहित्यकारों को 'अखिल भारतीय रामवृक्ष बेनीपुरी पुरस्कार' भी प्रदान किया जाता है.

संतोष कुमार खां
क्षे.का., पटना

होली

देखो होली आयी है,
रंगो की टोली लाई है...
मस्ती खूब समाई है,
उसमे रीत जगाई है...
बच्चे बूढ़े और दोस्त,
सबमें उमंग छाई है...
बैरी थे जो वर्षों जिद में,
उसमें प्रीत जगाई है...
कौन अमीर, कौन गरीब,
सब पर रंग चढ़ाई है...
एक समान दिखे हैं सब,
ऐसे गुल खिलाई है...
भाईचारा हो ऐसा जग में,
ये अनुराग जगाई है...
बुराई पर अच्छाई की जीत,
यही संदेश लाई है...
घर-घर बनते दही पकोड़े,
गुजिया और मिठाई है...
पहुंचाना मेरे घर भी कुछ,
सबको होली की बधाई है!

रीतेश कुमार
क्षे. का., सूरत

रंगों के भी हैं रंग

होली आज कुछ इस तरह मनाएं
सिसकियां मिटाएँ सारी
ठिठोलियों का रंग सबको लगाएं
भेद-भाव का रंग छोड़
एक ही रंग में सब रंग जाएं

पिचकारियों से निकले एकता की धारा
केसरी, हरे सब एक हो जाएं
गुलाल से ये सीखें आज
बिखर के भी फिर निखर जाएं

भांग में कुछ ऐसे स्नेह मिला दें
नशा ख़ुशी का मदहोश कर जाए
सब धर्म के रंग जब मनाएं होली
सारे के सारे तिरंगे बन जाए

आसान हो जाए अब बैर मिटाना
बस घेरे सबको और रंग लगाएं
प्रकृति ने भी छिड़के गुलाल
गुलशन की तितलियों में दिख जाए
बदलते रंगों को खुद के भी,
आज समेटे हम
दिल पावन गंगाजल बन जाए

पिचकारियों का ज़ोर क्या कम है
क्यों शब्दों के बाण चलाएं
फागुन जो खड़ी बाहें फैलाए
गगन भी आए सेहरा लगाए
होली आज कुछ इस तरह मनाएं

अनिल जायसवाल
क्षे. का., रायपुर

काश कि हर दिन होली सा हो!

काश कि हर दिन होली सा हो!
हर चेहरों पर उमंग, मन में खुशी सा हो!
ऐसे ही हर दिन सब लोग झूमें,
बड़ों को प्रणाम करें और नन्हों को चूमें,
आँखों में शरारत, हाथों में गुलाल हो,
हर इंसान रंगबिरंगा, हर गाल लाल हो,

सारे गिले शिकवे भुला दिए जाएँ,
सारे गम मिटा दिए जाएँ,
मन में कोई दीवार न रहे,
किसी के प्रति कोई तिरस्कार न रहे!
हँसता हुआ हर कोई नज़र आए,
चारों तरफ बस प्यार ही प्यार नज़र आए!

सोचिए, क्या हम कुछ ऐसा कर सकते हैं?
किसी के मन के खालीपन को भर सकते हैं??
सभी दूरियाँ मिटा सकते हैं?
रंगों को सांप्रदायिक होने से बचा सकते हैं??

जिस दिन हम सब मिलकर ऐसा सोच पाएँगे!
यकीन मानिए! हम ऐसा कर पाएँगे.
फिर कोई गम ना रह जाएगा!
हर दिन होली सा हो जाएगा!!!

क्रांति देओरी
क्षे. का., हावड़ा,

खुशियों की होली

गाओ रे खुशियों की होली, ले के संग मस्ती की टोली,
रंगों का त्योहार है होली आओ हम सब मिलकर खेलें होली,
खूब बजाओ ढोल-ताशे और बजाओ मृदंग,
ऐसी छेड़ो होली की तान, झूम उठे बच्चे बूढ़े और जवान,
सभी की जुबां पर एक ही बोली, गाओ रे खुशियों की होली.

लगा के माथे पे रंग, मिटा दो आज यह नफरत की जंग,
जगा, प्यार दिलों में खेलें हम सब खुशियों की होली,
होली है त्योहार उमंगों का, खेल है यह प्यार के रंगों का,
आओ, जला दें नफरत की बोली, गाओ रे खुशियों की होली.

क्यों रूठे हो, अब मान भी जाओ गुमसुम से गुलशन बन जाओ,
कड़वाहट की कैद से निकल, सब बन जाय हमजोली,
करके ऊंचा मनोबल का पट, छोड़ दो अब यह छल-कपट,
निकल पड़ी है मद-मस्तों की टोली, गाओ रे खुशियों की होली.

होली पर मिश्री की मिठास, सबके दिलों में रंगों ने घोली,
चहुं ओर फागुन की तान, सज चुकी है रंगों की महफिल,
रुनझुन- रुनझुन घुंगरू से सब हो गए हैं होली के नन्दन,
गंगाजल सा पावन मन होली कर गई है कुन्दन,
दिल से दिल मिल गए हैं, थिरक रहा है यह पावन तन मन,
सब की जुबां पर एक ही बोली, गाओ रे खुशियों की होली.

अजीत कुमार
क्षे.का., सम्बलपुर

फाग

मरहूम सी मोहब्बत,
जिंदगी बेज़ार,
चली गई वसंत और
आने वाला फ़ाग का त्योहार,
अब तो, बेढंगी है वसंत और .
फरेब है फाग का त्योहार,
फ़ाग में फैला है, ये रंगों का गुबार,
लगता है जैसे बरसने को कोई
जहरीला अब्र तैयार,
तुम्हारे बिना है हर मौसम अब बेज़ार,
जिंदगी है कायल अब,
और बस है क़ज़ा का इंतजार.

विकास कुमार
झाबुआ शाखा

टेसू उवाच

घुल गई मोरे अंग प्राण में
मादक ये सुगंध भीनी
जाने कौन से रंग में मोरी
चुनरिया तूने रंग दीनी

सरल हिरदे की कोंपल मोरी
मार गुलाल सराबोर कीनी
हुलियारा मन भयो हुड़दंगी
मोसे मन की डोर छीनी

नगाड़े थिरक थिरक के गाएँ
बचपन मचल के लौट आए
सतरंगी हर्षाए फगुनवा
गलबहियाँ जो डार दीनी

क्षितिज लाल हुआ पलाशी
रंग धरा का हुआ वसंती
अंत:करण फिर कैसे न रंगे
मनचाहा साकार कीनी

अग्नि छू न पाई सत्य को
पाप जल जल राख भया
सत्य विजय रची महागाथा
मानवता पे उपकार कीनी

शफ़ीक़ ख़ान
क्षे. का., रायपुर

प्रेम और रंगों का त्योहार

होली एक प्रमुख त्योहार है. होली जहाँ एक ओर सामाजिक एवं धार्मिक त्योहार है, वहीं रंगों का भी त्योहार है. बाल-वृद्ध, नर-नारी सभी इसे बड़े उत्साह से मनाते हैं. इसमें जातिभेद-वर्णभेद का कोई स्थान नहीं होता. इस अवसर पर लकड़ियों तथा कंडों आदि का ढेर लगाकर होलिका पूजन किया जाता है. फिर उसमें आग लगायी जाती है. पूजन के समय मंत्र उच्चारण किया जाता है.

इतिहास

प्रचलित मान्यता के अनुसार यह त्योहार हिरण्यकश्यप की बहन होलिका के मारे जाने की स्मृति में मनाया जाता है. पुराणों में वर्णित है कि हिरण्यकश्यप की बहन होलिका वरदान के प्रभाव से नित्य अग्नि स्नान करती थी और जलती नहीं थी. हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका से प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि स्नान करने को कहा. उसने समझा कि ऐसा करने से प्रह्लाद अग्नि में जल जाएगा तथा होलिका बच जाएगी. होलिका ने ऐसा ही किया, किंतु होलिका जल गयी, प्रह्लाद बच गये. होलिका को यह स्मरण ही नहीं रहा कि अग्नि स्नान वह अकेले ही कर सकती है. तभी से इस त्योहार के मनाने की प्रथा चल पड़ी.

होली की प्राचीन कथाएँ

कहानी यह है कि कंस के निर्देश पर जब राक्षसी पूतना ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए उनको विषपूर्ण दुग्धपान कराना शुरू किया लेकिन श्रीकृष्ण ने पीते-पीते उसे ही मार डाला. कहते हैं कि उसका शरीर भी लुप्त हो गया तो गाँव वालों ने पूतना का पुतला बना कर दहन किया और ख़ुशियाँ मनाईं. तभी से मथुरा मे होली मनाने की परंपरा है.

एक अन्य मुख्य धारणा है कि हिमालय पुत्री पार्वती भगवान शिव से विवाह करना चाहती थीं. चूँकि शंकर जी तपस्या में लीन थे इसलिए कामदेव पार्वती की मदद के लिए आए. कामदेव ने अपना प्रेमबाण चलाया जिससे भगवान शिव की तपस्या भंग हो गई. शिवशंकर ने क्रोध में आकर अपना तीसरा नेत्र खोल दिया. जिससे भगवान शिव की क्रोधाग्नि में जलकर कामदेव भस्म हो गए, फिर शंकर जी की नज़र पार्वती जी पर गई. शिवजी ने पार्वती जी को अपनी पत्नी बना लिया और शिव जी को पति के रूप में पाने की पार्वती जी की आराधना सफल हो गई. होली के अग्नि में वासनात्मक आकर्षण को प्रतीकात्मक रूप से जलाकर सच्चे प्रेम के विजय के रूप में यह त्योहार विजयोत्सव के रूप में मनाया जाता है.

मनुस्मृति में इसी दिन मनु के जन्म का उल्लेख है. कहा जाता है मनु ही इस पृथ्वी पर आने वाले सर्वप्रथम मानव थे. इसी दिन 'नर-नारायण' के जन्म का भी वर्णन है जिन्हें भगवान विष्णु का चौथा अवतार माना जाता है.

सतयुग में भविष्योतरापूरन नगर में छोटे से लेकर बड़ों को सर्दी-जुकाम जैसी बीमारियाँ लग गईं. वहाँ के लोग इसे ढुँधा नाम की राक्षसी का प्रभाव मान रहे थे. इससे रक्षा के लिए वे लोग आग के पास रहते थे. सामान्य तौर पर मौसम परिवर्तन के समय लोगों को इस तरह की बीमारियाँ हो जाती हैं, जिसमें अग्नि राहत पहुँचाती है. 'शामी' का पेड़ जिसे अग्नि-शक्ति का प्रतीक माना गया था, उसे जलाया गया और अगले दिन सत्ययुगीन राजा रघु ने होली मनायी.

इस तरह देखते हैं कि होली विभिन्न युगों में तरह-तरह से और अनेक नामों से मनायी गयी और आज भी मनाई जा रही है. इस तरह कह

सकते हैं कि असत्य पर सत्य की या बुराई पर अच्छाई की जीत की खुशी के रूप में होली मनायी जाती है. इसके रंगों में रंग कर हम तमाम ख़ुशियों को आत्मसात कर लेते हैं.

साहित्य में होली की झलक

भक्तिकाल के महाकवि घनानंद ने होली की मस्ती को अपने शब्दों में कुछ यों पिरोया है-

प्रिय देह अछेह भरी दुति देह, दियै तरुनाई के तेह तुली.
अति ही गति धीर समीर लगै, मृदु हेमलता जिमि जाति डुली.
घनानंद खेल उलैल दतै, बिल सैं, खुल सैं लट भूमि झुली.
सुढि सुंदर भाल पै मौंहनि बीच, गुलाल की कैसी खुली टिकुली.

भक्ति काल के महाकवि पद्माकर कृष्ण और राधा की होली की मस्ती को कुछ यों बयान करते हैं-

फाग की मीर अमीरनि ज्यों, गहि गोविंद लै गई भीतर गोरी,
माय करी मन की पद्माकर, ऊपर नाय अबीर की झोरी.
छीन पीतंबर कम्मर ते, सुबिदा दई मीड कपोलन रोरी,
नैन नचाय मुस्काय कहें, लला फिर अइयो खेलन होरी.

भारतेंदु जी भी तो 'फगुनिया' में जाते हैं और फिर गाते भी हैं-

गले मुझको लगा लो ऐ मेरे दिलदार होली में,
बुझे दिल की लगी मेरी भी ए यार होली में.

विभिन्न प्रान्तों में होली

आनन्दोल्लास से परिपूर्ण एवं गान-नृत्यों में लीन लोग जब अन्य प्रान्तों में होलिका का उत्सव मनाते हैं तब पश्चिम बंगाल में दोल यात्रा का उत्सव होता है. यह उत्सव पाँच या तीन दिनों तक चलता है. पूर्णिमा के पूर्व चतुर्दशी को सन्ध्या के समय मण्डप के पूर्व में अग्नि के सम्मान में एक उत्सव होता है. गोविन्द की प्रतिमा का निर्माण होता है. एक वेदिका पर 16 खम्भों से युक्त मण्डप में प्रतिमा रखी जाती है. इसे पंचामृत से नहलाया जाता है, कई प्रकार के कृत्य किये जाते हैं, मूर्ति या प्रतिमा को इधर-उधर सात बार डोलाया जाता है. प्रथम दिन की प्रज्वलित अग्नि उत्सव के अन्त तक रखी जाती है. अन्त में प्रतिमा 21 बार डोलाई या झुलाई जाती है. ऐसा कहा जाता है कि इन्द्रद्युम्न राजा ने वृंदावन में इस झूले का उत्सव आरम्भ किया था. इस उत्सव के करने से व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो जाता है. शूलपाणि ने इसकी तिथि, प्रहर, नक्षत्र आदि के विषय में विवेचन कर निष्कर्ष निकाला है कि दोलयात्रा पूर्णिमा तिथि की उपस्थिति में ही होनी चाहिए, चाहे उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र हो या न हो. देश के कई अलग-अलग प्रान्तों में होली को अलग-अलग नामों से जाना जाता है और बड़े ही निराले अंदाज़ों में मनाया जाता है. होली भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के कोने कोने में मनाई जाती है, बस ढंग अलग है. भारत के प्रान्तों में होली के ढंग अलग-अलग हैं.

आंध्र प्रदेश की होली

वैसे तो दक्षिण भारत में उत्तर भारत की तरह की रंगों भरी होली नहीं मनाई जाती है फिर भी सभी लोग हर्षोल्लास में शामिल रहते हैं. उत्तर भारत से इतर दक्षिण में नवयुवक शाम को एकत्रित हो कर गुलाल से होली खेलते हैं और बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं. आंध प्रदेश के बंजारा जनजातियों का होली मनाने का अपना निराला तरीक़ा है. यह लोग अपने विशिष्ट अंदाज़ में मनोरम नृत्य प्रस्तुत करते हैं.

तमिलनाडु की होली

इसी प्रकार तमिलनाडु में होली को 'कमाविलास', 'कमान पंदिगाई' एवं 'काम-दहन' के नाम से जाना जाता है, यहाँ के लोगों का मानना है कि कामदेव के तीर के कारण ही शिव को पार्वती से प्रेम हुआ था और भगवान शिव का विवाह देवी पार्वती से हुआ था, मगर तीर लगने से क्रोधित शिव जी ने कामदेव को भस्म कर दिया था तब रति के आग्रह पर देवी पार्वती ने उन्हें पुन:जीवित किया और जिस दिन कामदेव पुन:जीवित हुए उस दिन को होली के रूप में मनाते हैं. इसीलिए तमिलनाडु में होली को 'काम पंदिगाई' के नाम से जाना जाता है. यहाँ होली को प्रेम के पर्व के रूप में मनाया जाता है.

उत्तर प्रदेश की होली

उत्तर प्रदेश में होली का त्योहार बड़े ही हर्ष और उल्लास से मनाया जाता है. उत्तर प्रदेश के कोने-कोने में होली की धूम देखते ही बनती है. होली के दिन क्या बड़े और क्या छोटे सभी को हर प्रकार के मजाकबाज़ी की पूर्ण छूट होती है और लोग इसका जमकर लुफ़्त भी उठाते हैं. छेड़-छाड़, चुहलबाज़ी, गीत संगीत यहाँ तक कि गाली गलौज तक को भी जायज़ माना जाता है. यहाँ होली पर रंग और गुलाल के अलावा तरह-तरह के व्यंजन का भी बोलबाला रहता है. गुझिया, दहीवड़े, मठरी और इन सब से बढ़कर ठंडाई और उसके साथ भांग, रंगों के सुरूर को दोगुना कर देती है. रात को होलिका दहन के बाद अगले दिन सुबह रंगों के साथ गीली होली खेली जाती है और शाम को अबीर और गुलाल से समां सराबोर होता है. उत्तर प्रदेश में वृन्दावन और मथुरा की होली का अपना ही महत्त्व है. इस

त्योहार को किसानों द्वारा फसल काटने के उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है. गेहूँ की बालियों को आग में रख कर भूना जाता है और फिर उसे खाते हैं. होली की अग्नि जलने के पश्चात् बची राख को रोग प्रतिरोधक भी माना जाता है. इन सबके अलावा उत्तर प्रदेश के मथुरा, वृन्दावन क्षेत्रों की होली तो विश्वप्रसिद्ध है. मथुरा में बरसाने की होली प्रसिद्ध है. बरसाना राधा जी का गाँव है, जो मथुरा शहर से करीब 42 कि.मी. अन्दर है. यहाँ एक अनोखी होली खेली जाती है, जिसका नाम है लट्ठमार होली. बरसाने में ऐसी परंपरा है कि श्रीकृष्ण के गाँव नंदगाँव के पुरुष बरसाने में घुसने और राधा जी के मंदिर में ध्वज फहराने की कोशिश करते हैं और बरसाने की महिलाएं उन्हें ऐसा करने से रोकती हैं और डंडों से पीटती हैं और अगर कोई मर्द पकड़ा जाये तो उसे महिलाओं की तरह श्रृंगार करना होता है और सब के सम्मुख नृत्य करना पड़ता है, फिर इसके अगले दिन बरसाने के पुरुष नंदगाँव जाकर वहाँ की महिलाओं पर रंग डालने की कोशिश करते हैं. यह होली उत्सव क़रीब सात दिनों तक चलता है. इसके अलावा एक और उल्लास भरी होली होती है, वो है वृन्दावन की होली यहाँ बाँके बिहारी मंदिर की होली और 'गुलाल कुंदकी होली' बहुत महत्त्वपूर्ण है. वृन्दावन की होली में पूरा समां प्यार की खुशी से सुगन्धित हो उठता है, क्योंकि ऐसी मान्यता है कि होली पर रंग खेलने की परंपरा राधाजी व कृष्ण जी द्वारा ही शुरू की गई थी.

बंगाल और उड़ीसा की होली

बंगाल में होली को 'दोल यात्रा' व 'दोल पूर्णिमा' कहते हैं और होली के दिन राधा और कृष्ण की प्रतिमाओं को डोली में बैठाकर पूरे शहर में घुमाते हैं और औरतें उसके आगे नृत्य करती हैं. यह भी अपने आप में एक अनूठी होली है. बंगाल में होली को 'वसंत पर्व' भी कहते हैं. इसकी शुरुआत रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शान्ति निकेतन में की थी. उड़ीसा में भी होली को 'दोल पूर्णिमा' कहते हैं और भगवान जगन्नाथ की डोली निकाली जाती है.

राजस्थान की होली

यहाँ मुख्यत: तीन प्रकार की होली होती है. माली होली- इसमें माली जाति के मर्द, औरतों पर पानी डालते हैं और बदले में औरतें मर्दों की लाठियों से पिटाई करती हैं. इसके अलावा गोदाजी की गैर होली और बीकानेर की डोलची होली भी बेहद ख़ूबसूरत होती है.

पंजाब की होली

पंजाब में होली को 'होला मोहल्ला' कहते हैं और इसे निहंग सिख मानते हैं.इस मौके पर घुड़सवारी, तलवारबाज़ी आदि का आयोजन होता है.

हरियाणा की होली

हरियाणा की होली भी बरसाने की लट्ठमार होली जैसी ही होती है. बस फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि यहाँ देवर, भाभी को रंगने की कोशिश करते हैं और बदले में भाभी देवर की लाठियों से पिटाई करती है. यहाँ होली को 'दुल्हंदी' भी कहते हैं.

दिल्ली वालों की दिलवाली होली

दिल्ली की होली तो सबसे निराली है क्योंकि राजधानी होने की वजह से यहाँ पर सभी जगह के लोग अपने ढंग से होली मनाते हैं, जो आपसी समरसता और सौहार्द का स्वरूप है. वैसे दिल्ली में नेताओं की होली की भी ख़ूब धूम होती है.

कर्नाटक में होली समारोह

कर्नाटक में यह त्योहार कामना हब्बा के रूप में मनाया जाता है. इस दिन भगवान शिव ने कामदेव को अपने तीसरे नेत्र से जला दिया था. इस दिन कूड़ा-करकट फटे वस्त्र, एक खुली जगह एकत्रित किए जाते हैं तथा इन्हें अग्नि को समर्पित किया जाता है. आस-पास के सभी पड़ोसी इस उत्सव को देखने आते हैं.

इसके अलावा बिहार की फुगवा होली, महाराष्ट्र की रंगपंचमी, गोवा की शिमगो, गुजरात की गोविंदा होली और पश्चिमी पूर्व की 'बिही जनजाति की होली' की धूम भी निराली है.

प्रेम का त्योहार

होली वसंत व प्रेम-प्रणव का पर्व है तथा धर्म की अधर्म पर विजय का प्रतीक है. यह रंगों का, हास-परिहास का भी पर्व है. यह वह त्योहार है, जिसमें लोग 'क्या करना है, तथा क्या नहीं करना' के जाल से अलग होकर स्वयं को स्वतंत्र महसूस करते हैं. यह वह पर्व है, जिसमें आप पूर्ण रूप से स्वच्छंद हो, अपनी पसंद का कार्य करते हैं, चाहे यह किसी को छेड़ना हो या अज़नबी के साथ भी थोड़ी शरारत करनी हो. इन सबका सर्वोत्तम रूप यह है कि सभी कटुता, क्रोध व निरादर 'बुरा न मानो होली है' की ऊँची ध्वनि में डूबकर घुल-मिल जाता है. बुरा न मानो होली है की करतल ध्वनि होली की लंबी परम्परा का अभिन्न अंग है.

राजेश कुमार
क्षे.म.प्र.का., राँची

होली की संस्कृति

होली एक ऐसा पर्व, जिसका चिंतन मात्र करने से ही मन में रंग-बिरंगी छटा बिखरने लगती है. होली भारतीय संस्कृति का वह सौहार्दपूर्ण त्योहार है, जिसका दर्शन है-जीवन की सांसारिकता से मुक्ति पाकर भक्तिमय हो जाना. होली पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है. राग और रंग का यह पर्व वसंत की प्राकृतिक सुंदरता को चित्रित करता है.

यह विशेषकर दो दिन का त्योहार है जिसके पहले दिन होलिका दहन का कार्यक्रम होता है. दहन को हिंदू संस्कृति में बुराई के ऊपर अच्छाई की जीत के रूप में दर्शाया गया है. दूसरे दिन धुलेंडी या धुलीवेदन का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसमें घर-घर पकवान बनते हैं, गीत गाए जाते हैं और लोग आपस में गले मिलकर सारे गिले-शिकवे भुलाकर एक दूसरे को रंग लगाते हैं.

होलिका दहन के बारे में कई किंवदंतियां प्रचलित हैं, जिनमें एक सर्वमान्य पौराणिक कथा है- प्राचीन काल में हिरण्यकश्यप नामक एक दैत्य था, जिसका पुत्र प्रहलाद विष्णु भक्त था. प्रहलाद की विष्णु भक्ति से क्षुब्ध होकर हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका जिसे वरदान था कि वह आग में जल नहीं सकती, को आदेश दिया की वह प्रहलाद को भस्म कर दे. परंतु 'जाको राखे साईंया मार सके ना कोय' जैसे ही गोद में नन्हें प्रहलाद को लेकर होलिका चिता में बैठी और उसी को आग लगायी गयी, बैर रूपी होलिका नष्ट हो गई और भक्ति एवं आनंद रूपी प्रहलाद अक्षुण्ण रह गया. आदिकाल से ही भारतवर्ष में इस पर्व को मनाया जाता रहा है.

इतिहासकारों का मानना है कि आर्यों में इस पर्व का प्रचलन बहुतायत में था. कई धार्मिक ग्रंथों, मुख्यत: पूर्व मीमांसा सूत्र, नारद पुराण एवं भविष्य पुराण आदि में इसका अनेकों रूप में उल्लेख मिलता है. आज धर्म और संप्रदाय के नाम पर जहां समाज विघटित और असंगठित दिखाई देता है, उसी समाज का इतिहास कुछ और ही कहानी व्यक्त करता है. मध्यकालीन भारत में मुगल बादशाहों ने सामाजिक सौहार्द के प्रतीक के रूप में इस पर्व को शाही अंदाज़ से मनाया है. बाबर से लेकर शाहजहाँ तक सभी मुस्लिम शासकों ने हिन्दुस्तानी परंपराओं को ना सिर्फ़ अपनाया है बल्कि स्वयं के जीवन के अभिन्न अंग के रूप में शामिल भी किया है. अनेक प्रशस्तियों में होली की महिमा का वर्णन किया गया है. अमीर खुसरो जो कि एक सुप्रसिद्ध इतिहासकार और शायर रहे हैं, वो लिखते हैं-

आज रंग है. माँ री आज रंग है..
मोरे ख्वाजा के घर आज रंग है..
मोहे पीर पायो, निजामुद्दीन औलिया
देश-विदेश मैं फिरी रे
तेरा रंग भायो निजामुद्दीन औलिया
आज साजन मिला मोरे आँगन में.

आज के आधुनिक समाज में जहाँ प्रेम और सद्भाव की परिभाषाएं तेज़ी से बदल रही हैं. जहाँ मनुष्य को दो पल की भी फुर्सत नहीं है, वहाँ मानवता की अद्भुत मिसाल बनी इस होली पर्व की दुर्दशा अपने आप में शर्मनाक है. समाज के पतन के साथ ही पर्वों का पतन भी प्रारंभ हो गया है. आधुनिकीकरण के फ़ेर में फंसी मानव जाति ने कब अपना चरित्र खो दिया, पता ही नहीं चला.

हुड़दंग, रासायनिक रंगों और मिलावटी पकवानों के कारण यह पर्व अपनी पहचान खो चला है. समाज का बुद्धिजीवी वर्ग अब इसे गवारों और अनपढ़ों का टाइमपास मानने लगा है और वह दिन दूर नहीं जब सदियों पुरानी अपनी सांस्कृतिक विरासत को हम यूँही खो बैठेंगे. संस्कृति उस शैली को कहते हैं जिसमें एक भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले समाज का खान-पान, बोल-चाल, पहनावा,पर्व-त्योहार शामिल होता है. पश्चिमी विचारधारा से प्रभावित होकर हम समरूप होते चले जा रहे हैं. जिस समय हमें अपनी एक अलग पहचान बनानी चाहिए वहाँ हम नये रंग में रंगने का बहाना बनाकर, हमारी पुरानी पहचान को ही खो दे रहे हैं. वैश्वीकरण के इस रासायनिक रंग में हम इस कदर रंग चुके हैं कि अपनी होली के प्राकृतिक और सच्चे रंगों को ही भूलने लगे हैं. परंतु मैं आशान्वित हूँ कि युवा वर्ग आधुनिकता और प्राचीनता के बीच का रास्ता अवश्य खोज निकालेगा ताकि हम अपनी संस्कृति से भी जुड़े रहें और वैश्विक पटल पर भी पीछे ना रह जाएं.

अमन सक्सेना
छोटा उदेपुर शाखा, बड़ौदा

होली - संकल्पना, इतिहास, परंपरा

भारत त्योहारों का देश माना जाता है. होली ऐसा त्योहार है जो सभी त्योहारों से भिन्न है क्योंकि इसमें प्रत्येक व्यक्ति द्वेष भावना को भूलकर दुश्मन को भी गले लगाता है. यह वसंत ऋतु में आनेवाला त्योहार सम्पूर्ण भारत वर्ष में मनाया जाता है. रंगों का त्योहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है. पहले दिन होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते हैं. दूसरा दिन धूलिवंदन जिसे प्रमुखत: धुलेंडी व धुरड्डी, आदि नाम से भी जाना जाता है.

लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, साथ ही ढोल बजाकर होली के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जाकर लोगों को रंग लगाया जाता है. ऐसा माना जाता है कि होली के दिन लोग पुरानी कटुता को भूलकर गले मिलते हैं और फिर से दोस्त बन जाते हैं. एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है. इसके बाद स्नान करके विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं. राग-रंग का यह लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है. राग अर्थात संगीत और रंग तो इसके प्रमुख अंग हैं ही परंतु इनको उत्कर्ष तक पहुँचाने वाली प्रकृति भी इस समय रंग-बिरंगे यौवन के साथ अपनी चरम अवस्था पर होती है.

इतिहास

इतिहासकारों का मानना है कि आर्यों में भी इस पर्व का प्रचलन था लेकिन अधिकतर यह पूर्वी भारत में ही मनाया जाता था. इस पर्व का वर्णन अनेक पुरातन धार्मिक पुस्तकों में मिलता है. इनमें प्रमुख हैं, जैमिनी के पूर्व मीमांसा-सूत्र और कथा गार्ह्य-सूत्र. नारद पुराण और भविष्य पुराण जैसे पुराणों की प्राचीन हस्तलिपियों और ग्रंथों में भी इस पर्व का उल्लेख मिलता है. विंध्य क्षेत्र के रामगढ़ स्थान पर स्थित ईसा से 300 वर्ष पुराने एक अभिलेख में भी इसका उल्लेख किया गया है. संस्कृत साहित्य में वसन्त ऋतु और वसन्तोत्सव अनेक कवियों के प्रिय विषय रहे हैं.

सुप्रसिद्ध मुस्लिम पर्यटक अलबरूनी ने भी अपने ऐतिहासिक यात्रा संस्मरण में होलिकोत्सव का वर्णन किया है. भारत के अनेक मुस्लिम कवियों ने अपनी रचनाओं में इस बात का उल्लेख किया है कि होलिकोत्सव केवल हिंदू ही नहीं मुसलमान भी मनाते हैं. मुगल काल में अकबर का जोधाबाई के साथ होली खेलने का वर्णन मिलता है. अलवर संग्रहालय के एक चित्र में जहाँगीर को होली खेलते हुए दिखाया गया है. शाहजहाँ के समय तक होली खेलने का मुग़लिया अंदाज़ ही बदल गया था. इतिहास में वर्णन है कि शाहजहाँ के ज़माने में होली को ईद-ए-गुलाबी या आब-ए-पाशी कहा जाता था. अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र के बारे में यह प्रसिद्ध है कि होली पर उनके मंत्री उन्हें रंग लगाने जाया करते थे. मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में दर्शित कृष्ण की लीलाओं में भी होली का विस्तृत वर्णन मिलता है.

इसके अतिरिक्त प्राचीन चित्रों, भित्तिचित्रों और मंदिरों की दीवारों पर इस उत्सव के चित्र मिलते हैं. विजयनगर की राजधानी हंपी के 16 वीं शताब्दी के एक चित्र फलक पर होली का आनंददायक चित्र उकेरा गया है. इस चित्र में राजकुमारों और राजकुमारियों को दासियों सहित रंग और पिचकारी के साथ राज दम्पत्ति को होली के रंग में रंगते हुए दिखाया गया है. 16 वीं शताब्दी की अहमदनगर की एक चित्र आकृति का विषय वसंत रागिनी ही है. इस चित्र में राजपरिवार के एक दंपत्ति को बगीचे में झूला झूलते हुए दिखाया गया है. मध्यकालीन भारतीय मंदिरों के भित्तिचित्रों और आकृतियों में होली के सजीव चित्र देखे जा सकते हैं. उदाहरण के लिए इसमें 17 वीं शताब्दी की मेवाड़ की एक कलाकृति में महाराणा को अपने दरबारियों के साथ चित्रित किया गया है. शासक कुछ लोगों को उपहार दे रहे हैं, नृत्यांगना नृत्य कर रही हैं और इस सबके मध्य रंग का एक कुंड रखा हुआ है.

प्राचीन मान्यता

होली के पर्व से अनेक कहानियाँ जुड़ी हुई हैं, इनमें से सबसे प्रसिद्ध कहानी है प्रह्लाद की, प्राचीन काल में हिरण्यकश्यप नाम का एक अत्यंत बलशाली असुर था. अपने बल के दर्प में वह स्वयं को ही ईश्वर मानने लगा था. उसने अपने राज्य में ईश्वर का नाम लेने पर ही पाबंदी लगा दी थी. हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद ईश्वर भक्त था. प्रह्लाद की ईश्वर भक्ति से क्रुद्ध होकर हिरण्यकश्यप ने उसे अनेक कठोर दंड दिए, परंतु उसने ईश्वर की भक्ति का मार्ग न छोड़ा. हिरण्यकश्यप की बहन होलिका को वरदान प्राप्त था कि वह आग में भस्म नहीं हो सकती. हिरण्यकश्यप ने आदेश दिया कि होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर

आग में बैठे. आग में बैठने पर होलिका तो जल गई, पर प्रह्लाद बच गया. ईश्वर भक्त प्रह्लाद की याद में इस दिन होली जलाई जाती है. प्रतीक रूप से यह भी माना जाता है कि प्रह्लाद का अर्थ आनन्द होता है. उत्पीड़न की प्रतीक होलिका जलती है और प्रेम तथा उल्लास का प्रतीक प्रह्लाद जीवित रहता है.

परंपराएं

होली के पर्व की परंपराएँ अत्यंत प्राचीन हैं यह विवाहित महिलाओं द्वारा परिवार की सुख समृद्धि के लिए मनाया जाता था और पूर्ण चंद्र की पूजा करने की परंपरा थी. वैदिक काल में इस पर्व को नवात्रैष्टि यज्ञ कहा जाता था. उस समय खेत के अधपके अन्न को यज्ञ में दान करके प्रसाद लेने का विधान समाज में व्याप्त था. अन्न को होला कहते हैं, इसी से इसका नाम होलिकोत्सव पड़ा. भारतीय ज्योतिष के अनुसार चैत्र शुदी प्रतिपदा के दिन से नववर्ष का भी आरंभ माना जाता है. इस उत्सव के बाद ही चैत्र महीने का आरंभ होता है. अत: यह पर्व नवसंवत का आरंभ तथा वसंतागमन का प्रतीक भी है.

इसे किसी सार्वजनिक स्थल या घर के अहाते में गाड़ा जाता है. इसके पास ही होलिका की अग्नि इकट्ठी की जाती है. होली से काफ़ी दिन पहले से ही यह सब तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं. पर्व का पहला दिन होलिका दहन का दिन कहलाता है. इस दिन चौराहों पर व जहाँ कहीं अग्नि के लिए लकड़ी एकत्र की गई होती है, वहाँ होली जलाई जाती है.

इस आग में नई फसल की गेहूँ की बालियों और चने के होले को भी भूना जाता है. होलिका का दहन समाज की समस्त बुराइयों के अंत का प्रतीक है. यह बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय का सूचक है. गाँवों में लोग देर रात तक होली के गीत गाते हैं तथा नाचते हैं.

होली से अगला दिन धूलिवंदन कहलाता है. इस दिन लोग रंगों से खेलते हैं. सुबह होते ही सब अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने निकल पड़ते हैं. गुलाल और रंगों से सबका स्वागत किया जाता है. लोग अपनी ईर्ष्या-द्वेष की भावना भुलाकर प्रेमपूर्वक गले मिलते हैं तथा एक-दूसरे को रंग लगाते हैं. इस दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती हैं. बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं. सारा समाज होली के रंग में रंगकर एक-सा बन जाता है. रंग खेलने के बाद देर दोपहर तक लोग नहाते हैं और शाम को नए वस्त्र पहनकर सबसे मिलने जाते हैं. प्रीति भोज तथा गाने-बजाने के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं. भारत में होली का उत्सव अलग-अलग प्रदेशों में भिन्नता के साथ मनाया जाता है. ब्रज की होली आज भी सारे देश के आकर्षण का बिंदु होती है. बरसाने की लट्ठमार होली काफ़ी प्रसिद्ध है. इसमें पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएँ उन्हें लाठियों तथा कपड़े के बनाए गए कोड़ों से मारती हैं. इसी प्रकार मथुरा और वृंदावन में भी 15 दिनों तक होली का पर्व मनाया जाता है. कुमाऊँ की गीत बैठकी में शास्त्रीय संगीत की गोष्ठियाँ होती हैं. यह सब होली के कई दिनों पहले से शुरू हो जाता है. हरियाणा की धुलंडी में भाभी द्वारा देवर को सताए जाने की प्रथा है तथा पंजाब के होला मोहल्ला में सिक्खों द्वारा शक्ति प्रदर्शन की परंपरा है. तमिलनाडु की कमन पोडिगई मुख्य रूप से कामदेव की कथा पर आधारित वसंतोत्सव है जहां कि अलग-अलग प्रकार से होली के शृंगार व उत्सव मनाने की परंपरा है जिसमें अनेक समानताएँ और भिन्नताएँ हैं.

होली रंगों का त्योहार है, हँसी-खुशी का त्योहार है, प्राकृतिक रंगों का त्योहार है. इस त्योहार के माध्यम से हमें यह सीख मिली है कि मनुष्य के जीवन में यदि रंग ना हो तो जीवन नीरस सा लगने लगता है. यह त्योहार हमें अपने दुश्मन को भी गले लगाने की सीख देता है.

मुकेश पाटिल
क्षे. का., नागपुर

क्या कहते है रंग

रंग शब्द के उल्लेख से ही हम सभी के स्मृति पटल पर जो शब्द उभर आता है वह है होली. भारतीय समाज में होली त्योहार के प्रति लोगों का ज्यादा रुझान होने की वजह है उसमें प्रयुक्त रंगों की विविधता, जो लोगों के मन को आह्लादित करते हैं. इस समाज रूपी रंगमंच पर प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रंग में रंगा है, किसी ने रंगों को राग के रूप में रंगा है तो किसी ने वैराग्य के रूप में, साधु-सन्यासी गेरुआ रंग पहनते हैं तो समाज सेवी सफ़ेद वहीं सिनेमा के पर्दों पर अभिनय कर रहे कलाकार दर्शकों को खुद से जोड़ने हेतु रंग-विरंगे वस्त्र पहनते हैं. इस तरह से समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए रंग अलग महत्व रखता है तथा प्रत्येक रंग का अलग महत्व भी है.

धर्म में रंगों की मौजूदगी का खास उद्देश्य है. रंग के मनोविज्ञान को ही समझकर ऋषि-मुनियों ने धर्म में रंगों का समावेश किया है. शुभ अवसर पर तथा पूजा के अवसर पर रंगोली बनाना कलाधर्मिता के साथ-साथ रंगों के मनोविज्ञान को भी प्रदर्शित करता है. कुमकुम, हल्दी, अबीर, गुलाल, मेहंदी आदि के रूप में पाँच रंग हर पूजा में शामिल होता है. धर्म ध्वजाओं के रंग, तिलक के रंग, भगवान के वस्त्रों के रंग भी विशिष्ट रखे जाते हैं ताकि धर्म, कर्म के समय न केवल हम उन रंगों से न केवल प्रेरित हों बल्कि हमारे अंदर वो गुण भी आ सके.

दार्शनिकों तथा वैज्ञानिकों का यह मानना है कि इस विश्व में व्याप्त किसी भी चीज में रंग विद्यमान नहीं है. पानी, हवा, अंतरिक्ष तथा पूरी प्रकृति ही रंगहीन है. यहाँ तक की आस-पास जितनी वस्तुएं हमारी नजर में आती हैं वो सभी रंगहीन हैं तथा रंग केवल प्रकाश में मौजूद है, तभी तो अंधेरे में कोई रंग नहीं दिखता है. इसी को कहते हैं कि वस्तु उस रंग की नहीं होती जैसी दिखती है बल्कि वह उस रंग की होती है, जो वह त्यागती है. रंगों की उत्पत्ति का प्राकृतिक श्रोत सूर्य का प्रकाश है. सूर्य के प्रकाश से विभिन्न प्रकार के रंगों की उत्पत्ति होती है. प्रिज्म की सहायता से देखने पर पता चलता है कि सूर्य सात रंग ग्रहण करता है जिसे संक्षिप्त में अँग्रेजी में VIBGYOR तथा हिन्दी में बैजानीहपीनाला (बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी, लाल) कहा जाता है. हमारी दुनिया के रंगीन होने के पीछे बहुत बड़ा कारण है विलक्षण रंगों की उपस्थिति. बचपन में हमें केवल उपरोक्त इंद्रधनुष में उपस्थित सात रंगों के नाम सिखाए गए थे. परंतु समय के साथ-साथ यह पता चला कि हम रंगों को किसी संख्या या गण में तो सीमित ही नहीं कर सकते हैं, जिसकी बहुत बड़ी वजह है कि किसी भी दो रंगों को मिलाकर तीसरा रंग बनाया जा सकता है. इस प्रकार हम अलग-अलग मात्रा में अलग-अलग रंग मिलाकर असंख्य रंग बना सकते हैं. इस तरह रंगों को मूलत: तीन प्रकार के श्रेणियों में बांटा जा सकता है:- प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक रंग.

प्राथमिक रंग: वे रंग जिसे हम दूसरे रंग की मदद से नहीं बना सकते हैं ये रंग हैं- लाल, पीला तथा नीला.

लाल रंग: यह रंग सबसे अधिक लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है क्योंकि सबसे ज्यादा चमकीला रंग होता है. बहुत सी चीजें जो आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण होती हैं, वे लाल ही होती हैं जैसे रक्त का रंग लाल होता है, उगते सूरज का रंग भी लाल होता है. मानवीय चेतना में अधिकतम कंपन लाल रंग ही उत्पन्न करता है. जोश एवं उल्लास का रंग भी लाल ही होता है. यदि लाल रंग के कपड़े पहने हुए व्यक्ति को देखने पर एहसास होता है कि जरूर वह व्यक्ति जोशीला होगा, क्योंकि लाल रंग जोश का सूचक है. इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति (नर/नारी) को एक वर्ण लाल कपड़ें में देखकर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वह व्यक्ति (नर/नारी) अवश्य रूप से देवी का उपासक होगा.

नीला रंग : नीला रंग सबको समाहित करके चलने का रंग है. इस जगत में जो कोई भी चीज बेहद विशाल और हमारी समझ से परे है उसका रंग आमतौर पर नीला है, चाहे वह आकाश या समुद्र ही क्यों न हो क्योंकि नीला रंग सब को समाहित करके चलने का रंग है. जैसा कि सभी को पता है कि श्री कृष्ण के शरीर का रंग नीला माना जाता है. इस नीलेपन का मतलब जरूरी नहीं है कि उनकी त्वचा का रंग नीला हो ऐसा संभव है कि वे श्याम रंग के हों, लेकिन लोगों ने उनकी पूरी संस्कृति को

लेकर साथ चलने के गुण के कारण उन्हें नीले रंग का बताया.

पीला रंग: पीला रंग नवरात्र की षष्ठी तिथि को समर्पित है. पीला रंग भारतीय परंपरा में शुभ का प्रतीक माना जाता है. फेंगशुई ने भी इसे आत्मिक रंग अर्थात आत्मा या अध्यात्म से जोड़ने वाला रंग माना है. पीला रंग इंसान की रचनात्मक क्षमता, ज्ञान, बुद्धिमता, विद्या, आत्मविश्वास, डर, निराशा, जैसे गुण-दोषों को नियंत्रित करता है.

द्वितीयक रंग : किन्हीं दो प्राकृतिक रंगों को समान मात्रा में मिलाने पर जो नया रंग बनाता है उसे द्वितीयक रंग कहते हैं जैसे -

लाल+पीला=नारंगी रंग : नारंगी रंग जिसे भगवा, केसरिया आदि नामों से भी जाना जाता है यह रंग खुशी, आशीर्वाद, सफलता, शालीनता, बल और सामर्थ्य का प्रतीक है, तभी तो कवि ने कहा है:

"केसरिया बल भरने वाला"

हमारे राष्ट्रीय झंडे में विद्यमान यह रंग हमारे देश के सेना का नौजवानों का सामर्थ्य तो प्रदर्शित करता ही है, तभी तो कोई भी देश हमारे देश की सीमाओं की तरफ आँख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं जुटा पाता.

पीला+नीला=हरा रंग : आँखों को राहत पहुंचाने वाला हरा रंग प्रकृति का प्रतीक है. प्रकृति जीवन का संदेश देती है, यह रंग स्वास्थ्य, सकारात्मक ऊर्जा और सौभाग्य का प्रतीक है.

नीला+लाल=बैंगनी : जैसा कि यह दो रंगों को नीला एवं लाल दो रंगों के संयोग से बना है, अत: इस रंग में लाल का वैभव गुण तथा नीला रंग के समग्रता इन दोनों गुणों को समाहित रखता है. यह रंग राजसी वैभव का प्रतीक है तथा साथ ही यह जादू एवं रहस्य, जीवन में संतुलित मिश्रित भावों को भी प्रदर्शित करता है.

तृतीयक रंग: द्वितीयक रंग तथा प्राथमिक रंगों को अलग-अलग मात्र में मिलाकर तृतीयक रंग का निर्माण किया जा सकता है. कई रंगों के हल्के और गहरे शेड तृतीयक रंग के ही उदाहरण है.

मनोविज्ञान में रंगों का अपना एक अलग महत्व है. रंगों से मनुष्य के ऊपर होने वाले प्रभाव के अनुसार रंगों को दो भाग में बांटा गया है : 1 भड़काऊ रंग 2 शांत रंग

भड़काऊ रंग : यह रंग गर्म, ऊष्णता, का आभास कराते हैं. ऐसे रंग उत्साह और उत्तेजित करने के साथ-साथ गुस्सा और उत्तेजना को भी बढ़ा सकते हैं. लाल, पीला, भूरा इन्हीं रंगों के उदाहरण हैं. ऐसे रंग किसी भी का ध्यान आसानी से अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं.

शांत रंग : ये रंग इंद्रियों को शांत करने वाला स्वास्थ्यवर्धक, निश्छल, स्थिर, मैत्री भाव तथा मन को शीतलता प्रदान करने वाला होता है, इस रंग को धारण करने वाले लोगों को अपने शांत स्वभाव के बारे में बताने की जरूरत नहीं होती है. इस रंग के उदाहरण हैं सफ़ेद, गुलाबी आदि.

प्रकृति की सुंदरता अवर्णनीय है और इसकी सुंदरता में चार चाँद लगाते हैं ये रंग. सूर्य की लालिमा, खेतों की हरियाली, आसमान का नीलापन, मेघों का कालापन, वर्षा के बाद इंद्रधनुष की अनोखी छटा, बर्फ की सफेदी और न जाने कितने ही खूबसूरत नजारे, ये सभी हमारे अतरंग आत्मा को प्रफुल्लित करता है. इस आनंद का राज है, रंग की अनुभूति.

देश एवं काल के अनुसार कभी-कभी एक ही रंग अलग-अलग संकेतों के लिए प्रयुक्त होते हैं, जैसे वैलेंटाइन डे पर लाल रंग प्रेम का सूचक है तो वहीं ट्रैफिक में लाल बत्ती का जलना गाड़ियों के परिचालन में रूकने का सूचक है तो वहीं लाल रंग यदि प्लस के संकेत पर हो तो डॉक्टर का सूचक है. इस प्रकार से प्रत्येक रंग देश एवं काल की परिस्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न संदेश प्रदान करते हैं.

कहना न होगा कि इस प्रकार रंग हमारे जीवन के बहुत महत्वपूर्ण अंग है, बिना रंगों के यह दुनिया कैसी लग सकती है, इसका अंदाजा 80 के दशक के सिनेमा जगत से लगाया जा सकता है, जहां वैभवता के सारे सामान कपड़े, साज-सज्जा, भव्य इमारत, प्राकृतिक नजारा होने के बावजूद भी रंग विहीन सिनेमा दर्शकों को अपने आप से, समाज से जोड़ने में सफल नहीं हो पाती तथा इसी कारण से सिनेमा को और अधिक रोचक बनाने हेतु बाद के दशकों में सिनेमा में रंगों शामिल कर सिनेमा को रंगीन बनाया गया, आज के समय में रंगों की उपस्थिति के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति का जीवन आह्लादित होता है कि प्रत्येक रंग, प्रत्येक व्यक्ति के स्मृति पटल पर कुछ न कुछ कहता है.

तनीशा शर्मा
क्षे. का., प्रयागराज

होली : एक वैश्विक पर्व

अपने विद्यार्थी जीवन में देश-विदेश के रेडियो प्रसारण सुनते - सुनते मुझे एक बार ज्ञात हुआ कि पाकिस्तान में वहाँ का अल्पसंख्यक समुदाय होलिका दहन से पहले जालिम राजा की कहानी अपने बच्चों को सुनाया करता था. जब मैं कुछ बड़ा हुआ और थोड़ी - बहुत अंग्रेजी जानने लगा तो अपनी एक थाई मित्र से पता चला कि थाईलैंड में होली की ही तरह एक पर्व मनाया जाता है जिसमें छोटे-बड़े सभी एक दूसरे पर पानी के छींटे डालकर आपस में शुभकामनाओं का आदान - प्रदान करते हैं. इन जानकारियों ने मेरे मन में जिज्ञासा के भँवर उत्पन्न कर दिये और मैं यह जानने को उत्सुक हो उठा कि क्या त्योहार मनाने का भी कोई मनोविज्ञान होता है तथा यह कि क्या अपनी प्रसन्नता एवं मेलमिलाप के भाव को प्रकट करने हेतु अपनाई जाने वाली प्रक्रियाएं सकल विश्व में एक सी हैं ? मन में प्रश्न उठा कि क्या पर्व एवं त्योहार मनाने के समय एवं तौर - तरीकों में सभ्यता विश्व के सभी प्राणियों के मध्य एकता का आधार बन सकती है ?

हालाँकि मनोवैज्ञानिकों ने त्योहार के मनोविज्ञान पर क्या और कितना काम किया यह तो मुझे ज्ञात नहीं है, किंतु होली जैसे पर्वों को विश्व स्तर पर मनाए जाने की जानकारी तो हमें है ही. प्रसन्नता, सद्भावना एवं उल्लास का यह पर्व हमारे अपने देश में भिन्न-भिन्न स्थानों पर अलग-अलग ढंग से मनाया जाता है. रंगों की विविधता को प्रदर्शित करता हुआ यह त्योहार हमारे अपने देश में उल्लास एवं सभी भेदों को भुला देने की उच्च भावना के साथ मनाया जाता है. ठीक वैसे ही विश्व के विभिन्न देशों में यह त्योहार अलग-अलग नाम से, किंतु प्रसन्नता एवं उल्लास के एक ही समान भाव को अपने में संजोकर मनाया जाता है. आइये जानें कि किस तरह से होली का यह पर्व विभिन्न संस्कृतियों में रचा - बसा है और स्वयं की विश्व व्यापकता को प्रमाणित कर रहा है -

फ्रांस का नव वर्ष और होली

प्रति वर्ष 19 मार्च को होली की तरह एक पर्व फ्रांस में मनाया जाता है जिसे 'डिबोडिबी' कहा जाता है. इस दिन लोग नए वर्ष में प्रवेश करने की खुशियाँ मनाते हैं.

मिस्र में अंगारों की होली

मिस्र के जनजातीय वर्ग के बीच मार्च - अप्रैल में बुराई के अंत हेतु होली जैसा एक पर्व मनाया जाता है जिसे 'फालिका' कहते हैं. इसमें लोग जंगल में जाकर अपने पूर्वजों के कपड़े जलाते हैं तथा अंगारों से खेलते हैं. वे एक दूसरे के ऊपर जलते अंगारे भी फेंकते हैं. उनकी मान्यता है कि ऐसा करने से बुराई का अंत हो जाता है. वहाँ भी होलिका जैसी राक्षसी के विरोध में ही इस पर्व को मनाया जाता है.

थाईलैंड का आशीर्वाद पर्व

13 अप्रैल के दिन थाईलैंड में होली की ही भाँति एक पर्व 'सौंगक्रान' मनाया जाता है. इस पर्व में घर के वृद्धजन एवं वरिष्ठ सदस्य अपने से छोटों पर सुगंधित जल छिड़क कर उन्हें आशीर्वाद देते हैं. इस पर्व से वहाँ पर नव वर्ष का भी शुभारंभ हो जाता है.

अफ्रीका में अन्याय पर न्याय की विजय का पर्व

अफ्रीका में 'ओमेना वोंग' नाम का पर्व मनाया जाता है जिसकी

किंवदंति के अनुसार इसी नाम के राजा को वहाँ की प्रजा ने जिंदा जला दिया था. अब उस अन्यायी राजा के विरुद्ध हुई विजय की याद में राजा का पुतला जलाते हैं. इसी तरह से अफ्रीकी देशों में 16 मार्च को सूर्य का पर्व मनाया जाता है, जिसमें सूर्य की सप्तरंगी किरणों की दीर्घायु की कामना करते हुए वहाँ के निवासी रंगों से होली खेलते हैं.

गुयाना में 'फगुआ'

दक्षिणी अमेरिका के गुयाना में होली 'फगुआ' के नाम से जानी जाती है. यहां होली एक महीने पहले अरंडी का पेड़ लगाने के साथ शुरू हो जाती है , जिसे होलिका दहन पर जलाया जाता है . होली के दिन लोग मंदिर में इकट्ठे होते हैं. तरह - तरह के पकवान बनाकर लाते हैं और एक-दूसरे को खिलाते हैं. अबीर - गुलाल और पानी से होली खेलते हैं .

पोलैंड की फूलों वाली होली

पोलैंड में 'आर्सिना' नामक पर्व मनाया जाता है जिसमें लोग एक दूसरे पर फूलों के रंग और गुलाल मलते हैं. ये रंग बहुत सुगंधित होते हैं. साथ ही लोग एक-दूसरे से गले मिलते हैं.

अमेरिका की मनोरंजक होली

अमेरिका में लोग नदी के किनारे एकत्रित होकर एक दूसरे पर गोबर एवं कीचड़ से आक्रमण करते हैं. इस पर्व को 'मेडफो' कहा जाता है. इसी तरह से वहाँ पर एक और पर्व 31 अक्टूबर को मनाते हैं जिसे होबो कहा जाता है. इस दिन लोग फूहड़ एवं मजाकिया वेशभूषा धारण करते हैं तथा होली की तरह इस त्योहार को मनाते हैं. इस अवसर पर हुड़दंग करने वालों में होड़ मचती है और सबसे अधिक हुड़दंगी को पुरस्कार भी दिया जाता है. न्यूयार्क में होली परेड भी निकाली जाती है और लॉस एंजिल्स में हरेकृष्ण मंदिर में लोग बड़ी संख्या में एकत्रित होते हैं.

भारत जैसी होली बेल्जियम में

बेल्जियम में मूर्ख दिवस के रूप में होली जैसा पर्व मनाते हैं. इस दिन वहाँ पर जूतों की होली भी जलाई जाती है.

इटली की सप्ताह भर चलने वाली होली

इटली में फरवरी माह में 'रेडिका' पर्व सप्ताह भर तक चलता है जिसमें लोग चौराहों पर लकड़ियाँ जलाते हैं तथा अग्नि की परिक्रमा करते हुए लोग एक दूसरे को गुलाल लगाते हैं और आतिशबाजी भी करते हैं.

होली है सर्वस्तर

हमारे पड़ोसी देश नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका और मारीशस में भारतीय परंपरा के अनुरूप ही होली मनाई जाती है. लाओस में यह पर्व नववर्ष की खुशी के रूप में मनाया जाता है. स्पेन में भी लाखों टन टमाटर एक दूसरे को मार कर होली खेली जाती है. जापान में 16 अगस्त रात्रि को टेमोंजी ओकुरिबी नामक पर्व पर कई स्थानों पर तेज़ आग जलाकर यह त्योहार मनाया जाता है. चीन में होली की शैली का त्योहार च्वेजे कहलाता है. साईबेरिया में घास फूस और लकड़ी से होलिका दहन जैसी परिपाटी देखने में आती है. नार्वे और स्वीडन में सेंट जान का पवित्र दिन होली की तरह मनाया जाता है. शाम को किसी पहाड़ी पर होलिका दहन की भाँति लकड़ी जलाई जाती है और लोग आग के चारो ओर नाचते गाते परिक्रमा करते हैं.

इस तरह से 'होली' भारत का ही नहीं, अपितु सकल विश्व का पर्व है. ऐसे वैश्विक पर्व मानव स्वभाव के विनोदी पक्ष की सर्वव्यापकता तथा उल्लास प्राप्ति की कामना की ओर इंगित करते हैं. आज आवश्यकता इस बात की है कि हम इस पर्व की वैश्विकता की भावना को ध्यान में रखते हुए इसे प्रेम और सौहार्द के साथ मनाते हुए आगे बढ़ें और ऊँच - नीच, छोटे - बड़े, जैसे भेदभावों को दूरकर सब को स्वयं से तथा स्वयं को सबसे जोड़ते चलें. यही तो इस पर्व की मूल भावना है जो कि विश्वव्यापी है.

अर्पित जैन
स्टा. प्र. के. भोपाल

होली में ईश्वर

रंगों का त्योहार यह, करे मन को रंगीन,
जिससे आपस की खुशी, सके न कोई छीन,
चार दिनों की ज़िंदगी, बाँटे सबमें प्यार,
सीख यही देता हमें, होली का त्योहार.

होली का त्योहार, जिसका नाम सुनते ही मन में उत्साह, उमंग व मस्ती छा जाती है. होली में मथुरा वृंदावन की होली तो सारे देश का आकर्षण बिंदु है. यहाँ पर यह त्योहार बहुत ही लोकप्रिय और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है. होली एक ऐसा त्योहार है जिसे हर धर्म के लोग पूरे उत्साह के साथ मनाते हैं. यह त्योहार अपने आप में सकारात्मक ऊर्जा लेकर आता है. यह ढोल, मंजीरों, मृदंग की ध्वनि से गूँजता रंगों से भरा त्योहार है.

होली के त्योहार ने, घर-घर बाँटे रंग,
आँगन में छाई खुशी, द्वारे बजे मृदंग.

मथुरा और वृंदावन वह पवित्र स्थान है, जहां पर भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था. होली का त्योहार राधा-कृष्ण के समय से ही मनाया जा रहा है. वृंदावन के बाँके बिहारी मंदिर में महा होली उत्सव मनाया जाता है तथा होली के त्योहार को मथुरा के ब्रज में गुलाल कुंड में बड़ी ही खूबसूरती के साथ मनाया जाता है. राग-रंग का यह पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है. यहां पर कृष्ण लिली नाटक का आयोजन बेहतरीन ढंग से किया जाता है.

'सब जग होरी, या बृज होरी' बृज की होली के लिए यह कहावत प्रचलित है. इसका तात्पर्य यह है कि पूरे जग में मनाई जाने वाली होली में इतना रस नहीं है, जितना केवल बृज की होली खेलने में आनंद है. यहां की होली जब शुरू होती है तो खत्म होने का नाम ही नही लेती. यहां यह उत्सव ज़ोर-शोर से मनाया जाता है. होली के आने के पहले ही पूरे बृज में होली का हुड़दंग शुरू हो जाता है. सभी भक्त अपने आराध्य के साथ रंगों का उत्सव बड़े ही उत्साह के साथ मनाते हैं. रंगों का खुमार और राधा की धुन में रमे हुए भक्त होली के जोश में अपनी सुध-बुध ही गवां बैठते हैं.

मथुरा की होली की लोकप्रियता का कारण:

ऐसा माना जाता है कि आज भी मथुरा में भगवान श्रीकृष्ण और राधा रानी निवास करते हैं. यहां की होली के संदर्भ में कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण साँवले रंग / श्याम वर्ण के थे और राधा रानी श्वेत वर्ण की, तो वह राधा के श्वेत वर्ण को लेकर उनसे चिढ़ते थे इसलिए वह राधा के ऊपर रंग फेंका करते थे. यह भी कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण राधा को रंग लगाने अपने मित्रों के साथ बरसाने जाया करते थे. जिसके पश्चात राधा व उनकी सखियाँ गुस्से में आकर सभी लड़कों की डंडे से पिटाई करती थीं. इसके कारण इस होली को लट्ठमार होली का नाम दिया गया. मथुरा और वृन्दावन में होली मनाने का अपना एक अनूठा ही अंदाज है. यहां विभिन्न स्थानों पर भिन्न - भिन्न प्रकार की होली का अंदाज हमें देखने को मिलता है.

बरसाना की लट्ठमार होली :

बरसाना की लट्ठमार होली भारत का सबसे रंगीन पर्व होने के कारण विश्व प्रसिद्ध है. बरसाने की लट्ठमार होली फाल्गुन मास की शुक्ल पक्ष की नवमी को मनाई जाती है. बरसाना जो कि राधा जी का जन्म स्थान है वहीं उनका लाड़ली जी मंदिर है. इस खास मौके पर कई मंदिरों की पूजा करने के बाद नंदगांव के पुरुष बरसाना होली खेलने जाते हैं एवं बरसाना की महिलाएं नंदगाँव होली खेलने आती हैं.

बरसाने की गोपियाँ, ये गोकुल के लाल,
होली में ऐसे मिले, फागुन हुआ गुलाल.

यह होली एक सप्ताह तक चलती है जिसमें वहाँ की स्त्री व पुरुष रंगों, गीतों, नृत्यों और इस लट्ठमार खेल में लिप्त रहते हैं. होली के त्योहार को और खास बनाने के लिए दूध व कुछ जड़ी बूटियों की बनी ठंडाई नामक पेय का सेवन भी करते हैं.

फूलों की होली वृंदावन में:

वृंदावन में एक ऐसी भी जगह है, जहां रंगों के अलावा लड्डुओं और फूलों से भी होली खेलने का रिवाज है. यह होली के पहले पड़ने वाली एकादशी को खेली जाती है. बाँके बिहारी मंदिर के पुजारी वहाँ आये लोगों पर फूलों की वर्षा करते हैं. पंद्रह से बीस मिनट तक खेली जाने वाली इस होली का अपना ही आनंद होता है. फूलों और प्राकृतिक रंगों से सरोबार होती है- वृंदावन के प्रेम मंदिर की होली. इस होली को और अधिक खास बनाने के लिए इसमें टेसू के फूलों का प्रयोग किया जाता है. कहा जाता है कि भगवान श्री कृष्ण गोपियों के साथ टेसू के फूलों से होली खेलते थे. टेसू के फूलों से तैयार प्राकृतिक रंग शुद्धता का भी प्रतीक हैं. यहां पर कृष्ण भगवान और राधा रानी का विशेष श्रृंगार होता है. श्रृंगार से हटने के बाद इन फूलों को फेंकने के बजाय इनसे गुलाल तैयार किया जाता है. इस गुलाल के फूलों से तैयार प्राकृतिक रंग शुद्धता का भी प्रतीक है. इस गुलाल की महक से आसपास का वातावरण सुगंधित हो जाता है.

दाऊजी मंदिर का हुरंगा :

यह सदियों पुरानी परंपरा है. यहीं पर ही होली का समापन होता है. होली के अगले दिन पुरुष और महिलायें यहाँ एकत्रित होते हैं. गाँव की महिलाएं पुरुषों के कपड़े फाड़कर उनकी पिटाई करती हैं. इस प्यार भरी मार खाने के लिए वहाँ के पुरुष सुबह से ही भांग पीकर और बृज की वेषभूषा में सज-धज कर हुरंगा के लिए आते हैं और साथ ही भगवान श्रीकृष्ण के गीतों पर झूमते नाचते हैं.

होली के त्योहार में, मन में भरे उमंग,
कदम थिरकने लग गये, मुख पर छाये रंग.

विधवाओं की होली:

मथुरा और वृंदावन को राधा और कृष्ण की प्रेम नगरी कहा जाता है लेकिन इस नगरी में एक ऐसा तबका भी है जिसके लिए उनके अपनों ने ही दरवाजे बंद कर रखे हैं. मथुरा की होली में उन विधवाओं के जीवन में भी रंग भर जाता है. हर साल विधवाएँ ईश्वर के साथ होली खेलने के बाद फूलों और रंगों से भी होली

खेलती हैं. यहां होली खेलने के लिए महिलायें दूर-दूर से आती हैं. यह एक ऐसा पर्व है जहां पर सब महिलायें सफ़ेद रंग को भुलाकर रंगों में सराबोर हो जाती हैं.

लोगों का मानना है कि मथुरा, वृंदावन जैसे पवित्र और खुबसूरत स्थान पर स्वयं भगवान श्रीकृष्ण का वास है. जिसके कारण देश-विदेश तक इसकी प्रसिद्धि फैली हुई है. होली में ईश्वर की भक्ति से ओत-प्रोत विदेशी सैलानी विशेष रूप से इसका आनंद लेने के लिए प्रतिवर्ष आते हैं और होली के माध्यम से अपने आराध्य श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त करते हैं.

होली का त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक माना जाता है. यह त्योहार एकता, मिलन तथा पवित्र प्रेम का प्रतीक है. इस त्योहार में लोगों का उत्साह दुगुना हो जाता है. लोग आपस के मतभेद भुलाकर नये जीवन की शुरुआत के साथ अपने अंदर नई ऊर्जा भी लेकर आते हैं.

प्रवीण कुमार
स्टा.प्र.म. बेंगलूरु

जीवन के साथ जुडे, बोलते हुए रंग

अगर रंगों पर कुछ लिखना शुरु किया जाए तो शायद कागज और कलम कम पड़ जाएंगे लेकिन रंगों की अहमियत लिखी नहीं जा सकती. प्रकृति के रचनाकार ने भी रंगहीन ब्रह्मांड को बहुत से रंगों से चमकाया है. बिना रंगों की दुनिया तो सोच के परे है. अगर फूलों में रंग ना होते तो क्या फूल इतने खूबसूरत होते और अगर धागों में इतने रंग ना होते तो क्या हम अलग-अलग रंग के कपड़ों की ख्वाहिश करते? रंग तो हमारी जिंदगी में हर जगह मौजूद हैं. हर रंग अपनी एक अलग कहानी बयां करता है.

रंग तो हमारे जीवन में सुबह से लेकर रात ढलने तक साथ ही चलते हैं. जब सुबह होती है तो आसमान का रंग गुलाबी हो जाता है. ठंडी हवा के साथ चिड़ियों की चहचहाहट भी सुनाई देती है. प्रकृति कह उठती है, एक नया दिन शुरू हो गया है. चलो, अपने लक्ष्य की ओर बढ़ो! फिर जब दिन चढ़ता है तो आसमान का रंग पहले नीला और फिर नीले से सफेद होने लगता है. हमें भी अपने व्यक्तित्व को ऐसा ही रखना चाहिए, कैसा भी काम हो, उसे मन को शांत रखकर ही पूरा करना चाहिए.

कोई मुसीबत हो तो उसको सोचकर हमें अपने चेहरे का रंग सफेद नहीं करना है. हर डर, हर मुसीबत का डटकर सामना करना है और दिए हुए काम को पूरा करना है, जब हमारा दिन खुशी से गुजरता है और हमारे सारे काम हमारे मन मुताबिक होते हैं, तो हमें अपना दिन हरा भरा लगता है. कहीं कोई कठिनाई आ जाती है और हम अपने गुस्से पर काबू नहीं रख पाते और गुस्से में हम लाल पीले हो जाते हैं. वैसे तो लाल रंग के मतलब भी बहुत से हैं. जहां एक ओर खतरे का निशान लाल रंग का बनाते हैं, वहीं दूसरी ओर हर शुभ काम के लिए लाल सिंदूर भी चढ़ाते हैं. जिससे जान पड़ता है कि हम हर समय रंगों से घिरे हुए हैं और अगर ये रंग ना होते तो जिंदगी बदरंग होती.

जिंदगी का एक और रंग भी है और वो है सफेद रंग! ऐसा रंग जिसके साथ मिलकर हर रंग एक अलग ही रंग बना लेता है, उसी तरह जिसे अपनी जिंदगी में सुख, शांति और संतुलन बनाकर रखना है, संयम रखना है, उसे सफेद रंग की तरह सबसे मिलकर रहना होगा और खुद को इस तरह शांत रखना होगा कि बड़ी सी बड़ी मुसीबत भी उसका संयम ना हिला सके.

जैसे शाम होती है, आसमान कई रंगों की चादर में लिपट जाता है. इस चादर में कहीं हल्का गुलाबी, थोड़ा लाल, कहीं नीला तो कहीं काला रंग आपस में गुंथा नजर आता है. प्रकृति हमें संदेश देती है कि आज तुमने जो भी काम पूरे किए उसमें कुछ काम हरे रंग की तरह अच्छे, सफेद रंग की तरह शांत मन से और कहीं ना कहीं कुछ काम लाल रंग की तरह गुस्से में किए, जो भी कुछ दिनभर हुआ वो अब अच्छे और कुछ बुरे रूप में हमारे सामने है और यही नियम है जिंदगी जीने का! जब आसमान इन रंगों से खाली होता है और रात का गहरा काला रंग इस पर चढ़ता है, तब यह रंग हमें कई मतलब बताता है, रात के काले रंग में कोई ऐसा काम ना करो जिससे खुद को या दूसरों को मुसीबत हो. काले रंग की जिंदगी से दूर रहो. लेकिन प्रकृति ने रात के काले रंग को भी कई रंगों से रंगा है. रात को चांद की दूधिया रोशनी से चमकाया है. तारों की सफेद झिलमिलाहट रात के अंधेरे को और भी खूबसूरत बनाती है. इसी तरह हमें भी रात के काले रंग जैसी मुसीबतों में भी उम्मीद की रोशनी बनाकर रखनी है. हर रात के बाद फिर सवेरा होगा. फिर से यह संसार हरे, पीले और नीले रंग में रंगा होगा.

हमें याद रखना चाहिए, जो वक्त चल रहा है जो रंग आज चढ़ा हुआ है, वो वक्त गुजरेगा और वो रंग भी उतरेगा.

मोहम्मद शाद
दोंडाईचा शाखा; नासिक

हिन्दी साहित्य में होली

भारतीय परंपरा एवं संस्कृति विश्व में अद्वितीय है. सिंधु घाटी की सभ्यता से लेकर मगध के गौरवशाली इतिहास तक तथा आज के वर्तमान समय में भी भारतीय परंपराओं में त्योहारों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है. होली एक ऐसा त्योहार है जो कि अपने रंग भरे उत्सव से पूरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित करता है. यह त्योहार भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है. भारतीय संस्कृति में यह त्योहार सामाजिक एकजुटता, उत्साह, सत्य की जीत का त्योहार है.

होली का त्योहार एक परिचय:

होली त्योहार के मनाए जाने का वर्णन कई ग्रंथों तथा पुस्तकों में मिलता है. प्रत्येक वर्ष फाल्गुन माह की पूर्णिमा को होलिका दहन किया जाता है तथा अगले दिन अर्थात चैत्र प्रतिपदा को रंग-गुलाल के साथ ढोल, नगाड़ों तथा ताशा बजाकर उत्साह पूर्वक होली का त्योहार मनाया जाता है. पुरातन काल से चली आ रही यह प्रथा आज भी पूरे भारतवर्ष तथा विश्व में बसे भारतवंशियों द्वारा त्योहार के रूप में धूमधाम से मनायी जाती है. होली के त्योहार से संबंधित वर्णन कई भाषाओं के प्राचीन ग्रंथों तथा अन्य भारतीय भाषाओं में भी वर्णित है. हिन्दी साहित्य का समयानुक्रम के अनुसार कुल चार कालों में बांटा गया है. भक्ति काल, रीति काल, छाया काल तथा आधुनिक काल. इन सभी अवधि में रचनाकारों, कवियों तथा लेखकों द्वारा अपनी रचनाओं में होली के रंगों को बखूबी से भरा गया है. हिन्दी साहित्य का यह रंग पाठकों में लोकप्रिय भी रहा.

आदि काल की रचनाओं में होली:-

प्राचीन काल से ही संस्कृत साहित्य में वसंत ऋतु और वसंतोत्सव अनेक कवियों के विषय रहे हैं. महाकवि कालिदास द्वारा रचित ऋतुसंहार में पूरा एक सर्ग ही वसंतोत्सव को समर्पित है. भारवि, माघ तथा सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया, अमीर खुसरो और बहादूर शाह जफर जैसे मुस्लिम संप्रदाय का पालन करने वाले कवियों ने भी होली पर सुंदर रचनाएं लिखी हैं, जो आज भी जन सामान्य में लोकप्रिय हैं.

भक्ति काल की रचनाओं में होली:

हिन्दी साहित्य में होली और फाल्गुन माह का विशिष्ट महत्व है. आदिकालीन कवि विद्यापति से लेकर भक्तिकालीन कवि सूरदास, रहीम, रसखान, पद्माकर, जायसी, मीराबाई, कबीर सभी ने अपनी रचनाओं में होली तथा फाल्गुन माह को अतिमहत्व प्रदान किया है. महाकवि सूरदास ने वसन्त एवं होली पर कुल 78 पद लिखे हैं. कवि पद्माकर ने भी होली विषयक प्रचुर रचनाएं की हैं. इस विषय के माध्यम से कवियों ने जहां एक ओर नितांत लौकिक नायक-नायिका के बीच खेली गई अनुराग और प्रीति की होली का वर्णन किया है, वहीं राधा कृष्ण के बीच खेली गई प्रेम और छेड़-छाड़ से भरी होली के माध्यम से सगुण साकार भक्तिमय प्रेम और निर्गुण निराकार भक्तिमय प्रेम का निष्पादन किया है.

चाहे सगुण साकार भक्तिमय प्रेम हो या निर्गुण निराकार भक्तिमय प्रेम या फिर नितांत लौकिक नायक-नायिका के बीच का प्रेम हो, फाल्गुन माह का फाग भरा रस सबको छूकर गुजरा है. होली के रंगों के साथ-साथ प्रेम के रंग में रंग जाने की चाह ईश्वर को भी है तो भक्त को भी है, प्रेमी को भी है तो प्रेमिका को भी.

मीरा बाई ने इस पद में कहा है कि:

रंग भरी राग भरी रागसूं भरी री.
होली खेल्या स्याम संग रंग सूं भरी री.

इस पद में मीरा ने होली के पर्व पर अपने प्रियतम कृष्ण को अनुराग भरे रंगों की पिचकारियों से रंग दिया है. मीरा अपनी सखी को संबोधित करते हुए कहती हैं कि "हे सखी, मैंने अपने

प्रियतम कृष्ण के साथ रंग से भरी, प्रेम के रंगों से सराबोर होली खेली."

सूरदास जी लिखते हैं,

हरि संग खेलती हैं सब फाग.

इहिं मिस करते प्रगट गोपी उर अंतर को अनुराग.

सूरदास के कान्हा संग होली खेलते देख देवतागण तक अपना कौतूहल न रोक सके और आकाश से निहार रहे हैं कि आज कृष्ण के साथ ग्वाल बाल और सखियां फाग खेल रही हैं.

रीतिकालीन हिन्दी साहित्य में होली:

भक्तिकालीन कवियों की तरह रीतिकालीन कवियों ने भी हिन्दी साहित्य में होली को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है. बिहारी लाल, केशव, घनानंद आदि कवियों का यह प्रिय विषय रहा है. रीतिकालीन कवियों में बिहारी जी ने अपनी रचनाओं में संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों को बेहतरीन तरीके से समावेशित किया है. होली के बारे में वर्णन करते हुए वह लिखते हैं कि:-

बन बाटनु पिक बटपरा, तकि बिरहिनु मत मैन.

कुहौ कुहौ कहि कहि उठे, करि करि राते नैन.

हिय/और सी हवे गई डरी अवधि के नाम

दूजे करि डारी खरी, बौरी बौरे आम.

बिहारी ने फागुन को साधन के रुप में लेकर संयोग निरुपण भी किया है. फागुन महीना आ जाने पर जब नायक नायिका के साथ होली खेलता है तो नायिका भी नायक के मुख पर गुलाल मल देती है या फिर पिचकारी से उसके शरीर को रंग में डुबो देती है.

आधुनिक हिन्दी रचनाओं में होली:

आधुनिक हिन्दी साहित्य में तो होली से संबंधित रचनाएँ हमें बहुत ही बड़े स्तर पर मिलती हैं. आधुनिक हिन्दी कहानियों में प्रेमचंद, राज हरदोल, प्रभु जोशी की अलग-अलग तीलियां, तेजेन्द्र शर्मा की एक बार होली, ओम प्रकाश अवस्थी की 'होली मंगलमय हो' तथा स्वदेश राणा की 'होली में होली' के अलग अलग रुप देखने को मिलते हैं.

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अपनी कविताओं में होली को विशेष स्थान देते हुए लिखते हैं :-

जो कुछ होनी थी सब होली

धूल उड़ी या रंग उड़ा है.

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी ने वसंतोत्सव के रुप में होली को निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत किया है -

केशर की कलि पिचकारी, पात पात की गात संवारी.

राग-पराग-कपोल किए हैं, लाल-गुलाल अमोल लिए हैं.

तरु-तरु के तन खोल दिए हैं.

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने होली के रंग तथा वसंतोत्सव से हिन्दी साहित्य को भी बहुरंगी बनाया है:-

कैसी होरी खिलाई.

आग तन-मन में लगाई.

कवि हरिवंश राय बच्चन जी ने हालावाद के प्रवर्तक के रूप में होली के रंगों को अपनी रचनाओं/कविताओं में वर्णित किया है:-

तन के तार छुए बहुतों ने

मन का तार न भीगा,

तुम अपने रंग में रंग लो, तो होली है.

नजीर अकबराबादी कहते हैं कि

हिन्द के गुलशन में जब आती है होली की बहार.

जांफिशानी चाही कर जाती है होली की बहार.

डॉ. नामवर सिंह भी अपने आपको होली के बारे में लिखने से नहीं रोक पाए. फगुनी शाम के बारे में वह लिखते हैं कि:-

फगुनी शाम अंगूरी उजास,

बतास में जंगली गंध का डूबना.

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी साहित्य को बहुरंगी रंगों से निरंतर सराबोर किया है. कविता, गीत, कहानी, उपन्यास, साहित्य के हर प्रकार में कहीं न कहीं होली के त्योहार तथा रंगों ने हरदम रंगीन किया है. सभी लेखकों और कवियों ने अपनी रचनाओं में होली के त्योहार को स्थान दिया है. हिन्दी साहित्य के समस्त युगों/कालों में विभिन्न कवियों, रचनाकारों, रंगकर्मियों, नाटककारों ने होली को समुचित स्थान देते हुए इस त्योहार के महत्व को वर्णित किया है. हम यह भी कह सकते हैं कि होली एक मस्तमौलों का त्योहार है. यह भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है. यह रंग-बिरंगी मस्ती भरा पर्व है. जिसमें जाति भेद, वर्ण भेद का कोई स्थान नहीं होता है. समाज के सभी लोग मिलकर इसे उत्साह के साथ मनाते हैं. हिन्दी साहित्य ने इस त्योहार को एक नया आयाम दिया है.

डॉ. विजय कुमार पाण्डेय
क्षे. का., पटना

प्रकृति के रंग

रंग दृष्टि से अनुभव होने वाला एक गुण है, एक वर्ण (जैसे - नीला रंग, काला रंग इत्यादि) है. रंग केवल वो नहीं जिसे हम देखते हैं; रंग वो भी है जिसे हम महसूस करते हैं. 'कुदरत' जिसे प्रकृति भी कहा जाता है, वास्तव में वह प्रकृति जिसे हम आस - पास देख पाते हैं, इसे सृष्टि भी कहा जाता है. यह सृष्टि जिसमें हम रहते हैं, यह राग और रंगों का खेल ही तो है. प्रकृति के रंग जो हम देखते हैं, कितने मनोहार और दिल लुभाने वाले होते हैं. प्रकृति की सुंदरता, फाल्गुन के महीने में जब अपने चरम पर होती है, तब प्रत्येक प्राणी के मन में मधुर राग गूंजने लगता है. जब इसी राग की हिलोरें बाहर प्रकट होती हैं तो रंगों का पर्व होली बन जाता है. कुदरत में व्याप्त समस्त प्राणी किसी न किसी राग में मस्त हैं. कुदरत में दिखाई देने वाला हर एक रंग अपने अंदर एक विशेष प्रकार की ऊर्जा, एक विशेष प्रकार की भावना समाए हुए है. हमें प्रकृति में व्याप्त प्रत्येक जीवित और निर्जीव वस्तु का अपना एक रंग दिखाई देता है.

प्रकृति सुंदर रंगों की रंगोली के समान प्रतीत होती है. धरती दूर-दूर तक जहाँ तक दृष्टि जाती है, हरे रंग की वनस्पतियों से सजी हुई है. नीला आसमान रेशमी छत की तरह धरती को आसरा देता प्रतीत होता है. धरती पर हर संभव रंग फूलों और गूँजों के माध्यम से हम पहचान पाते हैं. बहता झरना चांदी की तरह सफ़ेद दिखाई देता है तो वहीं, नदी और समंदर नीले दिखाई देते हैं. इसी धरती की मिट्टी अलग - अलग स्थानों पर अलग रंग लिए प्रतीत होती है; कहीं काली, तो कहीं भूरी, कहीं पीली तो कहीं सलेटी. क्या कहना इस मिट्टी का कि बरखा की पहली फुहार पड़ते ही, एक ही जैसी खुशबू से प्रकृति को महका देती है. यह हमें भिन्नता में एकता का सबक देती है.

दुनिया एक रंगमंच है और इस दुनिया के रंगमंच में अलग - अलग भूमिकाएँ निभाने वाला हर व्यक्ति भी अलग-अलग रंगों में रंगा हुआ है. सन्यासी-सन्यासिन गेरुआ रंग धारण करते हैं, हिन्दू धर्म में केसरिया रंग का महत्व है, तो सूफी सफ़ेद रंग को महत्व देते हैं. वहीं इस्लाम में हरे रंग का भी अपना महत्व है. चिकित्सक सफ़ेद लिबाज़ धारण करते हैं, पुलिस वाले ख़ाकी रंग धारण करते हैं, वहीं वकील काले रंग की शरण लेते हैं. टी वी और मीडिया जगत के लोग नित नए रंगों में सजे-धजे नज़र आते हैं. आइये जानते हैं इन रंगों का अस्तित्व और महत्व.

रंग का अस्तित्व:-

वास्तव में यह सम्पूर्ण संसार ही रंगविहीन है. हवा, अंतरिक्ष, झरने, जंगल, नदियां रंगहीन हैं. हम जिन वस्तुओं को विभिन्न रंगों में रंगे देख पाते हैं, वे भी रंगहीन हैं. वैज्ञानिक आधार पर रंग केवल प्रकाश में होता है. प्रकाश की प्रत्येक किरण मूल रूप से सात रंगों से बनी होती है. किसी भी वस्तु पर जब प्रकाश की किरण पड़ती है, तब वह किसी एक रंग को प्रतिबिम्बित कर प्रकाश की किरणों में व्याप्त शेष रंगों को सोख लेता है. किसी भी वस्तु का रंग जो हम देख पाते हैं, वो रंग वास्तव में वो रंग है जो वो त्यागता है. जब हम किसी फूल को लाल रंग का होना देखते हैं तो, वास्तव में वह फूल प्रकाश किरण के सभी रंग सोखकर लाल रंग को बिखेर देता है. प्रकृति इस विज्ञान के माध्यम से मनुष्य को जीवन का ज्ञान समझाने का प्रयास करती है. व्यक्ति जो गुण बिखेरता है वही उसका वास्तविक गुण होता है. हम जो कुछ भी दूसरों को देते हैं वही हमारा वास्तविक गुण है - हम लोगों को सहयोग देते हैं तो हम सहयोगी हैं, हम प्रेम और करुणा प्रदान करते हैं तो हम करुणामयी हैं, हम शांति बिखेरते हैं तो हम शांतिदायी हैं. इस प्रकार कुदरत के रंग हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं.

प्रकृति में व्याप्त हर रंग अपने भीतर एक राज़ समाये हुए है

रंगों में तीन रंग सबसे प्रमुख हैं - लाल, हरा और नीला. इस जगत में मौजूद बाकी सारे रंग इन्हीं तीन रंगों से पैदा किए जा सकते हैं. हर रंग का आपके ऊपर एक खास प्रभाव होता है. यही कारण है कि, कई चिकित्सा पद्धतियों में रंग द्वारा शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों का इलाज किया जाता है.

लाल रंग एक ऐसा रंग है, जो सबसे ज़्यादा ध्यान अपनी ओर खींचता है. यह रंग सबसे ज़्यादा चमक लिए हुए होता है. यही कारण है कि, जहाँ भी लोगों का ध्यान आकर्षित किया जाना हो वहाँ लाल रंग का प्रयोग देखा जाता है. लाल रंग अपनेपन एवं तीव्रता के साथ - साथ अच्छे स्वास्थ्य की भी निशानी होता है. अच्छा स्वास्थ्य मतलब अच्छा रक्त संचार. रक्त का रंग भी लाल होता है. यही कारण है कि बहुत से प्राकृतिक खाद्य पदार्थ जैसे - चेरी, स्ट्रॉबेरी, सेब, टमाटर, इत्यादि लाल होते हैं. ये सभी खाद्य पदार्थ स्वास्थ्य वर्धक माने जाते हैं. उगते हुए सूरज का रंग भी तो लाल ही होता हैं. लाल रंग जोशवर्धक रंग भी माना जाता है. मानवीय चेतना में अधिकतम कंपन लाल रंग ही पैदा करता है. यह उल्लास का रंग है. आप कैसे भी स्वभाव के क्यों न हों, जब आप लाल रंग के कपड़े पहनकर निकलते हैं तो लोगों की नज़र में आप एक जोश से भरपूर इंसान ही लगेंगे. प्रकृति में बहुत से फूल और वनस्पतियाँ हैं जो लाल रंग की ही होती हैं. ये परागन (pollination) की प्रक्रिया को बढ़ाने का काम करती है. भवरें और मधुमक्खियाँ लाल रंग के फूलों से सर्वाधिक आकर्षित होती हैं. हिन्दुत्व में देवी जिन्हें 'जगत माता' भी कहा जाता है की उपासना आदि में भी लाल रंग का बहुत अधिक महत्व है. एक विशेष प्रकार की दैविक साधना में इसका महत्व माना गया है. यह लाल रंग शक्ति का भी प्रतीक है.

नीला रंग सबको समाहित करके चलने का रंग है. गौर कीजिये, तो आप पाएंगे, कि इस जगत में जो कुछ भी चीज़ बेहद विशाल और हमारी समझ से परे है, उसका रंग आमतौर पर नीला होता है. चाहे वो आकाश हो या समुद्र. जो कुछ भी हमारी समझ से बड़ा है, वह नीला होगा, क्योंकि नीला रंग सब को शामिल करने का आधार है. पौराणिक कथाओं में श्रीकृष्ण के शरीर का रंग नीला माना जाता है. उन्हें 'श्याम सुंदर' भी कहा जाता है. इस नीलेपन का मतलब जरूरी नहीं है कि उनकी त्वचा का रंग नीला था. बल्कि ज्ञानी और साधक ये समझ गए थे कि ये नीलापन सबको स्वयं में समाने वाली उनकी ऊर्जा का परिचायक है. कई व्याख्याओं में कृष्ण की प्रकृति सभी को साथ लेकर चलने वाली मानी जाती है. विष का रंग भी नीला ही बताया जाता है क्योंकि इसके संपर्क में आते ही किसी भी वस्तु - व्यक्ति के स्वयं के अस्तित्व का अंत होता है और वह नीले विष में ही समा जाता है.

हरा रंग शांति, और स्फूर्ति देने में सहायक रंग माना जाता है. यह रंग संतुलन की निशानी है. यह सृजन का रंग भी है तभी आप पाएंगे कि प्रकृति में हर बीज हरीतिमा लिए हुए नन्हें पौधे के रूप में जन्म लेता है. वृक्षों, लताओं यहाँ तक कि घास का रंग भी हरा होता है. हरियाली वास्तव में सृजन और खुशहाली का प्रतीक है. हरियाली और खुशहाली ये दोनों शब्द भी साथ में ही प्रयोग किए जाते हैं. फेंगशुई कहते हैं कि हरा रंग तनाव से राहत दिलाने वाला और बीमारियों को साधने वाला रंग माना जाता है. वे कहते हैं कि हरा रंग, मनोरोगों को साधने वाला रंग है. यह डिप्रेशन से निज़ात दिलाता है. तभी तो, आपके तनाव में रहने पर यदि आप कुछ समय हरियाली और प्रकृति की गोद में बिताते हैं तो आपका तनाव पल भर में छू मंतर हो जाता है. और यही हरियाली आपको रचनात्मकता भी प्रदान करती है.

यदि कोई चीज़ हमें काली नज़र आती है तो, इसकी वजह यह है कि यह कुछ भी परावर्तित (reflect) नहीं करती, सब कुछ सोख लेती है.काला रंग ऊर्जा को घटाने वाला रंग माना जाता है. अगर हम लंबे समय तक, काले कपड़े पहनेंगे तो हम पाएंगे कि हमारी ऊर्जा तरह-तरह की परिस्थितियों में घटने- बढ़ने लगती है. यह रंग हमारे अंदर के सभी भावों को सोख लेता है. यही नहीं हमें मानसिक रूप से स्थिर और असंतुलित कर देगा. काले रंग में ग्रहण करने की शक्ति होती है. सूर्य ग्रहण हो या चन्द्र ग्रहण मे भी काले रंग से जुड़े हुए हैं. हाल ही में 6 जून, 2020 को देश के विभिन्न स्थानों पर सूर्य ग्रहण होते ही धरती मानो अंधकार में डूब गयी थी. अंधकार का रंग भी तो काला ही होता है.

सफेद यानी श्वेत रंग असल में कोई रंग ही नहीं है. कह सकते हैं कि अगर कोई रंग नहीं है तो वह श्वेत है. लेकिन साथ ही श्वेत रंग में सभी रंग शामिल होते हैं. सफ़ेद रंग शुद्धता, पवित्रता और शांति की निशानी माना जाता है. प्रकृति में ऐसा बहुत कुछ है जो सफ़ेद रंग में रंगा हुआ है - पहाड़ों पर जो बर्फ होती है वो सफ़ेद है, बादल सफ़ेद होते हैं, चाँद का रंग भी चाँदी सा सफ़ेद माना जाता है. सफ़ेद रंग मूल रूप से, सब कुछ बिखेरने वाला रंग है. यह एक ऐसा रंग है जो कुछ भी पकड़कर नहीं रखता. सफ़ेद बर्फ से ढके हिमालय पर जब सूरज की किरणें पड़ती हैं तो सफ़ेद रंग किरणों को बिखेर देता है और हिमालय चाँदी सा चमकने लगता है. आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो, हम पाएंगे कि जो लोग आध्यात्मिक पथ पर हैं और जीवन के तमाम दूसरे पहलुओं में भी उलझे हैं, वे अपने आसपास से कुछ बटोरना नहीं चाहते. वे जीवन में हिस्सा लेना चाहते हैं, लेकिन कुछ भी इकट्ठा करना नहीं चाहते. वे इस दुनिया से निर्लिप्त होकर निकल जाना चाहते हैं. इस काम में श्वेत रंग उनकी मदद करता है, क्योंकि सफेद रंग सब कुछ बाहर की ओर बिखेरता है, कुछ भी पकड़कर नहीं रखता है. ऐसे बनकर रहना अच्छी बात है. इसलिए जब हम आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ते हैं और कुछ खास तरह से जीवन के संपर्क में आते हैं, तो सफेद वस्त्र पहनना सबसे अच्छा होता है. पहनावे के मामले में या आराम के मामले में, हम पाएंगे कि अगर एक बार हम सफेद कपड़े पहनने के आदी हो गए, तो दूसरे रंग के कपड़े पहनने में कहीं न कहीं अंतर आ ही जाएगा.

गेरुआ रंग, यह रंग का एक प्रतीक है. सुबह-सुबह जब सूर्य निकलता है, तो उसकी किरणों का रंग केसरिया होता है जिसे भगवा / गेरुआ या नारंगी रंग भी कहा जाता हैं. केसरिया रंग हिम्मत, निस्वार्थ भावना, त्याग और मुक्ति का रंग है. यह पवित्र ऊर्जा को दर्शाता हुआ रंग है. सूरज पूरी सृष्टि को ऊर्जा प्रदान करने वाला एक मात्र स्रोत है. सूरज की ऊर्जा वास्तव में अनंतकाल से प्रज्ज्वलित अग्नि के कारण है. अग्नि पवित्रता की निशानी होती है. इसीलिए मिसाल भी दी जाती है कि फलां व्यक्ति का व्यक्तित्व, अग्नि में तपकर निखर गया है. अधिकांशत: दुनिया से विरक्त होने वाले सन्यासी इस रंग को धारण करते हैं. हमारे शरीर में कुल सात चक्र हैं और हर चक्र का एक रंग होता है. भगवा या गेरुआ रंग आज्ञा चक्र का रंग है और आज्ञा ज्ञान-प्राप्ति का सूचक है, तो जो लोग आध्यात्मिक पथ पर होते हैं, वे उच्चतम चक्र तक पहुंचना चाहते हैं, इसलिए वे इस रंग को पहनते हैं.

कुदरत अपने भीतर कई राग रंगों के साथ, कई राज़ भी समाये हुए है. ऐसा ही एक राज़ है, रंगहीनता या पारदर्शिता का राज़. पारदर्शिता वैराग्य का सूचक है. प्रकृति में कई नग, रत्न, बर्फ, द्रव्य, रसायन इत्यादि, पारदर्शी होते हैं. पारदर्शिता का अर्थ है आप कुछ भी पूर्वाग्रह नहीं रखते हैं. जो जैसा है उसका ही हिस्सा बन जाते हो. जीवन के रंगमंच पर बेहतरीन प्रदर्शन वही कर सकता है जो राग और रंगों से परे हो. हम जीवन की संपूर्णता को, जीवन के असली आनंद को तब तक नहीं जान पाएंगे, जब तक हम उस आयाम तक न पहुंच जाएं जो राग व रंगों से परे है. अद्भुत है कुदरत का ये रंग?

निधि सोनी
क्षे. का., इंदौर

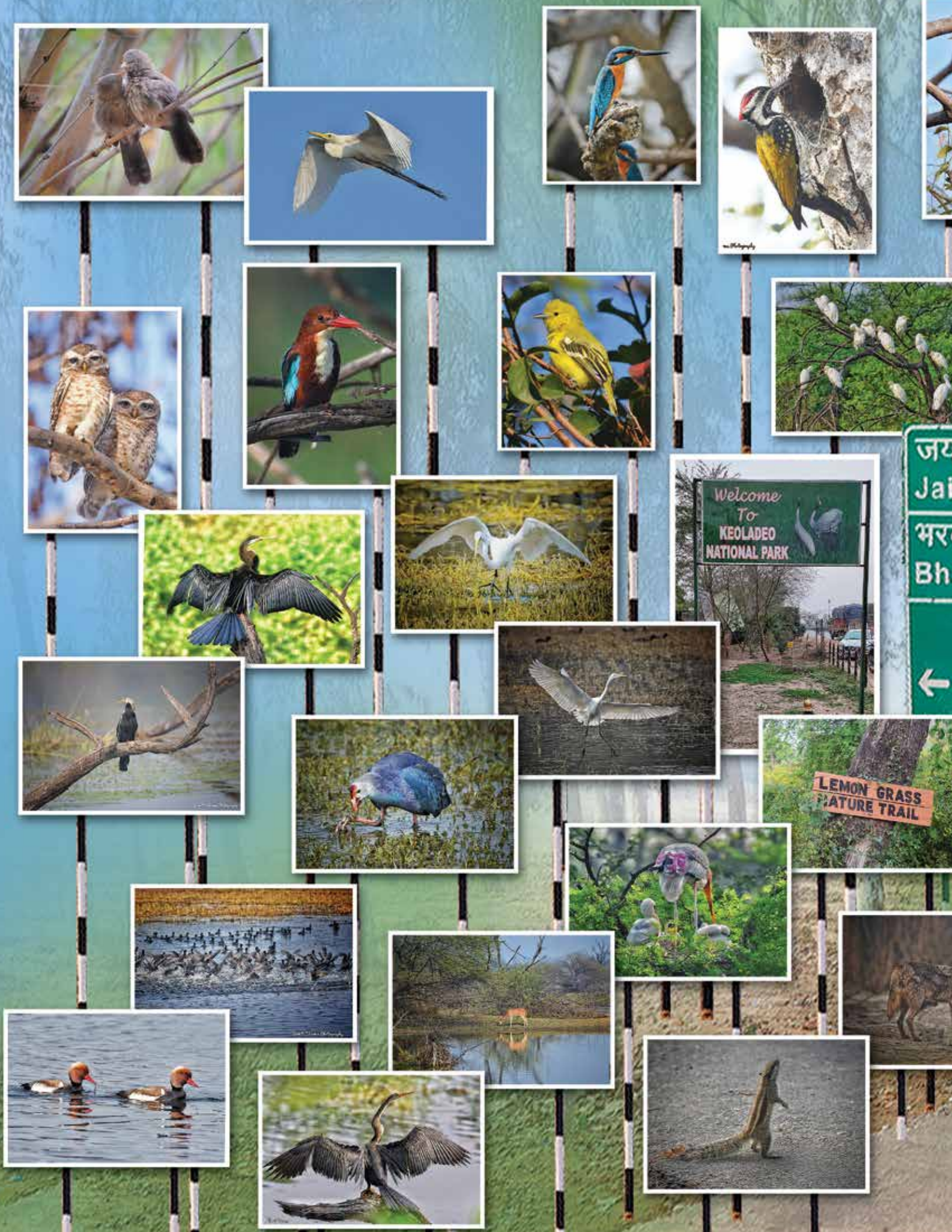
Welcome
To
KEOLADEO
NATIONAL PARK
LEMON GRASS
ATURE TRAIL

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान राजस्थान के भरतपुर जिले में वर्षावन से संरक्षित अभयारण्य है तथा विश्व धरोहर भी है. इसका नाम केवलादेव (शिव) मंदिर के नाम पर रखा गया है जो कि इसी पक्षी विहार में स्थित है. शीत ऋतु में यह पक्षी विहार दुर्लभ जाति के पक्षियों का दूसरा घर बन जाता है. साइबेरिन सारस, घोमरा, उत्तरी शाह चकवा, लालसर बत्तख जैसे विलुप्तप्राय जाति के अनेक पक्षी और करीब 350 प्रजातियों के प्रवासी पक्षी सर्दी के ऋतु में सैंकड़ों वर्षों से अफ़ग़ानिस्तान, तुर्की, चीन और सुदूर साईबेरिया तक से हजारों किलोमीटर का सफर तय करके केवलादेव उद्यान पहुँचते हैं. इसका निर्माण महाराजा सूरजमल ने करवाया था. ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने सिर्फ एक दिन में शिकार पार्टी के दौरान हजारों बत्तख और अन्य जल पक्षी मारे थे. दि. 13 मार्च 1976 से इसे पक्षी अभयारण्य बना दिया गया और शिकार पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया गया. साईबेरियन क्रेन, यहाँ का सर्वाधिक उल्लेखनीय पक्षी है, यहाँ पक्षी दाना चुगते, घोसले बनाते और प्रजनन करते देखे जां सकते हैं. चार प्रमुख नदियों- रूपारेल, बाणगंगा, गंभीरी और पार्वती के कारण इसका कुछ हिस्सा दलदला भी है, लेकिन अभयारण्य के विकास में इन बरसाती जल स्त्रोंतों का बड़ा हाथ है. यह जलीय वनस्पतियाँ, मछलियों की बहुत बड़ी तादाद पैदा करता है, जिन्हें अपना भोजन बनाने के लिए कई प्रजातियों के पक्षी अपना स्थायी डेरा इस अभयारण्य को बनाना पसंद करते हैं. चिलचिलाती धूप में जब जंगल सूख जाता है, तब ट्यूबबेलों का सहारा लिया जाता है. वर्षा के आगमन के साथ ही रौनकें लौट आती हैं और सारा वन एक बार फिर पक्षियों की मधुर आवाज़ से गूंजने लगता है.

सुमित शर्मा
क्षे.का.,रायपुर

त्योहार एक, रूप अनेक

भारत देश त्योहारों का देश कहा जाता है, एक त्योहार जा ही रहा होता है कि दूसरा आने की तैयारी में रहता है. हर त्योहार अपने में अनोखा होता है, हर त्योहार के पीछे कोई न कोई किंवदंतियां या फिर कोई न कोई कहानियां होती हैं. ये त्योहार जहाँ एक तरफ लोगों को मुस्कराने के लिए प्रेरित करते हैं तो दूसरी तरफ व्यापार को बढ़ाने में भी बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं. एक ही त्योहार को मनाने का तरीका हर प्रांत का अलग-अलग है परंतु उद्देश्य सबका एक ही दिखता है-समाज में खुशहाली, एकता, भाईचारा और समृद्धि लाना. हमारे देश में विभिन्न धर्म और जाति के लोग विभिन्न त्योहारों को इस तरह से मनाते हैं कि पूरा विश्व हमारी एकता और भाईचारे की मिसाल देता है.

दीपावली, ईद, ओनम, खिचड़ी, उगादि, गुड़ी-पड़वा, गुरु-पर्व, लोहरी इत्यादि के साथ होली की इन त्योहारों के बीच विशेष भूमिका है.

वैसे तो ये त्योहार हिन्दुओं का त्योहार कहलाता है, परंतु सम्पूर्ण भारतीय समाज इस त्योहार को बड़े धूमधाम से मनाता है. होली का त्योहार फाल्गुन महीने में मनाया जाता है. उस समय हमारे देश में वसंत ऋतु होती है. यह मौसम बहुत ही सुहावना होता है, न ज्यादा गर्मी न ज्यादा सर्दी और न ही बारिश! इस त्योहार को रंगों का त्योहार, वसंत का त्योहार इन नामों से भी जाना जाता है.

होली दो हिस्सों में मनाई जाती है, पहले दिन शाम को होलिका दहन होता है, जिसमें हम प्रतीक रूप में सारी बुराइयों का दहन करते हैं और ईश्वर की आराधना करते हैं, जिससे जीवन और समाज से सारी बुराइयां खत्म हो जाएं और अच्छाई का प्रसार हो. इसके बाद दूसरे दिन रंगों के साथ धूम-धाम से होली खेली जाती है. लोग अपने घरों में तरह-तरह के पकवान बनाते हैं और एक दूसरे के साथ मिल बांटकर खाते हैं.

रंगों को खुशियों का प्रतीक माना जाता है और लोग एक दूसरे को रंग लगाकर उनके जीवन में खुशियों के बने रहने की शुभकामनाएं देते हैं. बच्चों के लिए तो इस त्योहार की कोई अन्य से तुलना ही नहीं है, वह लगभग एक माह पहले से इसकी तैयारियां शुरू कर देते हैं. वैसे तो होली के दिन बड़े भी बच्चे बन जाते हैं, रंगों की बौछार चारो तरफ होती है, लोग ढोल ताशे और मजीरे के साथ खूब नाचते हैं, गाते हैं और खुशियां मनाते हैं.

एक पौराणिक कथा के अनुसार प्राचीन काल में हिरण्यकश्यप नाम का एक राक्षस था और बहुत ही बलशाली था. उसने घोर तपस्या की और वरदान प्राप्त किया कि न तो उसे कोई मनुष्य मार सकता है और न जानवर, न वो जल में मरेगा, न थल में, न आसमान में, न वायु में. उसे लगने लगा कि भगवान को अपनी बातों के जाल में फंसाकर उसने अमरत्व का वरदान प्राप्त कर लिया है. अब वो अपने आपको भगवान समझने लगा. उसने समस्त राज्यवासियों को आदेश दिया कि लोग सिर्फ उसकी पूजा करेंगे. किसी और भगवान की नहीं क्योंकि वही भगवान है. उसके अहम को ठेस तब लगी जब खुद उसका पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु की भक्ति में डूब गया. प्रह्लाद अपने पिता को भगवान मानने को तैयार नहीं था और वो भगवान विष्णु की आराधना में व्यस्त रहता था. हिरण्यकश्यप को ये बात पसंद नहीं आई और उसने अपनी बहन होलिका जिसे वरदान था कि वह कभी आग में नहीं जलेगी. उसे आदेश दिया कि वो प्रह्लाद को अपनी गोद में लेकर आग में बैठ जाए. इस तरह प्रह्लाद जल कर भस्म हो जाएगा. परंतु इसका उल्टा हुआ और होलिका खुद आग में भस्म हो गयी और प्रह्लाद बच गया. इस प्रकार अच्छाई बच गयी और बुराई को उसके कर्मों की सजा मिली.

तभी से देशवासी इस पर्व को बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाते हैं और होली के एक दिन पहले होलिका दहन करके हर वर्ष बुराई की होलिका को जलाते हैं.

राधा-कृष्ण की प्रेम गाथा का होली से बहुत ही गहरा संबंध है, कहा जाता है कि भगवान कृष्ण यशोदा मैया से अपने काले होने और राधा के गोरे होने पर सवाल पूछते थे तो एक दिन मैया ने बोला कि जा और जिस रंग से चाहे राधा को रंग दे तो भगवान कृष्ण ने राधा को उस दिन बहुत सारे रंग लगाए और उस दिन को होली के रूप में मनाया जाने लगा. ऐसा माना जाता है कि होली के दिन हिंदू धर्म के प्रेम के देवता कामदेव का भी जन्म हुआ था.

इस समय भारत की कई फसलें पक रही होती हैं और किसान अपनी अच्छी फसल की खुशी में भी होली का त्योहार मनाते हैं. कई जगहों पर इसे नए वर्ष का सूचक भी मानते हैं.

ऐसे ही विभिन्न कारणों से मिलकर होली का त्योहार पूरे देश में और कई रूपों में मनाया जाता है. चारो तरफ रंग ही रंग दिखते हैं और हवा में खुशियाँ बिखरी होती हैं. लोग एक दूसरे के घर जाते हैं, रंग लगाते हैं, कहीं गुजिया तो कहीं पूरणपोली बनाते हैं. मथुरा में फूलों की होली खेली जाती है. बरसाने की होली पूरे विश्व में प्रसिद्ध है, देश विदेश से लोग होली देखने और खेलने आते हैं. इस दिन सारे युवा लड़के सज-धजकर बरसाना होली खेलने जाते हैं और महिलाएं उन सब को लट्ठ से पीटती हैं. ये अपने आप में अनोखी होली है जो भगवान कृष्ण और राधा के प्यार की याद दिलाती है.

होली के प्रभाव से बॉलीवुड की फिल्में भी नहीं बच पायी हैं. 70 का दशक हो या इक्कीसवीं सदी, अक्सर फिल्मों में होली का चित्रण देखने को मिलता रहता है. होली के त्योहार पर फिल्माए गाने पर विशेष ध्यान दिया जाता है क्योंकि निर्माता को पता है कि फिल्म से ऊपर होली के गीत की एक सामाजिक भूमिका होती है.

यह त्योहार एकता, प्रेम, सामाजिक सौहार्द, हर्ष-उल्लास और सकारात्मकता का प्रतीक है.

बृजेश कुमार तिवारी
कर्वे रोड शाखा, पुणे

आकाश की होली

ज्यों - ज्यों होली का दिन नजदीक आ रहा था, त्यों - त्यों आकाश का उत्साह बढ़ता जा रहा था. जैसे दिन - रात बस होली की तैयारियों में ही मग्न था, और हो भी क्यों न, जिंदगी की पाँच होली उसने पिता के बिना ही खेली थी. पिता फौज में थे और सरहद पर देश सेवा में तैनात थे. ऐसा कम ही होता था कि त्योहार पर आकाश के पिता को छुट्टी मिल पायी हो. इस बार तो आकाश ने जिद ही पकड़ ली थी कि होली मनाऊँगा तो पिता के साथ नहीं तो होली नहीं खेलूँगा. पिता जी ने पुरजोर कोशिश कर 3 माह पहले ही अपनी छुट्टी अनुमोदित करवा ली थी. होली से 5 दिन पहले का रिज़र्वेशन था, तो आकाश रोज पिता से बात करता तथा एक-एक दिन गिन रहा था. बड़ी बहन के साथ मिल कर रोज होली की योजना बनाता. बस ऐसा लग रहा था कि वह दिन बस जल्द ही आ जाए. आकाश ने पिता के लिए माँ से कहकर मिठाई तैयार कराई तथा पिता के लिए होली का ग्रीटिंग कार्ड भी बना लिया था. पिता से दूर रहने का एहसास जैसे पिता के प्रति प्रेम को और प्रगाढ़ कर रहा था. हर सांस में बस पिता के साथ होली का जिक्र था.

अब बस 2 ही दिन बचे थे. पिता की छुट्टियाँ शुरू होने में. आकाश शाम को दोस्तों के साथ खेलकर घर में घुसा तो देखा, आज माँ और दीदी टेलीविजन पर समाचार देख रही है. आकाश ने घर में घुसते ही रोज की तरह टीवी का रिमोट माँ के पास से उठा लिया तथा कार्टून चैनल लगा दिया. दीदी ज़ोर से चिल्लाई 'समाचार चलाओ' आमतौर पर ऐसा कम ही होता था कि माँ और दीदी समाचार देख रही हो. चीन के सैनिकों ने भारत-चीन अंतर्देशीय सीमा पर भारतीय सेना की टुकड़ी पर हमला बोल दिया था, जिसके पश्चात अंतर-देशीय स्थिति तनाव पूर्ण हो गयी थी. आकाश ने भी देखा तो टीवी पर मुख्य खबर थी 'चीन ने खेली खून की होली' आकाश पूछने लगा 'माँ यह खून की होली क्या होती है, क्या पापा वहाँ भी होली खेल रहे हैं. पापा दूसरे देश से होली खेलने के बाद छुट्टी आएंगे क्या? माँ के पास इन सब सवालों का जैसे कोई जवाब नहीं था.

पिता की पोस्टिंग पिथोरागढ़ आर्मी कैंप में होने के कारण परिवार में माहौल तनावपूर्ण होना स्वाभाविक ही था. जैसी उम्मीद थी, वैसा ही हुआ. रात को पिता का फोन आया तो पता लगा कि सभी छुट्टियाँ रद्द कर दी गयी हैं. आकाश का तो मानो दिल ही टूट गया. रोता हुआ अपने कमरे में गया और पिता के लिए बनाया हुआ ग्रीटिंग कार्ड फाड़ दिया.

"माँ क्या पापा दूसरे देश वालों के साथ ही होली खेलते रहेंगे, मेरे साथ होली खेलने का उनका मन नहीं करता क्या? मैं पापा से बहुत नाराज हूँ." माँ ने जब आकाश को प्यार से सब माजरा समझाया तो आकाश रोने लगा, "ये दूसरे देश वाले हमारे देश पर आक्रमण क्यों करते हैं? क्या इनको रंगों की होली पसंद नहीं है? सब कहते हैं कि होली प्रेम का त्योहार है, तो फिर हम उनके साथ रंगों की होली खेलकर इस दुश्मनी को प्रेम में नहीं बदल सकते?" सुनकर माँ की आँखों से अश्रुधारा बह निकली.

अभिषेक राज
क्षे. का., बड़ौदा

होली, मथुरा एवं वृन्दावन की

मथुरा और वृंदावन. जब भी इन दो शहरों का नाम सुनाई देता है तो मन में आती है एक छवि, माखनचोर श्री कन्हैया लाल की. बचपन से अब तक सुनी हुई उनकी कहानियां, उनका बाल रूप, उनके सखा, यशोदा मैया, बांसुरी की धुनें, राधा का प्रेम, कंस का वध, जो भी हमने सुना या चलचित्र के माध्यम से देखा, वो सब जीवंत हो उठता है. किंतु यदि किसी ने जीवन में एक बार भी वहां की होली का आनंद लिया हो, तो इन शहरों का नाम सुनकर भगवान कृष्ण के साथ-साथ स्मृति में होली की रंगीन यादें ना आयें, ऐसा होना कतई मुमकिन नहीं.

होली क्यों मनाई जाती है, इसके पीछे की कहानी सभी को पता है. मैं भी बचपन से अब तक होली के इस त्योहार को सभी के साथ मनाता हुआ आया था, पर यदि मैं कहूँ की होली का असली आनंद और अब तक का सबसे अभूतपूर्व अनुभव यदि मथुरा वृन्दावन का रहा, तो वह अतिशयोक्ति नहीं होगी.

तो पहली बात तो यह कि जहां देश में अधिकांश जगह होली को बस होलिका दहन के अगले दिन तक मनाया जाता है, वहीं मथुरा वृन्दावन के क्षेत्र में यह त्योहार करीब एक सप्ताह तक मनाया जाता है.

इस बार की होली के लिये मथुरा वासी एक खास रिश्तेदार का आमंत्रण आया. समय निकालकर आखिरकार वहां जाने की योजना बन ही गयी. 8 मार्च की रात को रेलगाड़ी से वहां पहुँचना हुआ. छोटी छोटी गलियों और तंग रास्तों से होते हुए हमारा ऑटो गंतव्य तक पहुँच ही गया. खैर उस रात तो सबसे मिलने के बाद थकान उतारने के लिए हम सो गए पर अगली सुबह वहां का माहौल एकदम अलग ही था.

सुबह उठके देखा तो हमारे पूजनीय रिश्तेदार, पत्थर की शिला पे हरी पत्तेदार जड़ी बूटी को बांट रहे थे. समझते हुए देर नहीं लगी कि यह चीज़ क्या थी. शराफत दिखाते हुए, अनजान बनते हुए पूछा कि यह क्या है, तो जवाब मिला कि आनंद की गोली- भांग. वैसे इस चीज़ के बारे में लिखना जरूरी तो नहीं था, परंतु वहां भांग लेना इतना सामान्य था कि मुझे वहां की यह सामान्य बात बड़ी विशेष लगी. बातों-बातों में पता लगा कि होली के अवसर पर उनका पूरा परिवार ही नहीं अपितु करीब 30-40 लोगों के लिए भांग की ठण्डाई जिसमें तरह-तरह के फलों का और सूखे मेवों का मिश्रण होता है, तैयार की जाती है. खास बात थी उसकी तैयारी का तरीका. होली की मस्ती में तरह-तरह के लोक गीत और राधे कृष्ण के भजन के साथ तैयार की गयी भांग और मंदिर में बनने वाले प्रसाद की तरह उस ठण्डाई का वितरण होना, लगा जैसे दूसरी दुनिया में आ गया था. वहां ठण्डाई नशे का साधन नहीं अपितु प्रसाद के रूप में थी.

खैर, इस सब के उपरांत हम लोगों ने घर छोड़ा और एक बहुत ही अद्भुत यात्रा में शामिल हुए. मथुरा की भाषा में कहें तो उसे कहते हैं होली के डोले में शामिल होना. आपने एक पूरे के पूरे शहर को एक साथ इतनी बड़ी संख्या में सामूहिक होली खेलते हुए शायद ही देखा हो. होली का डोला वहां मौजूद मंदिरों के कार्यकर्ताओं द्वारा आयोजित एक झांकी के समान होता है. बड़ी सी झांकियां, उसके पीछे तेज़ आवाज़ में बजते राधा कृष्ण के भजन और उसके पीछे होली खेलते हुए सैकड़ों लोगों का हुजूम, अद्भुत. तरह-तरह के मीडिया चैनल के प्रचारक उस नज़ारे को अपने कैमरों में कैद करने की कोशिश कर रहे थे. आश्चर्य तब हुआ जब देखा कि उनमें से एक डोला जिसमें भारतीय लोगों से ज्यादा विदेशी लोग शामिल थे, होली की मस्ती और भजनों की धुनों पर ऐसे नाच रहे थे जैसे जाने कौन सा सुख मिल गया हो. देशी विदेशी लोगों को इस तरह भारतीय संस्कृति में सराबोर होते देख 'वसुधैव कुटुम्बकम' वाली भावना जेहन में उतर आयी. डोले में अधिकांश पुरुष ही थे, क्योंकि शहर की सारी महिलाएं अपने-अपने घरों की छतों से नीचे निकल रहे राधे कृष्ण के दीवानों पर तरह-तरह के रंगों की खुशबूदार गुलाल डाल रहीं थीं. पूरा शहर मानो एक ही जश्न में मशगूल हो. जहां-जहां से वो डोला निकलता वो पूरा रास्ता रंग बिरंगा हो उठता. गुलाल की खुशबू से सराबोर. जब पता लगा कि इस वर्ष कोरोना की वजह से लोग हर बार की तुलना में आधे ही थे, तो मैं उस डोले में सामान्य हालातों में होने वाले लोगों की संख्या का अनुमान लगाने लगा. सचमुच पहले मैंने इतने बड़े हुज़ूम को एक साथ इस तरह साथ में होली मनाते हुए नहीं देखा था.

होली के उस डोले के साथ-साथ कुछ वक्त चलने के बाद हम लोगों ने वृन्दावन में बहुत ही प्रख्यात बांके बिहारी जी के मंदिर और राधा वल्लभ मंदिर के दर्शन करने का मन बनाया और निकल पड़े उस ओर.

सबसे पहले हम पहुंचे बांकेबिहारी जी के मंदिर में. किंवदंती है कि एक भक्त के प्रेम के वशीभूत हो भगवान मंदिर छोड़ के स्वयं भक्त के साथ हो लिए थे. तबसे वहां भगवान के दर्शन बस कुछ क्षण के लिए ही होते हैं. उसके बाद एक पर्दे से भगवान को भक्तों की नज़रों से ओझल किया जाता है ताकि उस अलौकिक मूरत को किसी की नज़र ना लगे और फिर से दर्शन दिए जाते हैं. होली के उस माहौल में मंदिर में बहुत भीड़ थी. सब बस जोर-जोर से 'राधे-राधे' का जाप कर रहे थे और बारी-बारी से भगवान के दर्शन का सुख पा रहे थे. वहां पूरा माहौल गुलाबी हो गया था. बहुत ही सुंदर नज़ारा था वो. टेसुओं के फूलों वाले पानी की बड़ी-बड़ी पिचकारियां वहां भक्तों को भिगा रहीं थीं. आस्तिकता और नास्तिकता के बीच लोगों का एक समूह ऐसा भी है जो ना पूरी तरह आस्तिक है और ना नास्तिक. मेरा दावा है कि जो भी इंसान उस वक़्त उस माहौल में होगा, उसे वहां की हर आवाज़ में, राधे राधे की गूंज के साथ ईश्वर का अहसास होना तय है. अच्छे से अच्छे नास्तिक इंसान को भी ईश्वर की उपस्थिति और हज़ारों लोगों के हृदय में उनके प्रति असीम भक्ति भाव को देख ईश्वर से एक जुड़ाव महसूस हो ही जाएगा. जिंदगी में एक बार ये अहसास करना बहुत जरूरी है.

हम लोगों ने तदुपरान्त राधा वल्लभ जी के मंदिर जाने की योजना बनाई. छोटी-छोटी गलियों से जाते हुए रास्ते से हम उस मंदिर में पहुँच गए. यह बहुत ही पुराना मंदिर था. स्थानीय लोगों के बीच एक कथन है कि, 'राधा वल्लभ, दर्शन दुर्लभ'. किस्मत वालों को ही इस मंदिर में दर्शन होते हैं. यहां लोगों की भीड़ अपेक्षाकृत कम थी, लेकिन भक्तों के भक्ति भाव का सैलाब यहां भी वैसा ही था. बड़ी-बड़ी पिचकारियों में भरे टेसुए के पानी से भीगते हुए ऐसा लग रहा था जैसा भगवान खुद अपने भक्तों पर प्रेम की बारिश कर रहे हों. आंख बंद करके उस माहौल में खड़े हुए, भीगते हुए मन में एक अजीब तरह की खुशी हो रही थी. उसका अहसास तो वहीं मौजूद रहकर ही किया जा सकता है बस.

घर वापस आकर हम लोगों ने होलिका दहन किया. होलिका दहन का वहां अलग मजा है. नाचना, गाना, अलग-अलग तरह के भजन. सब कुछ वशीभूत करने वाला था.

अगले दिन धुलंडी के दिन हम फिर से तैयार हुए, कुछ और यादें संजोने के लिए. घर पर स्वादिष्ट नाश्ते के बाद हम लोग पास ही स्थित द्वारिकाधीश जी के मंदिर के लिए निकले. राधे राधे की गूंज दूर से ही सुनाई पड़ती थी. उस मंदिर में जाने के बाद कोई भी वहां पर्यटक, विदेशी या बाहर वाला नहीं रह जाता था अपितु राधा रस में डूबा एक भक्त बन जाता था. उड़ते गुलाल और भगवान के नाम में हर इंसान वहां मगन था अपनी धुन में. करीब एक घण्टे तक हम लोग वहीं रुके. नाचे, गाये, गुलाल और अबीर में नहाये. जहां तक नज़र घुमाओ गुलाल ही गुलाल और जहां तक देखो बस राधा रानी के भक्त. अतुलनीय.

दोपहर ढलते-ढलते हम भी अपने घर की तरफ लौटे. स्नान किया और नए वस्त्र धारण किये. शाम को घर पर भजन संध्या का कार्यक्रम रखा गया था. सभी लोग भक्ति में डूब कर भजन गाने लगे. रात्रि हो चली थी और सुबह की गाड़ी से हमें वापस निकलना था.

इंसान को अपने जीवन में एक बार यदि दुनिया की सर्वोत्तम होली देखनी हो तो निसंदेह वो मथुरा वृन्दावन की होली ही होगी.

होली के इस पवित्र त्योहार के साथ उसके हर एक पल में किस तरह ईश्वर की भक्ति का अहसास होता है, इस बात को आप वहीं जाकर समझ सकते हैं. आप जब भी मौका मिले, होली के अवसर पर मथुरा वृन्दावन जाइये, और विश्वास कीजिये कि वो पल आपकी जिंदगी के सबसे सुहाने और सबसे सुंदर पलों में शामिल हो जाएंगे.

कपिल शर्मा
क्षे. का., महेसाणा

होली एवं राष्ट्रीय एकता

'बुरा नहीं मानिएगा, होली है..... जरा सोंचिए' आप किसी घर/शहर में हैं और वहाँ आपको जानने वाला, पहचानने वाला कोई न हो जिसके साथ होली खेला जाए? आप किसे रंग लगाएंगे और किसके साथ धूम मचाएंगे? होली की सारी उमंग, उत्साह ही समाप्त हो जाएगा. अब यह सोंचिए कि शहर/घर में कोई एक ही सही साथ में होली खेलने वाला है तो क्या होगा? तो होगा हुड़दंग ! क्योंकि एक और एक ग्यारह होता है. यह मैं अपने व्यक्तिगत अनुभवों से आपको बता रहा हूँ, जब मैं पुणे में रहता था उस शहर के लिए मैं बिल्कुल नया था, परंतु एक दोस्त था जिसे मैं उस शहर में जानता था. फिर क्या था, जिस प्रकार की नेटवर्किंग के बारे में हमने सुना था वह वास्तव में देखने को भी मिली उस दोस्त का एक दोस्त और उस दोस्त के दो दोस्त और उनके भी दोस्त मिलाकर जब होली शुरू हुई तो दोपहर तक यह होली, हुड़दंग बन गई थी. बाद में जब हमने अपने चेहरे धोये और एक-एक करके सबसे परिचय हुआ तो उसमें से कई दोस्त ऐसे मिले जो अभी भी हमारे साथ संपर्क में हैं. इन दोस्तों में मोहम्मद खान साहब भी हैं जो अभी तक मेरे साथ फेसबुक से जुड़े हुए हैं. होली का जो मजा एक टीम के रूप में खेलने में हैं वह अकेले में आपको प्राप्त नहीं हो सकता.

यह शहरों की होली का मेरा अनुभव था, यदि हम गांवों की बात करें तो मेरा अनुभव कहता है कि पूरे वर्ष में हमें अपने पड़ोसियों से जो भी मतभेद/मनभेद होते हैं, उसको यह होली हमेशा से दूर करती आई है. यह होली सारे मतभेदों पर अपने रंगों से, उमंगों से उन्हें एक समान कर देती है. एक व्यक्तिगत अनुभव आपको अपने गाँव का बताना चाहूँगा: मेरे गाँव में रिवाज है कि सभी लोग सुबह में कीचड़ से / मिट्टी से होली खेलते हैं एवं दोपहर के उपरांत स्नान कर नए कपड़ों के साथ रंग और अबीर की होली खेलते हैं. शाम में गाँव के सभी मर्दों की एक टोली बनती है जो ढोलक, झाल एवं मजीरों के साथ पहले सभी देवस्थलों पर एवं उसके उपरांत सभी के दरवाजे पर जाकर होली गान करते हैं और जिनके भी दरवाजे पर लोग होली गान करते हैं वहाँ गृह स्वामी द्वारा सभी को बारी-बारी से रंग-अबीर लगाकर गले मिला जाता है और घर में बने पकवान खिलाये जाते हैं.

अब हुआ यूं कि खेती एवं सिंचाई से जुड़े किसी मतभेद के कारण हमारे पड़ोसी से मनमुटाव था परंतु जब वे हमारे दरवाजे पर आए तो हमने उन्हें रंग-अबीर भी लगाया और गले लगाकर उन्हें होली की शुभकामनाएँ दी और घर में बने पकवान भी उन्हें खिलाये और जब मैं उनके दरवाजे पर गया तो उन्होंने भी मुझे इसी प्रकार शुभकामनाएँ दी. अगले दिन हमारे चेहरों पर रंगों के दाग भले ही रह गए थे परंतु हमारा मनमुटाव समाप्त हो गया था. मैं अक्सर देखता हूँ कि गाँव में किसी कारण से लोगों में मनमुटाव हो जाता है. यदि कोई कारण नहीं मिला तो यह कार्य कोई भी चुनाव कर देता है चाहे वो ग्राम प्रधान का हो, विधायक का हो या सांसद का! परंतु होली इन सभी मतभेदों को अपने रंगों में रंगकर उन्हें एक कर देती है.

उपरोक्त अनुभवों में हमने पाया कि जिसे मैं नहीं जानता था उससे भी जीवन भर का जुड़ाव हो गया और जिसे मैं जानता था उससे मतभेदों के बावजूद जुड़ाव बना रहा: यही तो है एकता का मूल मंत्र. यह आपसी एकता, राष्ट्रीय एकता का आधार है. ये वो धागे हैं जो मिलकर एक मजबूत रिश्ते का निर्माण करते हैं. होली न सिर्फ सामाजिक दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण त्योहार है बल्कि भौतिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी प्रासंगिक है. यह केवल रंगों का त्योहार नहीं है बल्कि यह एकता और दोस्ती का भी त्योहार है. जाति, समुदाय, वर्ण, पद, भाषा और असमानता के अन्य सभी बंधन को भूलकर लोग इस त्योहार को मनाते हैं जो कि एकता में अनेकता का प्रतीक है.

भगवान ने जो हमें जीवंत और रंगीन जीवन प्रदान किया है, होली हमें उसकी याद दिलाता है. होली के रंग जीवन के विभिन्न पहलुओं, मनोदशा, भावनाओं, परिस्थितियों, जुड़ाव एवं लगाव, आध्यात्मिक ज्ञान, ऋतुओं, प्रकृति, ब्रम्हाण्ड के उत्क्रम और पेचीदगियों, अनेकता में एकता, एक से अनेक और अनेक से एक बनने को दर्शाते हैं.

होली के प्रत्येक रंगों का अपना एक अलग महत्व, अर्थ है. हरा रंग जहां समरसता को दर्शाता है, नारंगी भविष्य में विश्वास को, नीला स्वास्थ्य को तो लाल स्नेह और खुशी को प्रकट करता है. होली में यह भी एक रिवाज है कि लोग एक दूसरे पर रंग फेंककर माफी भी मांगते हैं कि 'बुरा न मानो होली है'. होली टूटे हुए रिश्तों को जोड़ने एवं पूर्व की गलतियों और मानसिक अशुद्धियों को दूर करने का त्योहार है.

परंतु इस पर्व को हिन्दू धर्म का होने के बावजूद लगभग सभी धर्मावलम्बियों द्वारा उतनी ही शिद्दत से मनाया जाना इसे अद्वितीय बनाता है. यहाँ पर मैं कानपुर में मनाई जाने वाली होली का जिक्र करना चाहूँगा. यहाँ मनाई जाने वाली होली पौराणिक न होकर स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़ी है, जो गंगा नदी के सरसैय्या घाट पर 'गंगा मेला' के साथ समाप्त होती है. यहाँ यह त्योहार 1942 के स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़ा हुआ है, जिसमें सेनानियों ने आजादी की घोषणा कर होली के अवसर पर तिरंगा फहराया था. हालांकि इसके बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था, परंतु इस घटना ने लोगों में राष्ट्रवाद की भावना को जगा दिया और इससे उत्पन्न विरोध प्रदर्शनों के कारण अंग्रेजों द्वारा क्रांतिकारियों को आजाद करना पड़ा था. इस आजादी दिवस को कानपुर में आज भी लोग गंगा मेला के रूप में मनाते हैं, जो होली के अंत की घोषणा होती है.

इसी प्रकार से लोगों में राष्ट्रीय एकता एवं आजादी की भावना को भरने के लिए लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी द्वारा 'गणेश चतुर्थी' पर्व को मनाने का शुभारंभ 1894 में किया गया था जो कि वास्तव में अंग्रेजों द्वारा धार्मिक आयोजनों एवं क्रांतिकारियों द्वारा राष्ट्रवाद के प्रचार पर प्रतिबंध को तोड़ने के लिए किया गया था. यह त्योहार आज भी राष्ट्रीय एकता के लिए एक 'मील का पत्थर' साबित होता है.

इस प्रकार पर्व त्योहारों को मनाने के पीछे सिर्फ धार्मिक भावनाएं ही नहीं है, परंतु एकता एवं समरसता की भावना भी इनमें छुपी हुई हैं. नंदिनी गूप्तु की पुस्तक 'द पॉलिटिक्स ऑफ द अरबन पुअर इन द अर्लि ट्वेंटियथ सेंचुरी इंडिया' में होली पर्व को धार्मिक से राष्ट्रवादी में रूपांतरित होने का जिक्र किया गया है. हम सब के समक्ष कई ऐसे उदाहरण हैं जो इस पर्व के राष्ट्रीय एवं सामाजिक एकता में महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हैं.

लोकमान्य तिलक जी द्वारा एवं हमारे अन्य महापुरुषों द्वारा जिन उद्देश्यों से हमारे त्योहारों को एक व्यापक रूप प्रदान किया गया था, हमें लगता है आज हम उन उद्देश्यों के विपरीत जा रहे हैं. अब हमने अपने त्योहारों को दिखावे एवं शक्ति प्रदर्शन के रूप में इस्तेमाल करना आरंभ कर दिया है. इसलिए आज त्योहारों को अपनी सामाजिक एकता, राष्ट्रीय एकता एवं समरसता को बनाए रखने की सोच के साथ मनाने की जरूरत है.

अखिलेश कुमार सिंह
क्षे.म.प्र.का., वाराणसी

राजभाषा समाचार

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय - क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र)- गुवाहाटी, नराकास(बैंक)- गुवाहाटी और क्षे.का. गुवाहाटी के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 28.05.2020 को वार्षिक कार्यक्रम विषय पर एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया जिसका समन्वयन कार्य क्षे.का.गुवाहाटी द्वारा किया गया.

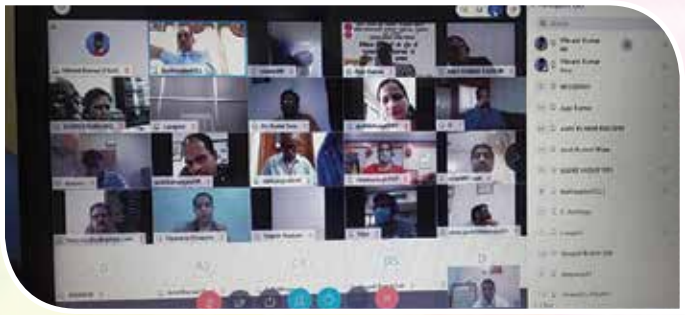

दि.9.06.2020 को राजभाषा विभाग - क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र), गुवाहाटी एवं क्षे.का.गुवाहाटी के संयुक्त तत्वावधान में वैश्विक महामारी के दौर में 'राजभाषा कार्यान्वयन में ई-टूल्स का प्रयोग' विषय पर वेब गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें पूर्वोत्तर भारत के 8 राज्यों में गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिवों ने भाग लिया.

एर्णाकुलम शाखा कोच्चि अंचल- पूर्व कार्पोरेशन बैंक का दि. 11.06.2020 को उप निदेशक, भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा ई- राजभाषा निरीक्षण किया गया. सुश्री सुष्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक, भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा किए गए ई- राजभाषा निरीक्षण में भाग लेती सुश्री रंजिता, हिन्दी संपर्क अधिकारी, एर्णाकुलम, शाखा प्रमुख सुश्री बिन्दु पी एवं श्री राजेश के., वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा).

नराकास (बैंक), कोच्चि द्वारा दि.23.06.2020 को 63वीं छमाही वार्षिक बैठक का श्री मंजूनाथस्वामी सी. जे, उपमहाप्रबंधक, क्षे. का., एर्णाकुलम एवं नराकास अध्यक्ष की अध्यक्षता में आयोजन किया गया. डिजिटल पहल के रूप में बैठक ऑनलाइन (Google Meet) माध्यम से आयोजित की गई थी. इस बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय कोच्चि, गृह मंत्रालय, भारत सरकार एवं विशेष अतिथि के रूप में भारतीय रिजर्व बैंक, एर्णाकुलम कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक, श्री के पी पटनायक उपस्थित रहे. नराकास बैंक, कोच्चि के सदस्य बैंक के सभी क्षेत्र प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया.

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोच्चि से डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन) द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम का दि. 28/05/2020 को श्री के. पी. शर्मा उप निदेशक, कार्यान्वयन बेंगलुरु द्वारा ई-निरीक्षण किया गया. यह दक्षिण भारत में स्थित कार्यालयों में से पहले कार्यालय का ई निरीक्षण है.

क्षे. का., हैदराबाद का श्री के. पी. शर्मा उप निदेशक, कार्यान्वयन बेंगलुरु द्वारा दि. 19.06.2020 को राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी ई-निरीक्षण किया गया, जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय से राजभाषा प्रभारी श्रीमती प्रिया सेठ, क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय से मुख्य प्रबंधक, श्री अमित शर्मा, पू. आंध्रा बैंक से उप महाप्रबंधक, श्री शेख हुसैन मौजूद रहे.

दि.18.06.2020 को क्षे.का., पटना में क्षेत्र की गृह पत्रिका 'यूनियन पाटलिपुत्र' के मार्च 2020 अकं का विमोचन श्री शैलेन्द्र कुमार, उप क्षेत्र प्रमुख के कर-कमलों से संपन्न हुआ. इस अवसर पर पत्रिका के संपादक डॉ. विजय कुमार पाण्डेय, श्री सुशील कुमार सिंह, मुख्य प्रबंधक, सुश्री दिव्या कुमारी, सुश्री सोनम कुमारी सहित उपस्थित स्टाफ सदस्य.

दि. 29.06.2020 के रोल आउट समारोह में क्षे. का., विशाखापट्टनम के नए परिसर में क्षेत्रीय गृह पत्रिका 'यूनियन वैशाखी' मार्च 20 अंक का विमोचन करते हुए श्री बी श्रीनिवास सेट्टी, क्षेत्र महाप्रबन्धक, विशाखापट्टनम, श्री जी श्रीनिवास मधु, उप अंचल प्रमुख, क्षे. म. प्र. कार्यालय, विशाखापट्टनम तथा श्री अजय कुमार, उप महाप्रबन्धक, क्षे. का., विशाखापट्टनम

दि. 26.06.2020 को क्षे. का., एर्णाकुलम में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गयी. डिजिटल पहल के रूप में बैठक ऑनलाइन (Google Meet) माध्यम से आयोजित की गई. इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में एर्णाकुलम क्षेत्र के कुल 14 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया. इस कार्यशाला में सहभागियों को हिन्दी भाषा का महत्व, राजभाषा नीति, सीआरएस, यूनिकोड द्वारा हिन्दी टायपिंग के बारे में जानकारी दी गयी.

दि. 26.06.2020 को क्षे.का., जबलपुर में व्यावहारिक हिन्दी डेस्क प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. जिसमें क्षे.का जबलपुर के 19 स्टाफ सदस्यों को सीआरएस की जानकारी दी गई.

दि. 08.06.2020 को श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा क्षे. का., जयपुर का राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी ई- निरीक्षण सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ.

दि. 28/05/2020 को क्षे.का. गुवाहाटी का राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी ई निरीक्षण श्री बदरी यादव, अनुसंधान अधिकारी, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र), गुवाहाटी द्वारा किया गया.

हमारे विभिन्न कार्यालयों द्वारा कोर राजभाषा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया. उसकी कुछ झलक

क्षे.म.प्र.का.,भोपाल एवं क्षे.का.,भोपाल सेंट्रल

क्षे.म.प्र.का., कोलकाता

स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भुवनेश्वर

क्षे.म.प्र.का.,वाराणसी

क्षे.म.प्र.का.अहमदाबाद

क्षे.का., मेरठ

क्षे.का., विजयवाड़ा

क्षे.का., तिरुअनंतपुरम

क्षे.म.प्र.का., बेंगलूरु एवं मेंगलुरु (संयुक्त प्रशिक्षण)

क्षे.का.,जयपुर

क्षे.म.प्र.का., बेंगलूरु (स्थानीय प्रशिक्षण)

राजभाषा पुरस्कार

दि.10-07-2020 को बैंक नराकास, जबलपुर की 67 वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक में क्षे. का. जबलपुर को प्रशासनिक वर्ग में वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया है. नराकास अध्यक्ष से शील्ड एवं प्रमाण- पत्र प्राप्त करें हुए - श्री प्रमोद बापुराव ठाकुर (उप क्षेत्र प्रमुख) क्षे.का जबलपुर एवं श्री ऋषि शंकर चौधरी (राजभाषा अधिकारी).

होली की किंवदंतियाँ व लोककथाएँ

भारत त्योहारों एवं उत्सवों का देश है. प्रचलित कहावत है कि यहाँ 365 दिनों में 366 त्योहार मनाए जाते हैं. ये सभी त्योहार भारतीय जनमानस पर अपना गहरा व अमिट प्रभाव रखते हैं. इन भारतीय त्योहारों में से प्रत्येक के पीछे समृद्ध इतिहास है और वैज्ञानिकता भी. होली को भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि कहा जाये तो कोई अतिशंयोक्ति नहीं होगी. यह त्योहार सांस्कृतिक एकता और आपसी भाईचारे का प्रतीक है. होली के अवसर पर उमंग, उल्लास, मस्ती अपने पूरे परवान पर होती है और होली का त्योहार पूरे देश में विभिन्न राज्यों द्वारा अपनी-अपनी विशिष्टता के साथ मनाया जाता है. फसल कटने के बाद मनाया जाने वाला यह त्योहार नववर्ष के आगमन और गतवर्ष की विदाई का प्रतीक है.

आइये जानते हैं होली से जुड़े कुछ विशिष्ट लोककथाएँ व किंवदंतियाँ

होली उत्सव के मनाए जाने के कारणों को लेकर भारतवर्ष में कई किंवदंतियाँ व लोककथाएँ प्रचलित हैं, जिसमें से भक्त प्रह्लाद व होलिका की कहानी सर्वाधिक चर्चित है. पौराणिक मान्यता के अनुसार पुरातन काल में राक्षस-राज हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु का अनन्य भक्त था, जबकि हिरण्यकश्यप भगवान विष्णु का नितांत विरोधी था. हिरण्यकश्यप ने अपने विष्णु भक्त पुत्र को विष्णु की आराधना करने से रोकने के लिए काफी प्रयास किए लेकिन भक्त प्रह्लाद ने अपने पिता की बात नहीं सुनी और भक्ति के मार्ग पर चलते रहे. इससे रुष्ट होकर हिरण्यकश्यप ने फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को प्रह्लाद को बंदी बना लिया और 7 दिन तक प्रह्लाद को तरह-तरह की यातनाएं देता रहा, फिर भी प्रह्लाद नहीं माने; तो 8 वें दिन हिरण्यकश्यप की बहन होलिका जिसे यह वरदान प्राप्त था कि अग्नि उसे नहीं जला सकती, भक्त प्रह्लाद को लेकर अग्निकुंड में बैठी और प्रह्लाद को जलाने का प्रयास किया, किन्तु अपने भक्त की रक्षा के लिए भगवान ने स्वयं सहायता की जिससे प्रह्लाद तो बच गया, परंतु होलिका जल गयी. तभी से यह होली का त्योहार मनाया जाता है. यह बुराई पर अच्छाई का प्रतीक माना जाता है.

होलास्टक 8 दिन का समय ऐसा समय जिसमें शुभकार्य वर्जित हो जाते हैं. सनातन धर्म कैलेंडर का आखिरी महीना फाल्गुन. इस महीने के आखिरी 8 दिन मतलब फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से लेकर होलिका दहन पूर्णिमा तक का समय होलास्टक का समय होता है.

होली शब्द का अर्थ : होली का सामान्य अर्थ देखें तो होता है, जो हो ना था हो गया अब नया साल शुरू होने वाला है, इसलिए सब वैर-भाव को भुलाकर नए जीवन की शुरुआत की जाए. इसलिए होली नववर्ष के स्वागत, वसंत ऋतु के स्वागत और गत वर्ष की विदाई का त्योहार भी है.

क्यों नहीं होते शुभ कार्य ?

होलास्टक के दौरान गृहप्रवेश, व्यवसाय का मुहूर्त, शादी, यज्ञोपवीत संस्कार सहित कोई भी शुभकार्य नहीं किया जाता. इसके पीछे एक पौराणिक कहानी है. भगवान शिव ने प्रेम और काम के देवता कामदेव को उनकी दुष्टता से क्रोधित होकर फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को भस्म कर दिया था. संसार में काम के ही समाप्त होने से शोक की लहर फैल गई और सारा जगत शोक में डूब गया. कामदेव की पत्नी रति ने भगवान शिव से क्षमायाचना की और अपने पति को पुन:जीवित करने की प्रार्थना की.

ऐसा माना जाता है कि धुलेंडी के दिन यह शोक 8 दिन बाद समाप्त हुआ और कामदेव और रति का मिलन हुआ. इसी कारण यह 8 दिन शोक के रहे और आज तक यह 8 दिन शोक के रूप में मनाये जाते हैं और कोई भी शुभकार्य नहीं होता और यही कारण माना जाता है कि जब 8 दिन बाद कामदेव और रति का मिलन हुआ तो जगत में होली का उत्सव मनाया गया और जिसे वसन्तोत्सव भी कहने लगे.

कई अन्य कहानियां.....

होली को लेकर राक्षसी ढूंढी की एक कथा है. राजा पृथु के समय में ढूंढी नामक एक कुटिल राक्षसी रहती थी. वह अबोध बालकों को खा जाती थी. अनेक प्रकार के जप-तप से उसने बहुत से देवताओं को प्रसन्न करके वरदान प्राप्त कर लिया था कि उसे कोई भी देवता या मानव, अस्त्र या शस्त्र उसे नहीं मार सकेगा. यही नहीं उस पर न तो सर्दी न गर्मी और न वर्षा का ही कोई असर होगा. इस वरदान के बाद उसका अत्याचार बढ़ गया. उसको मारना लगभग असंभव था लेकिन शिव के एक शाप के कारण बच्चों की शरारतों से वह मुक्त

नहीं थी. राजा ने अपने राजपुरोहित से इससे छुटकारा पाने का उपाय पूछा. पुरोहित ने कहा कि यदि फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन जब न अधिक सर्दी होगी और न ही गर्मी, तब सब बच्चे एक-एक लकड़ी लेकर अपने घर से निकलें. उसे एक जगह पर रखें और घास-फूस रख कर जला दें. ऊंचे स्वर में तालियां बजाते हुए मंत्र पढ़ें और अग्नि की प्रदक्षिणा करें तो वह राक्षसी मर जाएगी.

पुरोहित की सलाह का पालन किया गया और जब ढूंढी इतने सारे बच्चों को देखकर अग्नि के समीप आयी तो बच्चों ने एक समूह बनाकर नगाड़े बजाते हुए ढूंढी को घेरा, धूल और कीचड़ फेंकते हुए उसको शोरगुल करते हुए नगर के बाहर खदेड़ दिया, जहाँ उसके प्राण निकल गए. कहते हैं कि इसी परंपरा का पालन करते हुए आज भी होली पर बच्चे शोरगुल और गाना बजाना करते हैं.

क्यों लगाते हैं होली के अवसर पर रंग ....

होली पर रंग लगाने को लेकर भी लोगों में कई बातें प्रचलित हैं. एक बात यह भी है कि भगवान कृष्ण का रंग सांवला था और राधा गोरी थी. यह बात भगवान रोज अपनी माँ यशोदा से पूछते कि राधा गोरी क्यों हैं. एक दिन माँ यशोदा ने कृष्ण से कहा कि तुम जिस रूप में राधा को देखना चाहते हो वो रंग राधा पर लगा दो. तो भगवान कृष्ण काला रंग राधा के मुंह पर लगाने के लिए चल दिए और राधा के मुंह को रंग दिया. कृष्ण का नटखट स्वाभाव था कि कृष्ण ने अन्य गोपियों को भी रंग लगाया फिर यह कृष्ण की लीला सब को मन भाई और तब से एक-दूसरे को रंग लगाने का प्रचलन शुरू हो गया.

इसी के साथ एक कथा यह भी प्रचलित है कि होलिका की शादी राजकुमार ईलोजी से होने वाली थी, परन्तु जब ईलोजी बारात लेकर आये तब तक होलिका जलकर राख हो चुकी थी. चूँकि ईलोजी होलिका को बहुत प्रेम करते थे, इसलिए विरह में व्याकुल हो कर ईलोजी ने होलिका की राख को अपने ऊपर लगा लिया. कालांतर में इन्हीं ईलोजी को देवता के रूप में मान्यता मिली. आज भी राजस्थान की लोककथाओं में ईलोजी का महत्वपूर्ण स्थान है. जोधपुर, बीकानेर सहित पूरे पश्चिमी राजस्थान में होली के अवसर पर ईलोजी की पूजा होती है. ईलोजी द्वारा राख लगाने की यह परंपरा कालान्तर में रंगों व गुलाल में परिवर्तित हो गयी.

होली का वर्तमान समय में जैविक महत्व...

होली का त्योहार अपने आप में स्वप्रमाणित जैविक महत्व रखता है. यह पर्व आनंद और मस्ती का प्रतीक है. यह हमारे शरीर और मन पर बहुत लाभकारी और सकारात्मक प्रभाव डालता है. होली उत्सव का समय वैज्ञानिक रूप से सही होने का अनुमान है. यह गर्मी के मौसम की शुरुआत और सर्दियों के मौसम के अंत में मनाया जाने वाला उत्सव है. प्रतीकात्मक रूप में आलस और थकान से भरे शीत ऋतु की समाप्ति और ग्रीष्म ऋतु के आगमन का यह उत्सव है जिसे वसंतोत्सव भी कहते हैं, इस समय होली शरीर की शिथिलता को प्रतिक्रिया करने के लिए बहुत सी गतिविधियां और खुशी लाती है. यह रंग खेलने, स्वादिष्ट व्यंजन खाने और परिवार के बड़ों से आशीर्वाद लेने से शरीर को बेहतर महसूस कराती है.

होली के त्योहार पर होलिका दहन की परंपरा है. वैज्ञानिक रूप से यह वातावरण को सुरक्षित और स्वच्छ बनाती है, क्योंकि सर्दियों का मौसम बैक्टीरिया और सूक्ष्म जीवाणुओं के विकास के लिए आवश्यक वातावरण प्रदान करता है अत: होलिका दहन से आसपास के वातवारण में शुद्धि आती है. पूरे देश में समाज के विभिन्न स्थानों पर होलिका दहन की प्रक्रिया से वातावरण का तापमान बढ़ जाता है, जो बैक्टीरिया और अन्य हानिकारक कीटों को मारता है.

उसी समय लोग होलिका के चारो ओर एक घेरा बनाते हैं, जो परिक्रमा के रूप में जाना जाता है, जो उनके शरीर के बैक्टीरिया को मारने में मदद करता है. पूरी तरह से होलिका के जल जाने के बाद लोग चन्दन और नए आम के पत्तों को उसकी राख के साथ मिश्रण को अपने माथे पर लगाते हैं, जो उनके स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद करता है.

इस पर्व पर रंगों से खेलने के भी लाभ और महत्व हैं. रंग और गुलाल उत्साह और दीप्ति का प्रतीक होते हैं. रंग शरीर और मन को सकारात्मक ऊर्जा और चंचलता प्रदान करता है. घर के वातावरण में कुछ सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह करने में मदद करता है.

इस प्रकार देखा जाए तो होली भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पुरातन त्योहार है, जिसमें जीवन के सब रंग भरे हैं. त्योहारों का देश भारत होली के अवसर पर अपने जीवन की ऊर्जा का सकारात्मक प्रदर्शन करता है और यह बात हर वर्ष साबित करता है कि उमंग और उत्साह से जीवन के हर पल को रंगीन किया जा सकता है. इसके साथ ही साथ यह पुराने बैर को भूलकर संबंध सुधारने एवं संबंधों में मधुरता लाने का त्योहार है. भारतीय संस्कृति में अनेकता में एकता की अवधारणा को प्रमाणित करने में यहाँ के त्योहारों का विशिष्ट योगदान है. होली का त्योहार निश्चित रूप से इसमें अग्रणी भूमिका निभाता है.

दीपाली श्रीवास्तव
सेवासी शाखा, बड़ौदा

होली एक अमूल्य धरोहर

खुशी, उल्लास, प्रेम, मिलन, भाईचारे, समन्वय और सद्भावना, बुराई पर अच्छाई की जीत, राजा रंक, कृष्ण, ब्रज, अवध, देवर - भाभी की मीठी छेड़खानियों, बड़े और छोटों के आदर, वसंतोत्सव के आगमन, नई फसल के स्वाद, हिन्दुस्तानी तहजीब, परंपरा, सनातनी एहसास के रंगों का नाम है होली.

मानव जीवन विविधताओं से भरा हुआ है. इस जीवन में भाषा के अपने नियम हैं, जटिलताएँ हैं, कर्तव्य हैं, दायित्व हैं, संवेदनाएँ हैं, रिश्तों के बन्धन हैं, रातों के आँगन हैं. इस यात्रा में मनुष्य एक पथिक की तरह जूझता, थकता, हारता, जीतता, लड़ता, चलता रहता है. यह यात्रा अनंत काल से चलती आ रही है और आगे भी अनंत काल तक चलती रहेगी. त्योहार जीवन की इस यात्रा में खूबसूरत और सोंधी-सोंधी खुशबू लेकर आते हैं. हमारा देश त्योहारों का देश है. विभिन्नताओं के समूह का एक ऐसा देश है, जो अत्यंत दुर्लभ है. यहाँ त्योहार भी अनेक हैं. कुछ त्योहार ऋतुओं और मौसम के अनुसार मनाए जाते हैं तो कुछ सांस्कृतिक, सामाजिक या धार्मिक विशेष से संबंधित होकर संपन्न होते हैं. ये त्योहार हमारे मानवीय मूल्यों, परंपराओं और उसकी वैज्ञानिकता से परिचित कराते हैं. जहां एक ओर हमारे जीवन में हर्ष और उल्लास की छटा बिखेरते हैं तो दूसरी ओर प्रेम और मानवता का सबक भी सिखाते हैं. अमीर-गरीब, ऊंच-नीच, जाति मतभेद, धर्म संप्रदाय, राग, द्वेष, आडंबर, महिमामंडन, श्रेष्ठता की भावना से जकड़े और अकड़े हुए मानव समुदाय को यह पवित्र त्योहार अपने संस्कार और महत्ता से छिन्न-भिन्न कर देते हैं. मनुष्य भले ही आज विज्ञान की बड़ी-बड़ी बातें कर लें, मंगल ग्रह पर अपने पैर जमा लें परमाणु सुविधाओं से लैस हो जाएं, बड़ी-बड़ी इमारतें और मशीन बना लें, पूरी सृष्टि पर अपना प्रभाव बनाने का दावा कर लें, परंतु मानव जीवन का उद्देश्य तो इन्हीं त्योहारों में निहित है जिसका सार है- 'वसुधैव कुटुंबकम'.

हमारे देश में मानवीय मूल्यों, संस्कारों, आदर्शों को स्थित करने वाले त्योहारों की लंबी कतार है. शायद ही कोई पखवाड़ा ऐसा रहता है, जिसमें कोई त्योहार न हो. इनमें से कुछ त्योहार राष्ट्रीय हैं तो कुछ क्षेत्रीय. हमारे देश के प्रमुख त्योहारों में दीपावली, दशहरा, होली, पोंगल, ईद, बकरीद, ओणम, पोंगल, रक्षाबंधन, छठ, क्रिसमस, महावीर जयंती, बुद्ध पूर्णिमा, गुरुनानक जयंती, रविदास जयंती, 15 अगस्त, 26 जनवरी आदि हैं.

रंग और गुलाल का त्योहार होली हमारे जीवन को रंग और रस से सराबोर कर देता है. जीवन में अगर रंग और रस ही न हो तो जीवन रंगहीन और बेस्वाद सा प्रतीत होता है. होली पर्व में तरह-तरह के रंग और गुलाल आपस में समाहित होकर इन्द्रधनुषी छटा बिखेरते हैं. इन सभी रंगों का अपना महत्व है. परंतु यहाँ जीवन के जिस रंग की बात मैं कर रहा हूँ, दरअसल वह रस है. वैसे तो भारतीय शास्त्रों में नवरस की संकल्पना की गई है, परंतु होली में हास्य और श्रृंगार रस की प्रधानता सर्वोपरि है. इन दो रसों के बिना होली की कल्पना ही नहीं की जा सकती है. जहां एक ओर हास्य शब्द का स्मरण होते ही अनायास सहज मुस्कान हमारे होठों पर खिल जाती है वहीं दूसरी ओर श्रृंगार शब्द का ख्याल आते ही हमारे हृदय की अवल गहराइयों में श्रृंगारिक प्रेम का स्फुटन चेहरे पर व्यक्त होने लगता है. वेशभूषा, वाणी, चेष्टा, अलंकार, ढिठाई, चंचलता, व्यर्थ वार्तालाप अव्यवों के दर्शन दोनों को देखने से हृदय में विनोद का जो भाव जागृत होता है, उसे हास्य कहा जाता है. यही हास्य, विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव से पुष्ट होकर हास्य रस में परिणत हो जाता है. यह दो प्रकार का होता है- आत्मस्थ एवं परस्थ जब मनुष्य स्वयं हंसे तो आत्मस्थ तथा जब वह दूसरों को हसाएँ तो परस्थ होता है.

जीवन में हँसना बहुत महत्वपूर्ण है. हँसता-मुस्कुराता चेहरा ज्यादा सहज, सहनशील, आकर्षक एवं लोकप्रिय होता है. हँसी-मज़ाक तनावपूर्ण माहौल को हर्ष उल्लास एवं आशा से भर देता है. हंसने से हमारा आलस्य दूर भागता है तथा हम नई ऊर्जा का अनुभव करते हैं. जीवन और कर्तव्य के बीच संतुलन स्थापित करने में सफल होते हैं. आज के इस आधुनिक तनावपूर्ण माहौल में जहां विज्ञान, तकनीक, काम की अधिकता एवं प्रतिस्पर्धा का बोलबाला है, वहाँ हास्य रस की प्रासंगिकता मुखर हो उठती है. प्रसिद्ध विज्ञान मैल्कम मगरीज़ ने कहा है- "संसार को आज हँसी की सबसे अधिक आवश्यकता है, किन्तु दुख की बात है कि दुनिया में उसका अभाव होता जा रहा है" आज लोगों को हँसाने के लिए टेलीविज़न पर तरह-तरह के हास्य कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं. हास्य कवियों की एक लंबी कतार है, हास्य थेरेपी का भी सहारा भी लिया जा रहा है. इसमें कोई शक नहीं है कि ये माध्यम लोगों को आनंदित कर रहे हैं, परंतु यह हंसी सामूहिक न होकर बिलकुल ही व्यक्तिगत होती जा रही हैं. सम्पूर्ण विश्व में आपसी भाईचारा फैलाने हेतु जरूरत है सामाजिक तथा सामूहिक हँसी की. घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा, अतिमहत्वाकांक्षा ने हम सभी के जीवन और जीवन पद्धति को नीरस बना दिया है. हमारे चारो ओर फैली नीरसता ने हमारे जीवन को निष्क्रिय बना दिया है. हास्य रस हमारे मानसिक थकान को दूर करता है और हमारे अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है. होली का त्योहार एक ऐसा माध्यम है जहां हमें खुलकर, हँसी-मज़ाक, मनोविनोद करने का अवसर मिलता है. उस दिन बड़े और छोटे का भेद मिट जाता है तथा कोई भी व्यक्ति उस दिन किए गए मज़ाक को व्यक्तिगत और अन्यथा न लेते हुए केवल एक ही राग अलापते हैं -'बुरा न मानो होली है'. निसंदेह मानव जीवन में हास्य का बड़ा महत्व है, परंतु हास्य मर्यादित होना चाहिए ताकि हमारे आपसी रिश्ते में वैमनस्य पैदा करे जो बाद के समय में मिटाने से भी नहीं मिटता है. हिन्दी के हास्य कवि सुरेन्द्र वर्मा की कविता है

'एक दिन मेरी घरवाली बोली,
ए जी पड़ोसी की चौथी घरवाली मर गई
तुम शमशान घाट जाओगे मैंने कहा मैं नहीं जाऊंगा
मैं उसके घर तीन बार हो आया वो एक बार भी नहीं आया'

श्रृंगार रस होली के त्योहार का अलंकार है. श्रृंगार को रसों का राजा कहा गया है. इसमें रति भाव है, होली वसंत ऋतु में मनाया जाता है तथा

बसंत ऋतु को प्रेम की ही ऋतु कहा जाता है, इस संबंध में किसी ने क्या खूब कहा है -

यह पीली चुनर, यह चादर, यह सुंदर छवि, यह रस गागर
जनम-मरण की यह राजकांवर, सब भू की सौगात है
गगन की बात न करना, आज वसंत की रात है

होली नर-नारी के मिलन का मनोरथी उत्सव है. यह राग का त्योहार है, प्रेम एवं प्रणय का पर्व है. होली के रंगों में जो सबसे मधुर रंग है, वह है प्रणय. भगवान श्रीकृष्ण प्रणय के प्रणेता हैं, प्रेम की होली में रसिया गायन की परंपरा समृद्ध है. रसिक स्वभाव वाले व्यक्ति को, प्रेमी को, मस्तमोला स्वभाव वाले व्यक्ति को रसिया कहा जाता है. होली का प्रसिद्ध रसिया सर्वत्र विख्यात है:-

'आज बिरज में होरी रे रसिया होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया'

इस प्रकार होली रंगों के त्योहार के साथ-साथ प्रणय के महोत्सव के महात्माय का भी मेला है. होलिका दहन में वासनात्मक आकर्षण को जलाकर सच्चे प्रेम का विजयोत्सव मनाया जाता है.

प्रेम, माधुर्य, सौहार्द, उल्लास, हास्य, मनोविनोद, श्रृंगार एकता और भाईचारे के रंगों से इन्द्रधनुषी त्योहार होली भारतीय परंपरा और संस्कृति की अमूल्य धरोहर है.

निशांत कुमार
सरल शाखा, प्रयागराज

भारत में होली

रंगों का त्योहार होली, हिन्दुओं के चार बड़े पर्वों में से एक है. यह पर्व फाल्गुनी पूर्णिमा को होलिका दहन के पश्चात् चैत्र कृष्ण प्रतिपदा में धूमधाम से मनाया जाता है. वसन्त ऋतु वैसे भी ऋतुराज के नाम से जानी जाती है. इसी प्रकार फाल्गुन का महीना भी अपने मादक सौन्दर्य तथा वासन्ती पवन से लोगों को हर्षित करता है.

होली एक ऐसा रंग बिरंगा त्योहार है, जिसे हर धर्म के लोग पूरे उत्साह और मस्ती के साथ मनाते हैं. प्यार भरे रंगों से सजा यह पर्व हर धर्म, संप्रदाय, जाति के बंधन खोलकर भाई-चारे का संदेश देता है. इस दिन सारे लोग अपने पुराने गिले-शिकवे भूलकर गले लगते हैं और एक दूजे को गुलाल लगाते हैं. होली के साथ अनेक कथाएं जुड़ीं हैं. होली मनाने के एक रात पहले होली को जलाया जाता है. इसके पीछे एक लोकप्रिय पौराणिक कथा है.

भक्त प्रह्लाद के पिता हिरण्यकश्यप स्वयं को भगवान मानते थे. वह विष्णु के विरोधी थे जबकि प्रह्लाद विष्णु भक्त थे. उन्होंने प्रह्लाद को विष्णु भक्ति करने से रोका, जब वह नहीं माने तो उन्होंने प्रह्लाद को मारने का प्रयास किया.

प्रह्लाद के पिता ने अखिर अपनी बहन होलिका से मदद मांगी. होलिका को आग में न जलने का वरदान प्राप्त था. होलिका अपने भाई की सहायता करने के लिए तैयार हो गई. होलिका प्रह्लाद को लेकर चिता में जा बैठी परन्तु विष्णु की कृपा से प्रह्लाद सुरक्षित रहे और होलिका जल कर भस्म हो गई.

यह कथा इस बात का संकेत करती है की बुराई पर अच्छाई की जीत अवश्य होती है. आज भी पूर्णिमा को होली जलाते हैं, और अगले दिन सब लोग एक दूसरे पर गुलाल, अबीर और तरह-तरह के रंग डालते हैं. यह त्योहार रंगों का त्योहार है.

इस दिन लोग प्रात:काल उठकर रंगों को लेकर अपने नाते-रिश्तेदारों व मित्रों के घर जाते हैं और उनके साथ जमकर होली खेलते हैं. बच्चों के लिए तो यह त्योहार विशेष महत्व रखता है. वह एक दिन पहले से ही बाजार से अपने लिए तरह-तरह की पिचकारियां व गुब्बारे लाते हैं. बच्चे गुब्बारों व पिचकारी से अपने मित्रों के साथ होली का आनंद उठाते हैं.

सभी लोग बैर-भाव भूलकर एक-दूसरे के गले मिलते हैं. घरों में औरतें एक दिन पहले से ही मिठाई, गुझिया आदि बनाती हैं व अपने पास-पड़ोस में आपस में बांटती हैं. कई लोग होली की टोली बनाकर निकलते हैं उन्हें हुरियारे कहते हैं.

ब्रज की होली, मथुरा की होली, वृंदावन की होली, बरसाने की होली, काशी की होली पूरे भारत में मशहूर है. ऐसा कहते है कि आजकल अच्छी क्वॉलिटी के रंगों का प्रयोग नहीं होता और त्वचा को नुकसान पहुंचाने वाले रंग खेले जाते हैं, यह सरासर गलत है. इस मनभावन त्योहार पर रासायनिक लेप व नशे आदि से दूर रहना चाहिए. बच्चों को भी सावधानी रखनी चाहिए. बच्चों को बड़ों की निगरानी में ही होली खेलना चाहिए. दूर से गुब्बारे फेंकने से आंखों में घाव भी हो सकता है. रंगों को भी आंखों और अन्य अंदरूनी अंगों में जाने से रोकना चाहिए. यह मस्ती भरा पर्व मिलजुल कर मनाना चाहिए.

राघवेंद्र सिंह
रेलवे कॉलोनी शाखा,
भुसावल; नासिक

विभिन्न प्रदेशों में होली

सम्पूर्ण विश्व में भारत विविधताओं के लिए जाना जाता है और यह केवल भौगोलिक या पर्यावरणीय विविधता नहीं, अपितु इससे भी कई ज्यादा महत्वपूर्ण और दिलचस्प सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता है, जो कि ऐतिहासिक एवं अन्य कई कारणों से भारत को अविस्मरणीय देश की श्रेणी में लाकर खड़ा करते हैं. इनमें शामिल हैं अलग - अलग संस्कृति, सभ्यता, धर्म, पहनावे, बोल-चाल, खानपान और सबसे महत्वपूर्ण त्योहार, जो कि न केवल धार्मिक या जातिगत आधार पर भिन्न हैं, बल्कि वह अपने में ही अलग-अलग भौगोलिक पृष्ठभूमि में विभिन्न रूपों में मनाए जाते हैं और इन्हीं रंग-बिरंगे त्योहारों में से एक ऐसा त्योहार है, जो केवल एक धार्मिक समुदाय तक सीमित न रहकर विभिन्न समुदायों द्वारा मनाया जाता है और यह है रंगों का शानदार उत्सव होली जो बुराई पर अच्छाई की जीत के उत्सव के रूप में बेहद हर्षोल्लास और धूमधाम से मनाया जाता है. होली का त्योहार भारत के अलग-अलग राज्यों में अपने-अपने तरीके और मान्यताओं के मुताबिक मनाते हैं.

होली साल का वह दिन होता है जहाँ चारो तरफ सिर्फ रंग ही दिखाई पड़ते हैं. हर गली चौराहों पर सुप्रसिद्ध गानों जैसे 'ओ रंग बरसे भीगे चुनर वाली रंग बरसे' एवं 'होली खेले रघुवीरा अवध में' आदि की ध्वनियों की गूंज सुनाई पड़ती है. बड़े ही आनंद एवं अपेक्षाओं के साथ लोग फाल्गुन की पूर्णिमा को होली का स्वागत करते हैं. इस अनगिनत संस्कृति एवं परंपराओं वाले देश में! अच्छाई की बुराई पर जीत, प्रचुरता एवं परिपूर्णता के मौसम के आगमन के सत्य होली का त्योहार अद्वितीय एवं अनुकरणीय तौर-तरीकों से विभिन्न प्रदेशों में मनाया जाता है और सच में यह जानकर आश्चर्य ही होता है कि होली को भी कैसे - कैसे अनोखे तरीकों से मनाया जाता है.

महाराष्ट्र में होली को रंग पंचमी के नाम से जानते हैं. उत्सव की शुरूआत पूर्णिमा की रात से ही हो जाती है जब लकड़ी की चिता में होलिका दहन किया जाता है, जो बुराई पर अच्छाई का प्रतीक माना जाता है. उसके अगले दिन रंग पंचमी होती है, जिसमें धूम धड़ाका देखने को मिलता है, जहाँ मस्ती में चूर लोग एक - दूसरे पर रंग अबीर गुलाल लगाते हैं और विभिन्न एवं विशिष्ट तरह के भोज्य पदार्थ जैसे पूरन पोली इत्यादि बनाई जाती है. इस त्योहार को पूरे धूमधाम के साथ नाच-गाकर और भगवान को चढ़ाने हेतु विभिन्न स्वादिष्ट व्यंजनों को पकाकर मनाया जाता है.

वहीं **उत्तर प्रदेश** में हमें एक अलग सा विचित्र तरीका दिखाई पड़ता है. मथुरा एवं वृंदावन के क्षेत्रों में महिलाएँ पुरूषों के पीछे लाठी लेकर भागती हैं और खेल-खेल में पुरूषों को मारती हैं. पुरूष भी इससे बचने के लिए तैयार रहते हैं और इसीलिए यह लट्ठमार होली के नाम से जानी जाती है. यह होली त्योहार से एक सप्ताह पूर्व मनाई जाती है. हजारों लोग यह मनोरम दृश्य देखने इकट्ठे होते हैं, जहाँ पुरूष एवं महिलाएँ प्रसिद्ध होली के गीत गाते हैं और राधा कृष्ण के जयकारे लगाते हैं. वहीं कानपुर में होली सात दिनों तक चलती है और आखिरी दिन एक भव्य मेला लगता है. गोरखपुर में होली एक विशिष्ट पूजा से शुरू होती है और सारे दिन लोगों में भाईचारे को मनाया जाता है, जिसे होली मिलन कहते हैं, जिसमें लोग एक-दूसरे के घरों को जाते हैं और रंग लगाते हैं और होली के गीतों को गाते हैं.

पंजाब मनाता है 'होला मोहल्ला' जो सुनकर और देखकर तो ऐसा लगता है जैसे कि योद्धाओं की होली. यह होली से एक दिन पहले मनाई जाती है. इस उत्सव में सिख योद्धाओं, विशेष रूप से, निहंग सिखों की वीरता को श्रद्धांजलि समर्पित करने हेतु विभिन्न तरह के युद्ध विधाओं को प्रदर्शित किया जाता है. इसके साथ ही घुड़सवारी, कविता पाठ इत्यादि का भी प्रदर्शन होता है. फिर इसके पश्चात् नाच -

गाना और रंगों का नंबर आता है.

गोवा में त्योहार को शिग्मों कहा जाता है जो कि एक भव्य मेले के रूप में लोक गीतों एवं नृत्यों के साथ मनाया जाता है. चूँकि गोवा मुख्यत: एक समुद्रिय राज्य है, जहाँ मछुआरे प्रचुर मात्रा में रहते हैं, इसलिए मछुआरों की नावों को पौराणिक एवं धार्मिक प्रसंगों से सजाया जाता है. धकतो शिग्मों को ग्रामीण जनसंख्या मनाती है और वहीं दढ़तो शिग्मो को अन्य सभी.

उत्तराखण्ड में मनाई जाने वाली कुमाऊनी होली कई महीनों तक मनाई जाती है. यह प्राय: संगीत का त्योहार ज्यादा होता है बजाए अन्य राज्यों जैसे रंगों का और किसान वर्ग में यह बुवाई के मौसम के रूप में महत्व रखता है. लोग होलिका दहन करते हैं, जिसे छीर भी कहा जाता है. यहाँ तीन तरीकों से होली मनाई जाती है- बैठकी होली जिसमें लोग परंपरागत वाद्य यंत्रों द्वारा गीत गाते हैं, जिनकी राग आध्यात्मिक एवं मजेदार होने के कारण दिल को छू लेती है. दूसरी होती है खड़ी होली, जिसमें पुरूष परंपरागत वेशभूषा पहनकर नाचते और गाते हैं और महिलाओं के लिए बैठकी होली के ही समान होती है - महिला होली.

दक्षिण में होली उतनी प्रसिद्ध नहीं है, जितनी अन्य उत्तरी राज्यों में है, लेकिन केरल में इस समय एक अलग ही तरह का उत्सव मनाया जाता है, जिसमें लोग पारंपरिक लोकगीत गाते हैं और हल्दी मिले पानी से खेलते हैं- मंजलकुली. यह उत्सव कुछ मंदिरों में ही देखने को मिलता है जहाँ कोणकनी एवं कुदुम्बी समुदायों को पहले दिन मंदिर जाते देखा जाता है और दूसरे दिन उत्सव में मलंग.

इसी तरह **राजस्थान** में राजशाही उदयपुर की होली भी प्रसिद्ध है, जहाँ एक बड़े स्तर पर ऐतिहासिक मेवाड़ राज्य में मनाई जाने वाली होली को आज भी वैसे ही मनाया जाता है. होली के दिन राज्य में वर्तमान संरक्षक द्वारा होलिका दहन किया जाता है और इसके बाद राजशाही सजे-धजे घोड़े की अतिरंजित परेड शाही बैण्ड के साथ निकाली जाती है और यह दृश्य सचमुच ही भव्य एवं मनोरम होता है.

पश्चिम बंगाल में होली वसंतोत्सव एवं डोल यात्रा के नाम से मनाई जाती है. बोलपुर में शांतिनिकेतन इस वसंतोत्सव को देखने का केन्द्र बिन्दु है, जहाँ हम बंगाली संस्कृति को देखते हैं. रंगों के अलावा इस उत्सव में टैगोर की कविताओं एवं गीतों का पाठ किया जाता है एवं नृत्य होते हैं. डोल यात्रा में कृष्ण भगवान की रथयात्रा निकाली जाती है, जिसमें रंग अबीर के साथ मस्ती और नाच-गाना भी होता है. इसी तरह उड़ीसा में इसे डोला कहते हैं जो डोलगोविंद अर्थात् भगवान जगन्नाथ पर केन्द्रित होती है. मणिपुर में होली का उत्सव एक सप्ताह का होता है जिसे याओआंग कहते हैं. इसमें घास-फूस से बने झोपड़ों को जलाते हैं, लोकगीत एवं लोकनृत्य करते हैं. कृष्ण भगवान की पूजा करते हैं, एक-दूसरे पर रंग लगाते हैं और शहर में जुलूस निकालते हैं.

इस तरह हम देख सकते हैं कि होली का पर्व प्रेम, भाईचारा और सौहार्द का पर्व है. भले ही विभिन्न तरीकों से इसे मनाते हैं, लेकिन इसकी धुरी हर जगह एक ही है- बुराई पर अच्छाई की जीत और खुशहाली और भाईचारे का आगमन और यही भारत में अनेकता में एकता एवं विविधता को और मजबूत करता है.

अंकेश पुरवार
कटनी मुख्य शाखा, जबलपुर

रंगों का त्योहार

होली को रंगों के त्योहार के रूप में जाना जाता है. यह भारत में सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है. प्रत्येक वर्ष मार्च के महीने में हिंदू धर्म के अनुयायियों द्वारा उत्साह के साथ होली मनाई जाती है. जो लोग इस त्योहार को मनाते हैं, वे हर साल रंगों के साथ खेलने और मनोरम व्यंजनों का बेसब्री से इंतजार करते हैं.

होली दोस्तों और परिवार के साथ खुशियाँ मनाने के बारे में है. लोग अपनी परेशानियों को भूल जाते हैं और इस त्योहार का आनंद लेते हैं. दूसरे शब्दों में, हम अपनी दुश्मनी भूलकर त्योहार की भावना से जुड जाते हैं. होली को रंगों का त्योहार कहा जाता है, क्योंकि लोग रंगों के साथ खेलते हैं और त्योहार के सार में रंग पाने के लिए उन्हें एक-दूसरे के चेहरे पर लगाते हैं.

होली एक ऐसा रंगबिरंगा त्योहार है, जिसे हर धर्म के लोग पूरे उत्साह और मस्ती के साथ मनाते हैं. प्यार भरे रंगों से सजा यह पर्व हर धर्म, संप्रदाय, जाति के बंधन खोलकर भाई-चारे का संदेश देता है. इस दिन सारे लोग अपने पुराने गिले-शिकवे भूलकर गले लगते हैं और एक दूजे को गुलाल लगाते हैं. बच्चे और युवा रंगों से खेलते हैं. फाल्गुन मास की पूर्णिमा को यह त्योहार मनाया जाता है. होली के साथ अनेक कथाएं जुड़ी हैं. होली मनाने के एक रात पहले होली को जलाया जाता है. इसके पीछे एक लोकप्रिय पौराणिक कथा है.

भक्त प्रह्लाद के पिता हिरण्यकश्यप स्वयं को भगवान मानते थे. वह विष्णु के विरोधी थे, जबकि प्रह्लाद विष्णु भक्त थे. उन्होंने प्रह्लाद को विष्णु भक्ति करने से रोका जब वह नहीं माने तो उन्होंने प्रह्लाद को मारने का प्रयास किया.

प्रह्लाद के पिता ने आखिर अपनी बहन होलिका से मदद मांगी. होलिका को आग में न जलने का वरदान प्राप्त था. होलिका अपने भाई की सहायता करने के लिए तैयार हो गई. होलिका प्रह्लाद को लेकर चिता में जा बैठी परन्तु विष्णु की कृपा से प्रह्लाद सुरक्षित रहे और होलिका जल कर भस्म हो गई.

यह कथा इस बात का संकेत करती है कि बुराई पर अच्छाई की जीत अवश्य होती है. आज भी पूर्णिमा के दिन होली जलाते हैं और अगले दिन सब लोग एक दूसरे पर गुलाल, अबीर और तरह-तरह के रंग डालते हैं.

अपना घर चलाने के लिए जो पेशेवर घरों से दूर रहते हैं, वह भी होली के समय पर अपने परिवार के पास लौट आते हैं. यह त्योहार हमें हमारे संस्कृति से जोड़ने का कार्य करता है, अतः इस दृष्टि से यह हमारे लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण है.

होली का इतिहास व मनाए जाने का कारण

पुराणों के अनुसार, विष्णुभक्त प्रह्लाद से क्रोधित होकर प्रह्लाद के पिता हिरण्यकश्यप ने, पुत्र प्रह्लाद को ब्रह्मा द्वारा वरदान में प्राप्त वस्त्र धारण किए बहन होलिका के गोद में आग से जला देने की मनसा से बैठा दिया. किन्तु प्रभु की महिमा से वह वस्त्र प्रह्लाद को ढक लेता है और होलिका जलकर भस्म हो जाती है. इस खुशी में नगरवासियों द्वारा दूसरे दिन होली मनाया गया. तब से होलिका दहन और होली मनाया जाने लगा.

होली का महत्व

होली के पर्व से जुड़े होलिका दहन के दिन, परिवार के सभी सदस्य को उबटन (हल्दी, सरसों व दही का लेप) लगाया जाता है. ऐसी मान्यता है कि उस दिन उबटन लगाने से व्यक्ति के सभी रोग दूर हो जाते हैं व गांव के सभी घरों से एक-एक लकड़ी होलिका में जलाने

के लिए दी जाती है. आग में लकड़ी जलने के साथ लोगों के सभी विकार भी जलकर नष्ट हो जाते हैं. होली के कोलाहल (शोर) में, शत्रु के भी गले से लग जाने पर सभी अपना बड़ा दिल कर के आपसी रंजिश भूल जाते हैं.

भारत के विभिन्न राज्यों की होली

- **ब्रजभूमि की लट्ठमार होली**

  'सब जग होरी या ब्रज होरा' अर्थात सारे जग से अनूठी ब्रज की होली है. ब्रज के गांव बरसाना में होली प्रेम का प्रतीक मानी जाती है. इस होली में नंदगांव के पुरुष और बरसाना की महिलाएं भाग लेती हैं क्योंकि श्रीकृष्ण नंदगांव से थे और राधा बरसाना से. जहां पुरुषों का ध्यान भरी पिचकारी से महिलाओं को भिगोने में रहता है वहीं महिलाएं खुद का बचाव और उनके रंगों का उत्तर उन्हें लाठियों से मार कर देती है. सच में यह अद्भुत दृश्य होता है.

- **मथुरा और वृंदावन की होली**

  मथुरा और वृंदावन में होली की अलग छटा नज़र आती है. यहां होली की धूम 16 दिन तक छाई रहती है. लोग 'फाग खेलन आए नंद किशोर' और 'उड़त गुलाल लाल भए बदरा' आदि अन्य लोक गीत का गायन कर इस पावन पर्व में डूब जाते हैं.

- **महाराष्ट्र और गुजरात की मटकी फोड़ होली**

  महाराष्ट्र और गुजरात में होली पर श्री कृष्ण की बाललीला का स्मरण करते हुए होली का पर्व मनाया जाता है. महिलाएं मक्खन से भरी मटकी को ऊँचाई पर टांगती हैं, इन्हें पुरुष फोड़ने का प्रयास करते हैं और नाच गाने के साथ होली खेलते हैं.

- **पंजाब का 'होला मोहल्ला'**

  पंजाब में होली का यह पर्व पुरुषों के शक्ति के रूप में देखा जाता है. होली के दूसरे दिन से सिक्खों के पवित्र धर्म स्थान 'आनंदपुर साहेब' में छः दिवसीय मेला लगता है. इस मेले में पुरुष भाग लेते हैं तथा घुडसवारी, तीरंदाजी जैसे करतब दिखाते हैं.

- **बंगाल की 'दोल पूर्णिमा' होली**

  बंगाल और उड़ीसा में दोल पूर्णिमा के नाम से होली प्रचलित है. इस दिन पर राधा कृष्ण की प्रतिमा को दोल में बैठाकर पूरे गांव में भजन कीर्तन करते हुए यात्रा निकाली जाती है और रंगों से होली खेली जाती है.

- **मणिपुर की होली**

  होली पर मणिपुर में 'थबलचैंगबा' नृत्य का आयोजन किया जाता है. यहां यह पर्व पूरे छः दिवस तक नाच-गाने व अनेक तरह के प्रतियोगिता के साथ चलता रहता है.

फाल्गुन की पूर्णिमा से उड़ते गुलाल व ढोलक की ताल से शुरू हुई होली भारत के कोने- कोने में विभिन्न प्रकार से हर्षोल्लास के साथ मनाई जाती है. इस पर्व के आनंद में सभी आपसी मन - मुटाव को भूलकर एक - दूसरे के गले लग जाते हैं.

अमित सिंह चौहान
मांजलपुर शाखा, बड़ौदा

बंगाल की होली

भारत में 12 महीनों में अनगिनत त्योहार मनाए जाते हैं. हमारी भारतीय संस्कृति में ऐसे कई त्योहार हैं जो यहाँ की विविधताओं को अपने आप में समेटे हुए हैं. इनमें से एक है - 'होली का त्योहार' जो पूरे भारत में बड़े ही धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया जाता है.

बंगाल को भारत की सांस्कृतिक राजधानी कहा जाता है. अब जब सांस्कृतिक राजधानी है तो होली की धूम यहाँ भी देखने लायक होगी. बंगाल में होली के पर्व को 'दोल' के अलावा वसंतोत्सव और दोल पूर्णिमा भी कहते हैं चूंकि यह त्योहार फाल्गुन माह में मनाया जाता है इसलिए इसे फगुआ भी कहा जाता है. पश्चिम बंगाल में यह त्योहार फाल्गुन पूर्णिमा के दिन ही मनाया जाता है. ऐसी किंवदंती है कि देश में मनाई जाने वाली होली एवं होलिका दहन, प्रह्लाद और हिरण्यकश्यप की पौराणिक कहानियों से जुड़ी है, लेकिन बंगाल का यह दोल उत्सव राधा-कृष्ण के प्रेम उत्सव रीति के रूप में मनाया जाता है. कहते हैं कि फाल्गुन पूर्णिमा के दिन राधा जब अपनी सखियों के साथ झूला झूल रही थीं तभी भगवान कृष्ण ने उनके चेहरे पर गुलाल लगाकर पहली बार अपने प्रेम का इज़हार किया था और सभी गोप-गोपियों ने मिलकर एक रंगीन पालकी में बिठाकर राधा-कृष्ण को पूरे शहर में घुमाया था इसलिए यह त्योहार राधा-कृष्ण के प्रेम का प्रतीक भी है. इस दिन बंगाल में कई जगहों पर लोग राधा और कृष्ण की मूर्ति को पालकी में झूला झुलाते हुए जुलूस भी निकालते हैं. यह दृश्य मन को मुग्ध कर देने वाला होता है बंगाल में इस त्योहार को धार्मिक एवं मौलिक दोनों रूपों में भी मनाया जाता है. चूंकि बांग्ला कैलेंडर के अनुसार यह वर्ष का अंतिम त्योहार होता है, लेकिन इसके साथ ही वसंत ऋतु का स्वागत भी किया जाता है. इससे यह पता चलता है कि बंगाल में यह उत्सव केवल पौराणिक कथाओं पर आधारित नहीं है, बल्कि वसंत का स्वागत और रबी फसल काटने का आनंद जताने का भी उत्सव है. इस उत्सव पर महिलाएं लाल किनारी वाली पारंपरिक सफ़ेद साड़ी पहनकर शंख बजाते हुए राधा-कृष्ण की पूजा करती हैं. कई तरह के व्यंजन बनाए जाते हैं और साथ ही चैतन्य महाप्रभु द्वारा रचित भक्तिरस के गीतों का गाना-बजाना होता है. इन सबके बाद प्रभात फेरी के दौरान अबीर और रंगों से होली खेली जाती है.

जब बात पश्चिम बंगाल में मनाई जाने वाली होली की हो रही है तो बंगाल के कुछ विशेष स्थानों पर विशेष तरीके से मनाई जाने वाली होली के वर्णन को कैसे छोड़ा जा सकता है?

शांतिनिकेतन का वसंत उत्सव : शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले के अंतर्गत बोलपुर के पास एक छोटा-सा शहर है. शांतिनिकेतन नगर में ही रवीन्द्रनाथ टैगोर ने विश्व-भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की थी और शांतिनिकेतन में कविगुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर के आशीर्वाद के साथ-साथ शिक्षा-दीक्षा का अभिनव संस्कार भी समाहित है.

यह विश्वविद्यालय दोल के अवसर पर वसंतोत्सव के आयोजन की वजह से पूरी दुनिया में अपनी खास जगह बना चुका है. रवींद्रनाथ टैगोर की पुत्रवधु प्रतिमा देवी के अनुसार- "दोल पूर्णिमा उत्सव का मतलब है शांतिनिकेतन. बिना शांतिनिकेतन आए, दोल उत्सव का आनंद मिल ही नहीं सकता". रंगोत्सव का यह आयोजन लाखों लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है. इस नगर में वसंत उत्सव परंपरा की शुरूआत रवींद्रनाथ टैगोर के यहाँ आने के बाद से मानी जाती है. उस समय छात्र - छात्राएँ साल विथी अर्थात साल वृक्षों की छाँव में एक चटाई बिछाकर एक लय व सुर में गीत गाते थे और होली रंग से नहीं बल्कि फूलों से खेलते थे.

लेकिन आज यहाँ की होली विश्वभारती विश्वविद्यालय की छात्र- छात्राओं द्वारा मनाई जाती है. होली से एक दिन पहले दोल यात्रा निकाली जाती है. उस दिन सुबह-सुबह विश्वविद्यालय में रवींद्र संगीत बजता है और साथ ही सुबह से हजारों की संख्या में लोग होली मठ में एकत्रित होते हैं, जहां सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे-बाऊल गान, लोकगीत, लोकनृत्य के साथ-साथ रंगों की होली शुरू होती है. इसी में छात्र-छात्राएं एक सुमधुर गीत 'ओरे गृहबासी खोल द्वार खेल' नामक गाना गुनगुनाती हैं. होली वाले दिन लड़के एवं लड़कियाँ अपने पारंपरिक पीले परिधान धारण किए होते हैं और महिलाएं सिर पर लाल पलाश के फूल लगाए हल्दी रंग की साड़ियों में चेहरे पर गुलाल लगाए, अबीर खेलते हुए आम्रकुंज से निकलती हैं. कलाभवन, संगीत भवन, विश्वविद्यालय

के खेल मैदान की परिक्रमा करते हुए अन्य परिसरों में जाती हैं और एक ऐसी शृंखला बनती चली जाती है, जिसके आनंद में बाल, वृद्ध, वनिता सभी मगन हो जाते हैं. इस दिन कोई भी किसी को भी रंग लगा सकता है. यहाँ होली के दिन कोई भी ऊंच - नीच, अजनबी या छोटा - बड़ा नहीं होता. उसी दिन शाम के वक्त शांतिनिकेतन के गौर प्रांगण में रवींद्रनाथ टैगोर के किसी एक नाटक का मंचन भी होता है. इस कार्यक्रम के लिए एक माह पहले से ही तैयारी शुरू हो जाती है, क्योंकि यहाँ की होली विदेशी पर्यटकों के लिए भी प्रमुख आकर्षण का केंद्र होती है.

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता की होली :- पूरे देश में जिस दिन होली मनाई जाती है उसके एक दिन पहले कोलकाता में 'दोल उत्सव' होता है. अर्थात जिस दिन होलिका दहन की परंपरा होती है, बंगाल में उस दिन 'दोल उत्सव' मनाया जाता है. इसे बंगाल में 'नेड़ा – पोड़ा' कहते हैं. बांस, काठ और घास-फूस से यह परंपरा निभाई जाती है. कुछ जिलों में होलिका दहन की परंपरा को 'चांचल' भी कहते हैं. बंगाल के हर हिस्से में इस दिन रंग और गुलाल से लोग सराबोर दिखते हैं. कोलकाता की सबसे बड़ी ख़ासियत यह है कि यहां मिली-जुली आबादी वाले इलाकों में मुसलमान और ईसाई धर्म के लोग भी हिंदुओं के साथ होली खेलते हैं. इन दोनों समुदाय के लोग राधा-कृष्ण की पूजा भले ही न करते हों, लेकिन रंग और अबीर बहुत ही उत्साह से खेलते हैं. कोलकाता का यही चरित्र यहां की होली को सही मायने में सांप्रदायिक सद्भाव का उत्सव बनाता है. पश्चिम बंगाल के बाक़ी हिस्सों की तरह, कोलकाता में भी 'दोल उत्सव' के दिन नाना प्रकार के पकवान बनते हैं. इनमें पारंपरिक मिठाई संदेश और रसगुल्ला के अलावा नारियल से बनी चीज़ों की प्रधानता होती है. यह महज एक धार्मिक त्योहार ही नहीं, बल्कि प्रकृति का उत्सव भी है. यहाँ का 'दोल उत्सव' बांग्ला समाज की नसों में गहरा रचा - बसा है. कोलकाता के जोड़ासांको में स्थित रवीन्द्रभारती विश्वविद्यालय में भी शांतिनिकेतन की तर्ज पर ही वसंत उत्सव का आयोजन किया जाता है. इन दोनों स्थानों में इतना ही अंतर है कि यहां होली का आयोजन दो-तीन दिन पहले ही शुरू हो जाता है. यहां पहली बार वर्ष 1962 में दोल और वसंत उत्सव मनाने की परंपरा शुरू हुई थी जो अब तक वैसे ही चली आ रही है. इस दौरान नाटक और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं एवं पूरा परिसर कविगुरू के गीत से सराबोर होता है.

दक्षिणेश्वर और बेलूर मठ की होली :- बेलूर मठ, पश्चिम बंगाल में हुगली नदी के पश्चिमी तट पर बसा है. एक ओर दक्षिणेश्वर काली मंदिर है तो दूसरी ओर बेलूर मठ है. यह रामकृष्ण मिशन और रामकृष्ण मठ का मुख्यालय है. इस मठ के भवनों की वास्तु में हिन्दू, इसाई तथा इस्लामी तत्वों का सम्मिश्रण है जो धर्मों की एकता का प्रतीक है. हर साल बेलूर मठ में होली उत्सव को धूमधाम से मनाया जाता है. चूंकि बेलूर मठ रामकृष्ण मंदिर के नाम पर संकीर्तन है, अत: यहाँ के प्रत्येक सन्यासी जो बेलूर मठ में रहते हैं वे सब मिलकर धूमधाम से होली का त्योहार मनाते हैं. यहाँ की होली रंग-बिरंगे गुलाल व फूलों से खेली जाती है. होली खेलने के बाद महिलाएं, पुरुष और बच्चे एक साथ दक्षिणेश्वर काली मंदिर आते हैं और मां से हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं - जैसे होली सबके लिए खुशियाँ लेकर आती है, वैसे ही उनका आने वाला जीवन भी खुशियों से भरा रहे.

पुरूलिया की होली : - भारत में विशेष रूप से 10 जगहों पर मनाई जाने वाली होली में पश्चिम बंगाल के पुरुलिया में बहुत ही अलग तरीके से होली मनाई जाती है. यहाँ बंगाल, ओड़िशा और झारखंड के लोग रहते हैं, जिसके कारण यहाँ की संस्कृति मिली जुली है. यहाँ आयोजित किए जाने वाले हर संस्कृतिक कार्यक्रम से उस राज्य की कबायली अनुभूति आती है और यही पुरुलिया की सबसे बड़ी विशेषता है. यहाँ की होली देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं, क्योंकि यहाँ की होली केवल रंगों की नहीं होती है बल्कि यहाँ पुरुलिया के पारंपरिक नृत्य और संगीत का आयोजन किया जाता है. पश्चिम बंगाल की सभ्यता की झलक यहाँ के पारंपरिक नृत्य 'छऊ नृत्य' में देखने को मिलती है. 'छऊ नृत्य' पुरुलिया का प्रमुख मुखौटा नृत्य है. 'छऊ नृत्य' के मुखौटे तीन तरह के मानवीय चरित्र को दर्शाते हैं - सांसारिक, चिन्तन एवं हिन्दु पुराण. यहाँ 'छऊ नृत्य' के साथ-साथ अन्य लोक - कलाओं जैसे दरबारी झूमर नृत्य, बंगाल के घुमंतू बाउल संगीतकारों के संगीत का आनंद उठाते हुए लोग मिठाइयाँ खाकर एवं एक दूसरे को गुलाल लगाकर होली का आनंद उठाते हैं. यहाँ पर यह वसंत उत्सव कुछ 3 दिनों तक मनाया जाता है.

मायापुर की होली : पश्चिम बंगाल के 20 पवित्र विशेष स्थानों में से मायापुर इस्कॉन मंदिर एक है. जिस तरह पश्चिम बंगाल के विभिन्न स्थानों पर होली कार्यक्रम देखने के लिए विदेशियों की भारी भीड़ उमड़ती है, उसी प्रकार मायापुर में भी पर्यटकों का एक जमघट इकट्ठा होता है. इस्कॉन के मुख्यालय मायापुर में होली उत्सव के दिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौर पूर्णिमा मनायी जाती है, जिसमें देश - विदेश से लाखों लोगों की भीड़ जुटती है. यहाँ होली उत्सव का आयोजन किया जाता है. इस उत्सव में विभिन्न सामाजिक गतिविधियां और कई कार्यक्रम जैसे वैष्णव सम्मेलन, श्रावण उत्सव, कीर्तन मेला, गंगा पूजा, नवदीप धाम परिक्रमा, नाव उत्सव, रथ यात्रा आदि शामिल होते हैं. इस दिन सुबह में मंगल आरती एवं पूजा होती है और सारा दिन भजन - कीर्तन चलता रहता है. इसके साथ ही श्रीकृष्ण की मूर्ति को पालकी में बिठाकर सभी श्रद्धालुओं द्वारा 'हरे रामा! हरे कृष्णा!' का उच्चारण करते हुए मंदिर परिसर में घुमाया जाता है. चूंकि फाल्गुन पूर्णिमा को नवदीप में जिसे अभी मायापुर कहा जाता है, वहीं चैतन्य महाप्रभु का जन्म हुआ था. इसी परिप्रेक्ष्य में संध्या बेला में चंद्रोदय मुहूर्त में अभिषेक किया जाता है और जितने भी कार्यक्रम किए जाते हैं, उनमें श्री चैतन्य महाप्रभु के जीवन और शिक्षा का प्रदर्शन किया जाता है. वहीं दूसरी तरफ लोग अबीर और गुलाल से रंग खेलते हैं और 'हरे रामा, हरे कृष्णा' जो यहाँ का स्लोगन है, का उच्चारण करते रहते हैं.

पश्चिम बंगाल की होली भारत के अन्य राज्यों में मनाई जाने वाली होली से कुछ कम नहीं हैं. ऐसे कई प्रसिद्ध स्थान हैं, जहां लोग दूर-दूर से सिर्फ 'दोल' का आनंद लेने आते हैं. सिर्फ भारत के अन्य राज्यों से ही नहीं बल्कि दक्षिण अमेरिका, रूस, लंदन जैसे कई देशों से यहाँ दर्शनार्थी आते हैं. कुछ लोग तो ऐसे हैं जो हर साल केवल यहाँ दोल उत्सव देखने आते हैं.

प्रीति साव
क्षे. का., हावड़ा

रंग कुदरत के...

कुदरत यानि प्रकृति अनगिनत रंगों से भरी हुई है, पानी, हवा, भूमि, पेड़, जंगल, पहाड़, नदी, सूरज, चंद्रमा, आकाश, समुद्र, जीव-जन्तु, मानव, पशु-पक्षी अर्थात हमारे आस-पास के अनेकानेक सजीव और निर्जीव कुदरत के ही रूप हैं, जो कि परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप से हमें प्रतिदिन प्रभावित करते हैं. इनके रंग हमारे जीवन का अविभाज्य अंग हैं. ये रंग हमारे जीवन को आकर्षक, सुखद तथा सुंदर बनाते हैं. रंगों से जीवन में मधुर रस घुलता है, जीवन के हर पहलू में आनंद भरता है और हमारा जीवन सरस बनता है. प्रकृति के हर रूप का, हर रंग का इसकी सुंदरता का हम पर गहरा प्रभाव पड़ता है. जब हम अपने चारो ओर नजरें दौड़ाते हैं, तो अलग-अलग रंग कुदरत हमें दिखाती है.

कुदरत के ये रंग स्थिर नहीं हैं, ये बदलते भी रहते हैं. आकाश एक ही दिन में कई बार रंग बदलता है, सूर्योदय के समय यह पीला गुलाबी रहता है, जो हमारे अंदर नयी ऊर्जा का संचार करता है, दिन के समय यह अपनी पूरी क्षमता के साथ आँखों को चौंधियाने वाले नीले रंग का होता है, तब हम इससे नजरें मिलाने में भी कतराते हैं, सूर्यास्त के समय यह चमकदार नारंगी रंग का होता है जिसकी आभा अत्यंत मनोरम प्रतीत होती है, और रात्रि काल में यह बैंगनी रंग में ढल जाता है जो हमारे नैनों को सुकून देता है. इसका हर रंग इसकी अलग-अलग मन:स्थिति को दर्शाता है, सुबह यह हमें उत्साह और वर्चस्व से ओत-प्रोत नजर आता है, यह सुबह एक नयी शुरुआत के साथ एक नए लक्ष्य को प्राप्त करने की लालसा में अग्रसर होता है, जैसे जैसे दिन चढ़ता है ये अपने कार्य में और भी अधिक विलीन हो जाता है जिससे यह और भी अधिक चमकदार नजर आने लगता है और सूर्यास्त के समय से इसका रंग ढलना आरंभ हो जाता है, रात्रि काल में यह पूर्णतया निस्तेज हो विश्राम मुद्रा में आ जाता है और एक नयी सुबह के लिए स्वयं को तैयार करने में जुट जाता है. इसी प्रकार अपनी दिनचर्या को बनाने की प्रेरणा हमें आकाश से मिलती है, किस तरह हमें स्वयं के दैनिक आचरण को निर्मित करना चाहिए.

कुदरत हमें सदा ही विभिन्न माध्यम से शिक्षा देती है, दिन और रात का होना हमें जीवन के अँधियारों और उजालों की सीख देती है. जैसे हर रात के बाद सवेरा है, वैसे ही हर दुख के बाद सुख है. कुदरत हमें सीख देती है, हर परिस्थिति में मजबूत बने रहने की. समय कैसा भी हो टल जाता है, अगर हम उसमें स्वयं का संधारण कर सकें. हमें प्रत्येक परिस्थिति में संयमित रहना चाहिए, चाहे वह सुख अर्थात उजाला हो या फिर दुख अर्थात अंधेरा. सुख का गुमान न करें, और दुख का विलाप न करें. बस ये समझें जो भी समय है वह एक दिन बीत ही जाएगा. तभी हम अपने जीवन का हर परिस्थिति में पूर्ण आनंद ले सकते हैं और एक सुखद जीवन व्यतीत कर सकते हैं.

संसार में कुछ भी स्थायी नहीं है, सब कुछ परिवर्तनीय है. जैसे कुदरत अपनी ऋतुएँ बदलती रहती हैं और हर ऋतु में उसका अपना एक नया रंग एक नया स्वरूप छुपा होता है. उसी प्रकार जीवन में भी सब कुछ बदलता है. पतझड़ के मौसम में जो धरा बेरंग हो जाती है, वह जाड़े और बरसात के मौसम में फिर चहुंओर हरी भरी नजर आती है. उसी प्रकार हमारे भी जीवन में उतार चढ़ाव आते रहते हैं, कभी हम समस्याओं से घिर जाते हैं कभी हर तरफ से खुशियाँ उमड़ आती हैं, पर इनमें से कुछ भी स्थायी नहीं है, जो आज श्रेष्ठ है वह कल निम्न होगा. यही परिवर्तन संसार में एकमात्र स्थायी नियम है.

प्रकृति ने अपने रचित हर जीव में भी अलग-अलग रंग दिये हैं, कुछ जीव काले हैं, तो कुछ सफ़ेद, तो कुछ ढेर सारे रंगों को अपने में समाहित किए हुए मनमोहक प्रतीत होते हैं. उदाहरणार्थ हम मोर को देखें तो वह स्वयं में अनेक रंग समाहित किए हुए है, इसके पंख हरे और नीले रंग के मेल से सुंदर बने होते हैं, इसकी आँखें नीले सुनहरे और लाल रंगों को पिरोई हुई हैं. कुदरत ने अपने रंगों का सबसे खूबसूरत मेल इस पक्षी को सौंपा है, जिसे देख मन में अत्यंत मनोरम भाव उत्पन्न होते हैं. जब यह पंख फैलाकर बारिश के बाद नृत्य करता है तब इसके आस पास की रौनक अतुलनीय प्रतीत होती है.

कुदरत की एक और संरचना जिसमें रंगों को खूबसूरती से पिरोया गया है, वह है इंद्रधनुष! बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा, पीला नारंगी और लाल, सात रंगों से मिलकर बना यह इंद्रधनुष जब बरसात के बाद बादलों से भरे आकाश में अपने रंग उकेरता है, तो प्रकृति का हर कण उसकी आभा से और भी अधिक चमक उठता है. इसके हर रंग की अपनी अलग चमक है, ये रंग साथ रहकर भी एक दूसरे को ढकते नहीं, सबका अपना नियत स्थान और बैंडविड्थ है, जिसमें ये स्थापित रहते हैं. सबके साथ मिलकर चलने से कैसे हमारा व्यक्तित्व और भी अधिक निखर सकता है! नयनों को सुकून देने वाली प्रकृति की यह रंगों भरी रचना धरती से आकाश तलक जब फैलती है तो अपने आप में अलौकिक तथा तेजस्वी दिखाई देती है.

इसी प्रकार कुदरत के अन्य तत्वों को देखा जाए तो भी हर एक तत्व में रंग छुपा है अग्नि का रंग लाल और नारंगी होता है, जल

नीले तथा विभिन्न पीले या हल्के रंगों के होते हैं, हवा सफ़ेद, भूरे रंग की नजर आती है, धरा कहीं पीली, कहीं भूरी, तो कहीं धूसर होती है, धातुएँ सफ़ेद, चाँदी के रंग की, धूसर और सुनहरी होती हैं, प्रकाश का रंग सफ़ेद, पीला, सुनहरा, गुलाबी इत्यादि होता है, धुंध कहीं धूसर तो कहीं काली होती है. धरा की सबसे मनमोहक प्रजाति हरियाली है, स्वयं में प्रकृति के हर एक रंग को समाहित किए हुए है, शायद ही भूमंडल पर कोई ऐसा रंग है, जो इसमें शामिल न हो. फूल, फल, पत्तियाँ, जड़, तने सबके भिन्न-भिन्न रंग रूप और आकार हैं, जिनकी सुंदरता नयनसुख देने में अतुलनीय तथा अद्भुत होती है.

कुदरत के यह मनमोहक रंग हमें सुकून देने के साथ-साथ अनेक शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों के उपचार में भी सहायक है. शोध द्वारा प्रमाणित है कि वनों में हरियाली के बीच समय बिताने पर अवसाद तथा व्यग्रता की रोकथाम की जा सकती है, साथ ही यह उच्च रक्त चाप तथा कैंसर जैसी बीमारियों को भी नियंत्रित करने में सहायक है. हमारे नयनों के साथ-साथ ये हमारे हृदय को भी आनंद का अनुभव देते हैं, जिससे हमारे शारीरिक और मानसिक विकार दूर होते हैं. एक अन्य शोध बतलाता है, कि झरने को शांत मन से निहारने पर मन की व्याधियाँ जैसे स्वार्थ, नकारात्मकता इत्यादि दूर होती हैं, साथ ही साथ व्यक्ति और अधिक मददगार एवं उदार बनता है. इन रंगों के करीब जाने पर हम वास्तव में स्वयं के ही करीब आते हैं, अपने अंदर झाँकने से स्वयं को महसूस करने का मौका हमें मिलता है. अत: हम सभी को तनावमुक्त, स्वच्छंद, निर्मल, खुशनुमा एवं निरोगी जीवन जीने के लिए कुदरत के रंगों से निकटता बनाए रखनी चाहिये.

चहुंओर बिखरे हुए ये रंग कुदरत के,
निखारते जीवन का स्वरूप हैं अनुपम.
आओ, चलें हम संग कुदरत के,
बनाए अपना जीवन स्वस्थ्य और सुगम..

नीरजा अशोक कोष्टी
क्षे. का., जबलपुर

कुदरत ! यह एक शब्द मात्र नहीं है, ये तो एक भावना है बल्कि कहें तो पूरी दुनिया है और कुदरत की सबसे नायाब चीज है, उसके रंग. कोई भी व्यक्ति इससे अछूता नहीं है कोई चाहकर भी इससे दूर नहीं जा सकता है. हर किसी ने कुदरत के विविध रंग देखे हैं,

'छांव हो या धूप में पसंद है तू हर रूप में'

हमें भी एक पूरे साल में कुदरत के तरह-तरह के रंग देखने का सुनहरा अवसर मिलता है जैसे कि पतझड़ के मौसम में पेड़ों के पत्तों की चादर ओढ़े रास्ते, तो वहीं दूसरी तरफ सावन में चारो तरफ हरियाली, गर्मी में सूनसान सड़कें तो सर्दी में बर्फ की चादर ओढ़े पूरा का पूरा शहर.

आजकल तो हर रंग के नोट भी आ गए हैं. लोगों ने भी नोटों के अनुरूप अपना रंग भी बदला है, नेतागण भी चुनाव के वक़्त अलग और चुनाव के बाद अलग ही रंग में नज़र आते हैं.

कुछ लोगों ने गिरगिट की तरह रंग बदलना सीख लिया है, इसलिए वो अब होली का इंतज़ार नहीं करते पर रंगों की असली झलक तो होली पर ही दिखाई देती है, जहां हर कोई अपने ही रंग में नज़र आता है.

भाई-बहन, दोस्त, माता-पिता सभी मिलकर एक दूसरे को रंग लगाते हैं, पति भी अपनी पत्नी के गुलाबी चेहरे पर अपना ही रंग बिखेर देना चाहता है 'रंग और पानी के इश्क़ को ही लोग होली कहा करते हैं'.

ये कुदरत का अनूठा रंग ही है, इसके बिना तो दुनिया बिलकुल बेरंग नज़र आती है, होली का त्योहार हर किसी की जिंदगी मे रंग लाने का काम करता है. हर कोई उस दिन तो कुदरत के रंग में रंगा हुआ नज़र आता है, किसी ने सही कहा है, 'किसी की जिंदगी में रंग भरना भी होली से कम नहीं होता'

ईश्वर से प्रार्थना है कि हर व्यक्ति की जिंदगी सिर्फ होली के दिन ही नहीं बल्कि हर दिन रंगीन हो और रंगों से परिपूर्ण हो. कुदरत के रंग, होली के रंग से अलग नहीं है जैसे होली में लाल रंग तो कुदरत के सूर्योदय से पहले आसमान की लालिमा, पीला गुलाल तो कुदरत का सूर्यास्त के बाद आसमान को पीले रंग से ढक लेना, कुदरत का हरा रंग तो बारिश के बाद चारो तरफ पेड़ों-पत्तों की हरियाली भी मन को हर लेने वाली होती है.

अभी कुदरत ने अपना काला रंग भी दिखाया हुआ है, कोरोना के रूप में यह भी मनुष्य की बड़ी भूल का नतीजा है. यह कुछ नहीं, बस प्रकृति का प्रतिशोध है, यदि हम कुदरत की इसी तरह अवहेलना करते रहे तो यह और भी विकराल रूप ले लेगा, अब हमें कुदरत के इस घातक प्रहार को भी सहना होगा और इसे जल्दी से जल्दी दुरुस्त भी करना होगा

हम चाहेंगे कि हर किसी की जिंदगी भी कुदरत की भांति रंगीन हो और ये सब कुदरत के रंग आपकी जिंदगी और फिजा को यूं ही रंगीन बनाते रहें.

इंसान ने कुदरत को इतना सताया है
उसे भी किसी ने मास्क पहनना बताया है

बालकृष्ण गोयल
केएसकेवी भुज शाखा; राजकोट

हिंदी सिनेमा में रंग और होली

होली कब है, कब है होली? कब? शोले फ़िल्म का ये मशहूर डायलॉग अक्सर होली के करीब आते ही लोगों को गब्बर की आवाज़ की नकल में बोलते हुऐ सुना जा सकता है. होली और सिनेमा ये दो शब्द अगर एक ही वाक्य में उपयोग किये जाए तो ऐसे ही मशहूर डायलॉग्स या गाने आपके मन में सबसे पहले आते हैं. अगर किसी त्योहार को हिन्दी सिनेमा का पसंदीदा त्योहार कहा जाये तो वह निश्चित ही होली होगी. कई दशकों से हिन्दी सिनेमा ने बड़े पर्दे पर होली के रंग बिखेरे हैं. गानों में होली के रंगों का भरपूर इस्तेमाल हुआ है, कई मुख्य कलाकार नाचते, गाते, भांग पीते नज़र आते हैं. कुछ फिल्मों ने तो होली के इर्द-गिर्द पूरी कहानी गढ़ दी, तो कुछ ने अपनी फिल्मों का बहुत महत्वपूर्ण सीन होली को ध्यान में रखते हुये बनाया. हिन्दी सिनेमा ने होली का उपयोग कई किरदारों के चित्रण के लिए अक्सर जरूरी समझा, जैसे कुछ फिल्मों में जो नकारात्मक किरदार होते हैं उनकी आँखों में बदमाशी दिखाई, तो कहीं नायिका के किरदार के अल्हड़पन को दर्शाया है. आप होली के बिना कुछ फिल्मों की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं, ऐसी ही कुछ फिल्मों के उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत हैं:

- 'औरत', 1940 में जब ब्लैक एंड व्हाइट सिनेमा का दौर था, उस वक़्त की इस फिल्म में 'जमुना तट होली खेलें श्याम' एक गाना है. इसमें होली के सारे रंग, गुलाल, रंग-बिरंगे कपड़े सब केवल दो रंग में ही नजर आए, काला और सफ़ेद. समाज को आईना दिखाने वाली इस फिल्म की नायिका राधा को कई चुनौतियों से होकर गुजरना पड़ता है. इस फिल्म की रिमेक बनाई गयी रंग में और वो फिल्म थी 'मदर इंडिया'. अकादमी पुरस्कार के लिए नामित इस फिल्म ने औरत के जीवन में आने वाले संघर्षों के साथ होली के भी कुछ रंग 'होली आई रे कन्हाई' गीत से पूरी दुनिया में पहुंचा दिये.
- साठ के दशक में एक फिल्म आई कोहिनूर, दिलीप कुमार और मीना कुमारी के इस फिल्म में एक गीत है 'तन रंग लो जी आज मन रंग लो', फिल्म में नायक नायिका ने राजा-रानी के किरदारों को निभाया गया है, जो राजघराने की शाही होली का चित्रण करती है.
- 1970 में आई फिल्म कटी पतंग, विधवा आशा पारेख और राजेश खन्ना के प्रेम की अभिव्यक्ति को 'आज न छोड़ेंगे बस हमजोली, खेलेंगे हम होली' गाने में दिखाया है.
- 'शोले' फिल्म में जब रामगढ़ गाँव के लोग होली के रंगों से सराबोर, हर डर से बेफ़िकर 'होली के दिन दिल खिल जाते हैं, रंगों में रंग मिल जाते हैं' गाने में नाच रहे होते हैं तब गब्बर का हमला होता है. जय और वीरू उन डाकुओं से पहली बार लड़ते हैं, उन्हें खदेड़ने के बाद ठाकुर बलदेव सिंह से सामना होता है और फिर बलदेव सिंह क्यों बदला लेना चाहता है गब्बर से, इस बात को जय और वीरू समझते हैं. गाने के बीच जय और विधवा राधा बनी, जया के आंखों में एक दूसरे के लिए जन्मे प्रेम को भी दिखाया गया है. बिना होली के, सदी की ये सबसे बड़ी फिल्म अधूरी रह जाती.
- 'सिलसिला' फिल्म की कहानी, 'रंग बरसे' गाने में अमिताभ व रेखा के गीत और नृत्य से एवं संजीव कुमार व जया भादुड़ी के आँखों में उमड़ी भावनाओं के बिना समझा पाना मुश्किल हो जाता. इस गाने से फिल्म की पूरी दशा समझ आ जाती है. गाने के शुरू होने के पहले रेखा का किरदार यही सोचता रहता है कि 'होली का रंग देखकर पहला प्यार क्यों याद आ जाता है?' और जया कहती हैं 'इस देश में पति प्रेमी नहीं होते' और गाने के बाद संजीव कुमार, जो हर बात से बेखबर होते हैं, कहते हैं कई रंग पक्के होते हैं, जिसका मतलब है कि वो अब सब जान गए हैं. 'रंग बरसे' गीत के बिना देश में होली का कोई उत्सव पूर्ण नहीं कहलाता है.

- 'डर' फिल्म में किरन (जूही) के एकतरफा प्यार में पागल राहुल (शाहरुख़) जब उससे पहली बार मिलने जाता है तब होली के रंगों को अपने चेहरे पे लगा लेता है. जब किरन अपने मंगेतर सुनील (सन्नी) के साथ 'अंग से अंग लगाना, सजन हमें ऐसे रंग लगाना' गाते हुये नाचते रहते हैं तो राहुल का गुस्सा उसके ढ़ोल बजाने के अंदाज़ और चेहरे के भाव से साफ झलकता है और जब वो किरन के गाल पे रंग लगाते हुये क...क...क...किरन कहता है तब किरन समझ जाती है कि यही लड़का उसे इतने दिन से परेशान कर रहा होता है और ज़ोर से चीखती है जिसे सुनकर सुनील राहुल को पकड़ने के लिए दौड़ता है. बिना इस सीन के ये फिल्म शायद इतनी मशहूर कभी नहीं होती.
- 'दामिनी' फिल्म सबको अदालत में सन्नी देओल के डायलॉग्स के लिए याद होगा लेकिन फिल्म अदालत में पहुँचते ही होली में हुये एक शर्मनाक वाकये के कारण है, जब दामिनी और शेखर अपने भाइयों के किए दुष्कर्म को देखते हैं. यहाँ होली का इस्तेमाल उन भाइयों के नकारात्मक चरित्र को दर्शाने के लिए किया गया है, जो उनकी आँखों में और बाद में उनके कर्म से जाहिर होता है.
- 'बागबान' में अमिताभ और हेमा के बीच अधेड़ उम्र के प्रेम को होली के गाने 'होली खेले रघुबीरा' में बखूबी प्रदर्शित किया गया है. साथ में परिवार के सदस्य जो अलग शहरों में रहते हैं होली में माता-पिता के पास आते हैं, ये दर्शाता है कि कैसे त्योहार परिवारों को भी जोड़ता है.
- 'ये जवानी है दिवानी' फिल्म में नैना (दीपिका) के पढ़ाकू चरित्र का दूसरा रूप लोगों के सामने प्रस्तुत किया गया है, जो नाचती हैं, होली की मस्ती में अपने दोस्तों के साथ 'बलम पिचकारी' गाते हुये झूम रही हैं और गाने के बाद उसे कबीर (रणबीर) को ये जानते हुए कि अब वो कबीर को चाहती हैं, जाने देना पड़ता है और यहाँ उसे समझ में आता है कि उन दोनों की दुनिया एक दूसरे से कितनी अलग है जो खुद में थोड़े से बदलाव लाने से नहीं बदलने वाली

अपने दौर के सभी सितारे जैसे दिलीप कुमार, राजेश खन्ना, अमिताभ, शाहरुख़, रणबीर, सभी की किसी न किसी फिल्म में होली और रंग से जुड़ा एक गीत जरूर है. फिल्मी सितारे न सिर्फ फिल्मों में बल्कि अपने सामान्य जीवन में भी होली का आनंद उसी तरह लेते हैं, बाकायदा बड़ी-बड़ी पार्टियों का आयोजन होता है जिसमें अन्य सितारे भी उपस्थित होते हैं.

वास्तविकता से अलग है हिन्दी सिनेमा की होली?

आज हिन्दी सिनेमा की वजह से ही कुछ लोग सफ़ेद कपड़ों में रंग खेलते नज़र आते हैं, हालांकि ये समाज में हर जगह नहीं देखा जाता जैसे फिल्मों में प्रदर्शित है. कोई भी फिल्मों की तरह होली में अचानक से उस तरह नाचते और गाते नज़र नहीं आते जिसमें डांस के स्टेप्स सबके एक जैसे हों और सबसे बड़ी बात कोई भी रंगों के इस त्योहार में फिल्म के नायक और नायिकाओं की भांति इतने सुंदर भी नहीं नज़र आते बल्कि रंगों से पूते भूतों के जैसे ज़्यादा नज़र आते हैं. फिल्मों में इनकी पिचकारियों के रंग कभी खत्म ही नहीं होते जबकि हम होली में पूरा समय पिचकारियों को भरने में निकाल देते हैं न तो वो गुलाल का गुबार और न ही कोई स्लो-मोशन, पर हाँ होली बहुत मज़ेदार त्योहार है और हिन्दी सिनेमा के गीतों के बिना अधूरा है.

नितेश पाठक
सुकुलदेहान शाखा, रायपुर

गुणकारी हींग

हमारे रसोई घर में रोजाना इस्तेमाल होने वाली खुशबूदार हींग को कौन नहीं जानता? हींग सिर्फ हमारे भोजन में स्वाद और सुगंध ही नहीं बढ़ाती बल्कि एक बेहतरीन औषधि की तरह भी काम करती है. हींग पर्वतीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले 6-8 फुट के 'फेरूल फोइटिडा' नामक पौधे की जड़ से प्राप्त होता है. जड़ पर चीरा लगाने से रस निकलता जो सूख कर गोंद जैसा हो जाता है. इससे स्वादिष्ट सुगंधित हींग प्राप्त होता है. आयुर्वेद के अनुसार हींग पित्त प्रधान और गर्म तासीर वाली होती है. इसके औषधीय गुण कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं से हमारे शरीर की रक्षा करते हैं. हींग का प्रयोग कई दवाओं में भी किया जाता है. तो आइए, जानते हैं हींग के गुणकारी उपायों के बारे में -

- हींग, शहद और अदरक के रस को एक साथ मिलाकर चाटने से निश्चित रूप से खांसी और कफ वाली समस्या जल्द दूर हो जाती है. हींग को जल में पीसकर गुनगुना कर छाती पर लगाने से दमा, कुक्कुरखांसी, फेफड़े की सूजन में लाभ होता है.
- हींग में पाएं जाने वाले एंटी-ऑक्सीडेंट घटक के कारण पाचन तंत्र सुचारू रूप से संचालित होता है, एसिडिटी अपच के दर्द को कम करता है. हींग को पानी में घोलकर नाभि के आसपास लगाने से या घी में भुनी हींग शहद में मिलाकर खाने से पेट दर्द में लाभ होता है.
- बराबर मात्रा में काला नमक, हींग तथा सोंठ चूर्ण को (3-5 ग्राम) गुनगुने जल के साथ सेवन करने से कमर, पीठ तथा हृदय में होने वाले दर्द में लाभ होता है.
- हींग में एंटी इंफ्लेमेटरी और एंटी बैक्टीरियल गुण होते हैं. अगर कोई जख्म हो गया है और संक्रमण का खतरा है या फिर सूजन पिचक नहीं रही है, तो रूई के टुकड़े या फिर किसी कपड़े में हींग का घोल लगाकर प्रभावित स्थान पर लगाने से तुरंत आराम मिलता है.
- अजवायन, हरड़, हींग, चित्रक, सोंठ, यवक्षार, सज्जी क्षार, सफेद जीरा, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आँवला, सौवर्चल तथा सेंधा नमक को बराबर मात्रा में पीस लें. इसे 1-2 ग्राम मात्रा में सेवन करने से बुखार ठीक होता है. पुराने घी में हींग मिलाकर नस्य (नाक में डालने) करने से टॉयफॉयड में लाभ होता है.
- हींग को पानी में घोलकर जले हुए स्थान पर लगाने से जलन में आराम मिलता है और फफोला नहीं पड़ता.
- मधुमक्खी डंक मार दे तो हींग को पानी में घिस कर गाढ़ा पेस्ट बनाकर प्रभावित जगह पर लगाने से आराम मिलता है.
- नीम की पत्ती और हींग को साथ में पीस कर लगाने से फोड़े, फुंसी और मुंहासे, आदि ठीक हो जाते हैं. इससे दाग भी नहीं पड़ते हैं. हींग को पीसकर दाद पर लगाने से दाद ठीक होता है.
- अगर शरीर के किसी हिस्से में कांटा चुभ गया है और निकल नहीं रहा, तो उस स्थान पर हींग और पानी का घोल भर दें. कुछ समय बाद अपने आप ही कांटा बाहर निकल आयेगा.
- दांतों में कीड़ा लग जाने पर रात के समय दांत में हींग के घोल में डुबी हुई रूई का टुकड़ा दबाकर सोएं. कीड़े खुद-ब-खुद निकल जाएंगे.हींग को पानी में उबालकर कुल्ला करने से भी दांतों के दर्द से राहत मिलती है.
- गला बैठ गया हो तो हींग को उबले हुए पानी में घोल लें और इस पानी से गरारे करें. ऐसा दिन में 2-3 बार करें, आपका गला ठीक हो जाएगा.
- हींग को पानी में घिसकर गुनगुना करके 1-2 बूंद कान में डालने से कान के रोग ठीक होते हैं.

हींग से नुकसान : इसका अत्यधिक सेवन करने से यह नुकसान भी पहुंचा सकता है - हींग का अत्यधिक सेवन करने से बदहजमी और गैस बनने जैसी शिकायत हो सकती है. इसीलिए खाली पेट कभी भी हींग का सेवन न करें. ज्यादा मात्रा में हींग का सेवन करने से चक्कर आना, जी मिचलाना जैसी भी समस्या हो सकती है. बिना किसी खाद्य पदार्थ में डाले हींग को सीधा खाना या चखना होंठों में सूजन, होंठों का फूलना और झनझनाहट का कारण भी बन सकता है.अगर कोई महिला गर्भवती है या फिर नवजात शिशु को दूध पिलाती हैं तो उसके लिए भी हींग का सेवन अच्छा नहीं है. जिन लोगों को स्किन प्रॉब्लम या एलर्जी अकसर हो जाती है, उन्हें हींग का सेवन नहीं करना चाहिए. कुछ लोगों को हींग के सेवन से शरीर में चकत्ते पड़ने लगते हैं, ऐसे मामलों में तुरंत डॉक्टर से परामर्श लेना चाहिए.

सुप्रिया नाडकर्णी
यूनियन धारा, कें.का.

आपके केन्द्रीय कार्यालय की गृह पत्रिका के मार्च 2020 की ई प्रति हमें प्राप्त हुई. इस अवसर पर आपके राजभाषा परिवार एवं इस पत्रिका से जुडे हरेक व्यक्ति को बधाई देते हैं. पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पाठ्य सृजन बहुत ही सुन्दर है. इन विपरीत परिस्थितियों में भी आपके कार्यालय का यह प्रयास हिन्दी साहित्य प्रेमियों के लिए ही नहीं बल्कि सभी पाठकों के लिए भी प्रोत्साहन और नवोन्मेष प्रदान करता है. पत्रिका में समसामयिक लेखों के साथ तकनीकी कार्यों का भी परिचय दिया जाना अपने आप में इस पत्रिका को अलग दर्शाता है.

- मुरारी प्रसाद
उप महाप्रबंधक, केनरा बैंक, क्षे. का., रायपुर

'यूनियन सृजन' का अद्यतन अंक (जनवरी-मार्च 2020) प्राप्त हुआ. हमेशा से ही प्रामाणिकता, मौलिकता और भाषा की सहजता 'यूनियन सृजन' की विशेषता रही है और इन्हीं विशेषताओं के कारण बैंकिंग के साथ-साथ अन्य सामाजिक-आर्थिक मुद्दों को बहुत ही सरस और सहज रूप में प्रस्तुत करने में यह पत्रिका हमेशा सफल रहती है. पत्रिका का विषय वैविध्य विशेष रूप से सराहनीय है. इस अंक में जीवन के बहुविध रंगों को प्रतिबिंबित करती कविताओं की हृदयस्पर्शी अभिव्यक्तियां भी हैं जो इसे आकर्षक बनाती है.

'दुविधा मुक्ति' कहानी में वर्तमान समय में लोगों के अतिव्यस्त जीवन में रिश्तों की संवेदनशीलता और भावनाओं को बखूबी रेखांकित किया गया है. युग प्रवर्तक कबीर दास जी की निर्वाण स्थली 'मगहर' की जानकारी बहुत ही रोचक और ज्ञानप्रद है. संस्मरण 'हम गांव से निकले बच्चे' हमें अपने बचपन के दिनों की सैर कराता है. इस अंक में मेहसाणा का रोचक यात्रा वृतांत भी बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया गया है. डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा जी का साक्षात्कार बहुत ही प्रेरणादायी है और डिजिटल क्रांति के इस दौर में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए राजभाषा परिवार के सदस्यों को एक नई दिशा दिखाता है. इस अंक में व्यंग्य रचना का समावेश इसे खास बनाता है क्योंकि आजकल पत्रिकाओं में इस विधा की रचनाएं बहुत कम दिखती हैं. पत्रिका में प्रकाशित अन्य सभी रचनाएं स्तरीय और पठनीय हैं. इस अंक के संपादन में आपका संपादन कौशल प्रशंसनीय और अनुकरणीय है. इतनी सारगर्भी पत्रिका प्रकाशित करने के लिए मैं इसके संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका यूँ ही सफलता के सोपानों को पार करते हुए लोकप्रियता के शिखर पर आसीन हो.

- राधेश्याम मिश्रा
सदस्य सचिव, नराकास (बैंक),
भारतीय रिजर्व बैंक, पटना

'यूनियन सृजन' का जनवरी-मार्च 2020 तिमाही के लिए प्रकाशित अंक देखने का अवसर मिला. इंदौर स्थित बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का सदस्य सचिव होने के नाते प्रति माह विभिन्न संस्थानों की पत्रिकाएँ देखने का अवसर प्राप्त होता है. 'यूनियन सृजन' का अपना एक विशिष्ट कलेवर है, जो इसे अन्य पत्रिकाओं से बेहतर बनाता है. बैंकिंग के साथ ही राजभाषा सामग्री और साहित्य के साथ ही आयोजनों का अद्भुत संगम पत्रिका को पूरा पढ़ने हेतु विवश करता है. इसकी आकर्षक साज-सज्जा भी एक नयापन लिए हुए है. इस पत्रिका के द्वारा आपके संस्थान में अखिल भारतीय स्तर पर राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी भी मिलती है, जो दूसरे संस्थानों के लिए प्रेरक है. इस पत्रिका से आपके संस्थान की राजभाषा हिन्दी के प्रति समर्पण की झलक भी दिखाई देती है. मैं 'यूनियन सृजन' के संपादन से जुड़े सभी स्टाफ सदस्यों को शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ.

- आशीष भवनानी
सदस्य सचिव, नराकास (बैंक), स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, इंदौर

आपकी तिमाही पत्रिका यूनियन सृजन का जनवरी-मार्च 2020 का अंक प्राप्त हुआ. तदर्थ धन्यवाद! आपकी यह पत्रिका सदैव ही रोचक लेखों, कविताओं एवं साहित्य की अन्य विधाओं से परिपूर्ण होती है. आपका यह अंक भी अपेक्षाओं के न केवल अनुरूप अपितु अपेक्षाओं से भी बढकर है.

विविधता से परिपूर्ण इस अंक में विशेषकर 'जलेबी का महत्व' बहुत ही रोचक एवं जानकारी से ओतप्रोत है. इसके अतिरिक्त 'मुश्किले झेलें, दुनिया जीतें' लेख बहुत ही प्रेरणाप्रद एवं प्रोत्साहित करने वाला है, जो असफलताओं में छिपी सफलताओं को बया करता है. सतर्कता जागरूकता विशेष पर 'ईमानदारी एक जीवन शैली' भी एक सुंदर रचना है. पर्यावरण संरक्षण पर आधारित 'प्लास्टिक प्रदूषण: खतरे की घंटी', प्लास्टिक से होने वाली हानियों को बताती है जो कि हमारे लिए एक चेतावनी है. रोमांच से भरपूर लेह-लद्दाख यात्रा के बारे में पढकर ऐसा लगता है कि अभी बाइक लें और इस अनोखी यात्रा पर निकल पडें. महिला दिवस एवं विश्व हिन्दी दिवस के छायाचित्रों एवं सामग्री ने इस अंक में चार चांद लगा दिए है. यह विश्वास है कि आपके आगामी अंक भी इसी प्रकार विविधतापूर्ण होंगे. मैं इस पत्रिका के संपादक मंडल को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं.

- हितेश एम. रावल
सहायक महाप्रबंधक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद

बहुत सुंदर कलेवर और साज-सज्जा के साथ-साथ उत्कृष्ट सामग्री का चयन...47 वर्ष के बाद अर्थात् लगभग आधी सदी के बाद 'यूनियन सृजन' में अपना नाम देखकर अच्छा लगा. नई पीढ़ी के साथ संवाद करके लगा कि यह पीढ़ी समय बोध को पहचानती है. सुलभा कोरे जी और उनकी टीम के प्रति आभार !!!

डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा
पूर्व निदेशक (राजभाषा), रेल मंत्रालय, भारत सरकार

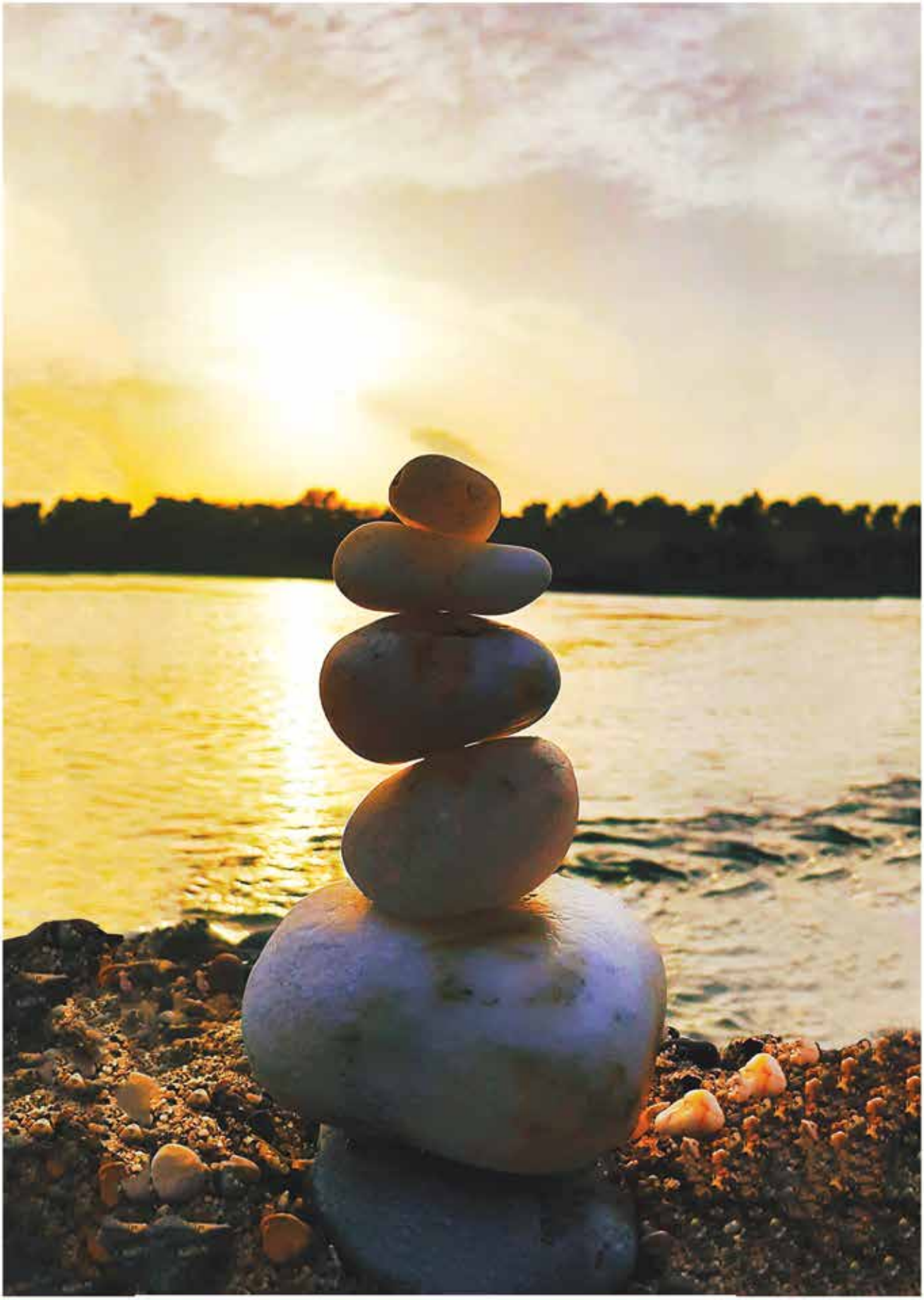

नि:शुल्क वितरण हेतु

RNI No. MAH HIN/2016/68433

मही नदी, बड़ौदा

छायाचित्र : राधा मिश्र, क्षे. का. बड़ौदा